भूखा है बंगाल

'वामिक़' जौनपुरी

पूरब देसमें डुग्गी बाजी फैला दुखका जाल
दुखकी अगिनी कौन बुझाये सूख गये सब ताल
जिन हाथोंने मोती रोले आज वही कंगाल रे साथी
आज वही कंगाल
भूखा है बंगाल रे साथी भूखा है बंगाल

पीठसे अपने पेट लगाये लाखों उलटे खाट
भीख-मँगाईसे थक-थककर उतरे मौतके घाट
जियन मरनके डाँडे मिलाये बैठे हैं चंडाल रे साथी
बैठे हैं चंडाल
भूखा है बंगाल रे साथी भूखा है बंगाल

नद्दी नाला गली डगरपर लाशोंके अंबार
जानकी ऐसी महँगी शय[1] पर उलट गया व्योपार
मुट्ठी भर चावलसे बढ़कर सस्ता है यह माल रे साथी
सस्ता है यह माल
भूखा है बंगाल रे साथी भूखा है बंगाल

---

[1]चीज़, वस्तु

कोठरियोंमें गाँजे बैठे बनिये सारा नाज
सुन्दर नारी भूखकी मारी बेचे घर-घर लाज़
चौपट नगरी कौन सँभाले चार तरफ़ भौंचाल रे साथी
चार तरफ़ भौंचाल
भूखा है बंगाल रे साथी भूखा है बंगाल

पुरखोंने घर बार लुटाया छोड़के सबका साथ
माएँ रोईं बिलख-बिलखकर बच्चे भये अनाथ
सदा सुहागिन विधवा बाजे खोलके सरके बाल, रे साथी
खोलके सरके बाल
भूखा है बंगाल रे साथी भूखा है बंगाल

अत्ती पत्ती चबा-चबाकर जूझ रहा है देस
मौतने कितने घूँघट मारे बदले सौ-सौ भेस
काल बिकट फैलाय रहा है बीमारीका जाल रे साथी
बीमारीका जाल
भूखा है बंगाल रे साथी भूखा है बंगाल

धरती माताके सीनेमें चोट लगी है कारी
माया कालीके फन्देमें वक़्त पड़ा है भारी
अबसे उठ जा नींदके माते देख तो जगका हाल रे साथी
देख तो जगका हाल
भूखा है बंगाल रे साथी भूखा है बंगाल

क़हते-बंगाल

(बंगालका काल)

कमाल अहमद सिद्दीक़ी

हाय दोशीज़ए-बंगालकी[1] यह धज ए दोस्त
जिसकी जुल्फ़ोंके ख़ुनक[2] सायेमें टैगोरके[3] गीत
पैहम[4] अँगड़ाइयाँ लेते थे बहारोंकी तरह
जिसके तरशे हुए होंठोंकी दिलावेज़ीमें[5]
नज़रुलइसलामके[6] नग़मात[7] रचे रहते थे
लाला-ओ-गुलके[8] शफ़क़बार[9] शरारोंकी[10] तरह
हाय दोशीज़ए-बंगालकी यह धज ए दोस्त
आज उसपर किसी बेवाका गुमाँ होता है

भूखने उसके जवाँ जिस्मकी रअनाईको[11]
इतना रौंदा है कि अब भूखकी तस्वीर है वो
जो हसीं जिस्म[12] सितारोंने भी देखा न कभी
आज एहसास[13] नहीं है उसे उरियानीका[14]
सरे-बाज़ार चला आया है बिकनेके लिये

---

[1]बंगालकी कुमारी [2]ठंडे [3]गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर [4]बार-बार [5]मनोहरता [6]बंगालके प्रसिद्ध क्रान्तिकारी कवि [7]गीत [8]लाल रंगके फूलको लालअ् कहते हैं, गुल=फूल [9]लालिमा वरसाती [10]चिनगारियों [11]सुन्दरता [12]सुन्दर शरीर [13]अनुभव [14]नग्नता

और वो आँसू जो गौहरसे[1] भी हैं क़ीमतमें सिवा
आज बेसूद[2] बहा करते हैं चावलके लिये

× × ×

जिन क़वी[3] हाथोंने कल धान किया था पैदा
वही पज़मुर्दा[4] हैं सूखे हुए पौदोंकी तरह

× × ×

खुले बाज़ारमें नायाब[5] है चावल लेकिन
चोर बाज़ारमें व्योपार हुआ करता है
और कलकत्ताके बाज़ारोंमें हर रोज़ ए दोस्त
लाखों फ़ाक़ा-ज़दा[6] इन्सान मरा करते हैं
मैंने देखे हैं सरे-राह[7] हज़ारों लाशें
मर गये सैकड़ों जगदीश[8] हज़ारों टैगोर
सीम और ज़रके[9] खुदावन्दोंका लाया हुआ क़हत[10]
अर्ज़े-बंगालको[11] शम्शान[12] किये देता है
हुस्नकी गोदको वीरान किये देता है
इन ज़र-ओ-सीमके नागोंको कुचलना होगा
वरना ये हमको युँही डस्ते रहेंगे ए दोस्त

---

[1]मोतीसे [2]बेकार, व्यर्थ [3]मज़बूत, बलिष्ठ [4]उदास, मलीन [5]दुर्लभ [6]फ़ाक़ा करनेवाले, उपवास करनेवाले [7]राहमें, [8]प्रसिद्ध बंगाली वैज्ञानिक श्री जगदीश चन्द्र वसु [9]चाँदी और सोनेके [10]काल [11]बंगालकी धरती [12]श्मशान

कलकत्ता

कैफ़ी आज़मी

*"कलकत्ताका जो जिक्र किया तूने हमनशीं[1]
एक तीर मेरे सीने पै मारा कि हाय-हाय"
रस्तों पै रेंगते हुए भूखे हज़ार हैफ़[2]
ग़ुरबतका[3] जाँगुदाज़ नज़ारा[4] कि हाय-हाय
वह ख़ाकपर बिलखते हुए तिफ़्ले-जाँ-ब-लब[5]
वह डूबता हर एक सितारा कि हाय-हाय
बच्चे जवान औरतें बे आस हैं सभी
आराम इस तरहसे सिधारा कि हाय-हाय
सड़कों पै वह पड़ी हुई भूखोंकी मैयतें[6]
लाशोंसे पुर[7] हर एक किनारा कि हाय-हाय
होती हुई तबाह वह गुंजान[8] बस्तियाँ
चढ़ता हुआ वह क़हत[9] का धारा कि हाय-हाय
इन्साँ तरस रहे हैं निवालेके[10] वास्ते
जीनेका यों मिटा है सहारा कि हाय-हाय
जलते हुए वो पेट वो आँखें धँसी हुई
भड़का हुआ क़ज़ाका[11] शरारा[12] कि हाय-हाय

---

*ये पंक्तियाँ महाकवि ग़ालिबकी हैं [1]साथी [2]अफ़सोस [3]ग़रीबी [4]जानको घुला देनेवाला, दर्दनाक [5]बच्चे जिनके होंठोंपर जान हो [6]शव [7]भरा हुआ [8]घनी [9]काल [10]ग्रास, कौर [11]मृत्यु [12]चिनगारी

वह क़हत-ओ-बेकसी वो हुकूमतकी बेहिसी[1]
वो ताजिराने-मस्त-ओ-ख़ुदारा[2] कि हाय-हाय
लटके हुए गुदामोंमें वो क़ुफ़्ले-आहनी[3]
वो नफ़अ़का जलील नजारा कि हाय-हाय
'कैफ़ी' तड़प उठी हैं वतनकी जमाअतें[4]
भूखोंने इस तरहसे पुकारा कि हाय-हाय

[1]बेपरवाही [2]मस्त और घमंडी व्यापारी [3]लोहेके ताले [4]संस्थाएँ

२

झूठी आज़ादी

किसी अत्याचार या अन्यायके बारेमें यह नहीं समझना चाहिये कि उसका एक ही रूप होता है। भारतपर अंग्रेजी राज और हमारी ग़ुलामी, साम्राज्यवादी और पूंजीवादी दूसरे देशों द्वारा हमारी बरबादी और हमारा शोषण ऐसे विषम सत्य हैं जो अनेक भेस बदला करते हैं और जो अनेक तरीक़ोंसे अपने बहुरूप दिखाते हैं। ग़ुलामी या दासता इस नई दुनियामें और इस नये युगमें झूठी आज़ादी या झूठे स्वराजका रूप भी धारण कर लेती है। कभी ग़ुलामी साकार रूपमें रहती है, कभी निराकार रूपमें हमारा खून चूसती है। आज सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता हमारे लिये यह है कि करोड़ों प्राणियोंमें इस बातकी जीती जागती चेतना पैदा हो जाय कि हमारी आज़ादी ग़ुलामीका एक बहुरूप है। अभी हमारा जीवन साम्राज्यवादी देशोंकी पकड़ और जकड़से मुक्त नहीं हुआ है। आर्थिक सहायताके रूपमें, देशकी अनेक योजनाओंमें सलाहकारों और विशेषज्ञोंके रूपमें, हमारी फ़ौजमें फोड़ फांस करनेवालोंके रूपमें, भारतमें दूसरे देशोंके स्वतंत्रता संग्रामको मिटानेके लिये गोरखोंकी भरती करनेकी अनेक आढ़तें स्थापित करनेके रूपमें, हमारे बहुतसे व्यवसायोंको दाब रखने और अपना रखनेके रूपमें विदेशी अब तक हमारे ऊपर छाये हुए हैं और हमारी उन्नतिका गला घोंट रहे हैं इसलिये हमें अपनी झूठी आज़ादी-को सच्ची आज़ादी बनानेके लिये एक दूसरी लड़ाई लड़ना है।

प्रगतिशील साहित्य इस अतिआवश्यक चेतनाको जगानेका एक प्रबल साधन है। साहित्यको अगर ग़लत विचारधाराओंका नशा चढ़

गया तो समाजको जगानेके बदले ऐसा साहित्य समाजको भुलावे दे-देकर सुलाता रहता है। जगानेकी भैरवी बननेके बदले साहित्य सुलानेकी लोरियाँ बन जाता है। झूठी आज़ादीपर ये कविताएं सुलानेकी लोरियाँ नहीं हैं, जगानेकी भैरवी हैं। उर्दू साहित्य इन कविताओंमें इस बातका सबूत दे रहा है कि वह झूठी राष्ट्रीयता, झूठी जातीयता, झूठे देशप्रेम या झूठे क़ौमी घमंडके बदले सच्ची राष्ट्रीयता, सच्ची जातीयता, सच्चे देश-प्रेम और सच्चे क़ौमी घमंडका शंखनाद है। आजका उर्दू साहित्य और देश भरका प्रगतिवादी साहित्य क्रान्तिआत्मक हो चुका है।

ये कविताएं राजनैतिक व्यंग्य, सामाजिक असंतोष, नई राष्ट्रीय चेतना, क्रान्तिआत्मक विचारधाराकी सूचक हैं। यहाँ भी उर्दू कवियोंकी आवाज़ें रंगारंग हैं, कल्पनाएँ विविध प्रकारकी हैं, कलाएँ नई-नई जगमगाहटों और नये-नये चमत्कारोंसे झलक रही हैं। कहीं बँधी टकी बातें नहीं कही गई हैं। आज़ादीकी सच्ची कल्पना कविताके लिये कितनी उर्वर होती है, किस तरह इस कल्पनासे अनेक काव्यस्रोत फूट पड़ते हैं, इन कविताओंमें कितनी सुबहोंकी पवें फट रही हैं, उनकी आवाज़ें कितनी जागती हुई आवाज़ें हैं, इन आवाज़ोंके चढ़ाव उतारमें आनेवाले ज़मानेके दिलकी धड़कनें किस तरह सुनाई दे रही हैं, भारतीय जन-क्रान्ति इन कविताओंमें किस तरह अँगड़ाइयाँ ले रही है ये सब बातें, नई जागृतिके ये सब लक्षण इन कविताओंमें विद्यमान हैं।

सूची

	पृष्ठ
१. मातमे-आज़ादी—'जोश' मलीहाबादी	१३
२. फ़रेब—अली सरदार जाफ़री	३०
३. ज़ंजीर टूटती है—'मख़मूर' ज़ालन्धरी	३४
४. नया सूरज—मुईन अहसन 'जज़्बी'	३६
५. आज़ादी—जाँनिसार अख़्तर	३८
६. आज़ादीका दिन—मसऊद हुसैन	४३
७. तिश्नगी—नियाज़ हैदर	४५
८. आज़ादीकी पूजा—'फ़िक्र' तौंसवी	४८
९. १५ अगस्त : एक कहानी—'फ़िराक़' गोरखपूरी	५०

मातमे-आज़ादी

'जोश' मलीहाबादी

(१)

ए हमनशीं[1] फ़सानए-हिन्दोस्तां[2] न पूछ
रूदादे-जाम-बख़्शिये-पीरे-मुग़ां[3] न पूछ
बरबतसे[4] क्यों बलन्द हुई है फ़ुग़ां[5] न पूछ
क्यों बाग़पर मुहीत[6] है अब्रे-ख़िज़ां[7] न पूछ
क्या-क्या न गुल खिले रविशे-फ़ैज़े-आमसे[8]
काँटे पड़े ज़बानमें फूलोंके नामसे

(२)

शाख़ें हुईं दो-नीम[9] जो ठंडी हवा चली
गुम हो गई शमीम[10] जो बादेसबा[11] चली
अँगरेज़ने वह चाल ब-जौर-ओ-जफ़ा[12] चली
बरपा हुई बरातके घरमें चलाचली
ख़ूने-चमन बहारके आते ही बह गया
उतरा जो तौक़[13] और भी दम घुटके रह गया

---

[1]साथी [2]हिन्दुस्तानकी कहानी [3]साक़ीके जाम देनेका हाल, [4]सितार [5]कराह, दुखकी आवाज़ [6]छायी [7]हेमन्त ऋतुकी बदली [8]व्यंगके स्वरमें कहा गया है कि लोक हितके इस तरीक़ेसे क्या-क्या गुल नहीं खिले, फूलोंका नाम लेनेसे भी ज़बानमें काँटे पड़ गये [9]दो टुकड़े [10]सुगंधित [11]सुबह को चलनेवाली हवा [12]जबरदस्ती और जुल्म के साथ [13]गुलामी का पट्टा या जुआ

(३)

झूमी घटा—फ़िज़ा शरर-आमेज़[1] हो गई
खोली ख़ुशीने ज़ुल्फ़[2]—ग़मअंगेज़[3] हो गई
मचली नसीम[4] अक़्ल जुनूँ-खेज़[5] हो गई
सायेमें धूप और भी कुछ तेज़ हो गई
पारा, चलीं जो सर्द हवाएँ तो चढ़ गया
दरमाँ[6] हुआ तो दर्दे-जिगर और बढ़ गया

(४)

एक दिलनशीं[7] कली जो सरे-बाग़[8] खिल गई
तो ख़ाकमें लताफ़ते-गुलज़ार[9] मिल गई
पहनी क़बाए-नर्म[10] तो जिल्द[11] और छिल गई
ठहरा जो दिल तो सब्रकी बुनियाद हिल गई
शबनम उधर गौहर वरक़े-गुलपै[12] जड़ गई
गुलज़ारे-ज़िन्दगीपै[13] इधर ओस पड़ गई

(५)

बाजे बजे तो शोरे-फ़ुग़ाँ[14] दूर तक गया
कश्ती[15] मिली तो ख़ैरसे दरिया बिचक[16] गया

---

[1]ऐसा वायुमंडल जिसमें चिनगारियाँ मिली हों [2]बाल, केश [3]दुख पूर्ण [4]पवन [5]पागलपनसे पूर्ण [6]इलाज, चिकित्सा [7]मनोहर [8]बाग़में [9]वाटिकाकी सजावट, पवित्रता [10]मुलायम वस्त्र [11]खाल, त्वचा [12]फूलकी पंखुड़ीपर मोती [13]जीवन-वाटिका [14]चीत्कार, फ़रियादका शोर [15]नाव [16]उथला हो गया

शबनम गिरी, दिले-समन-ओ-सर्व[1] पक गया
बूँदें पड़ीं तो और भी गुलशन दँदक[2] गया
अपना गला ख़रोशे-तरन्नुमसे[3] फट गया
तलवारसे बचा तो रगे-गुलसे[4] कट गया

(६)

दौलत मिली तो और भी नादार[5] हो गये
सेहत[6] हुई नसीब तो बीमार हो गये
उतरा जो बार[7] और गरांबार[8] हो गये
आज़ाद यूँ हुए कि गिरफ़्तार हो गये
पिघला जो आस्माँ तो ज़मीं संग[9] हो गई
पौ यूँ फटी कि सुबहे-चमन दंग हो गई

(७)

बातिल[10] हुआ जो खौफ़ तो दिल और डर गया
भीगीं मसें[11] तो ज़ीस्तका[12] मुँह और उतर गया
पाया सुबू[13] तो उम्रका पैमाना[14] भर गया
पुरसाँ हुए मसीह[15] तो बीमार मर गया
नग़मे छिड़े तो शोरिशे-पैकार[16] बन गये
गूँजे जो राग, तेग़की झंकार बन गये

---

[1]चमेली और सनोवर (एक वृक्ष जो बिलकुल सीधा होता है) [2]धधक [3]चीख़कर गानेसे [4]फूलकी नस [5]निर्धन [6]स्वास्थ्य [7]भार [8]और भी भारी बोझके नीचे दब गये [9]पत्थर [10]निर्मूल [11]रेख [12]जीवनका [13]घड़ा, मटका [14]गिलास, प्याला [15]हकीम, चिकित्सक, हज़रत ईसाको मसीह भी कहते हैं जो मुर्दोंको भी जिला देते थे [16]लड़ाईका शोर

(८)

चहके जो एतमादके[१] गुलज़ारमें तयूर[२]
बेएतमादियोंका गया शोर दूर-दूर
दौड़ा रुखे-फ़सुर्दापै[३] जब ज़िन्दगीका नूर[४]
दी मौतने सदा कि "नमस्ते श्री हुज़ूर
"बाक़ी रहे जगह न कोई सौतके लिये
"लौंडी सभामें आई है डंडौतके[५] लिये"

(९)

फ़ितने[६] मिटे तो अम्नकी[७] दौलत नहीं रही
इन्सानकी वो क़द्र[८] वो क़ीमत नहीं रही
हासिल हुआ उरूज[९] तो इज़्ज़त नहीं रही
पाई जो हुर्रियत[१०] तो हरारत[११] नहीं रही
जब रोज़गार नर्म हुआ संग[१२] हो गये
वुसअ़त[१३] मिली तो और भी दिल तंग हो गये

(१०)

छिटकी जो चाँदनी, तो बढ़ी ज़ुल्मतोंकी[१४] शान
बाज़ार जब खुला तो हुई बन्द हर दुकान
छेड़े जो राग सरपै कड़कने लगी कमान[१५]
छतकी लगी जो डाट तो शक़[१६] हो गया मकान
दरमाँसे और दिल हमःतन-दर्द[१७] हो गया
फूटी किरन तो सुबहका मुँह ज़र्द[१८] हो गया

---

[१]विश्वासके [२]पक्षीगण [३]उदास मुखपर [४]ज्योति, चमक [५]दंडवत [६]झगड़े [७]शान्ति [८]मान, प्रतिष्ठा [९]उत्थान, उन्नति [१०]स्वाधीनता [११]गर्मी [१२]कड़े, पत्थर [१३]फैलाव, विस्तार [१४]अंधकारों, अँधियारियों [१५]धनुष [१६]फट गया [१७]साकार पीड़ा [१८]पीला

(११)

शादी हुई तो ग़मके खज़ाने लुटा दिये
कुछ यूँ दिये जलाये कि दिल ही बुझा दिये
सेहरा बँधा तो शर्मके पर्दे उठा दिये
मेंहदी लगी तो ख़ूनके दरिया बहा दिये
दूल्हा बने तो हद्दे-मसर्रतसे[1] बढ़ गये
घोड़ेके लात मारके सूलीपे चढ़ गये

(१२)

दहके तो सोजे-सौजे-तकल्लुम[2] नहीं रहा
चहके तो लह्न-ओ-रंग-ओ-तरन्नुम[3] नहीं रहा
लहके तो रक़्स-ओ-रंग-ओ-तबस्सुम[4] नहीं रहा
महके तो बूए-गुलका तलातुम[5] नहीं रहा
काँपे जो तार—देवे-महन[6] बोलने लगा
खेमे हुए जो नस्ब[7] तो रन बोलने लगा

(१३)

उभरे तो जोशे-बादा-गुसाराँ[8] नहीं रहा
बादल घिरे तो रंगे-बहाराँ[9] नहीं रहा
रातें खिलीं तो रक़्से-निगाराँ[10] नहीं रहा
बोतल खुली तो मजमए-याराँ[11] नहीं रहा

---

[1]प्रसन्नताकी सीमा [2]हम इस तरह दहके कि बात करनेकी गर्मी भी जाती रही [3]यों चहके कि संगीतका स्वर और साज़ लुप्त हो गया [4]यों लहके कि नाच, रंग, मुस्कराहट सब कुछ जाता रहा [5]फूलों की सुगंधका तूफ़ान [6]दुखका देवता [7]गड़े [8]शराब पीने वालोंका जोश [9]बसन्तका रंग [10]सुन्दरियोंका नृत्य [11]दोस्तोंका जमघटा

कोई सबीले-बादा-परस्ती[1] नहीं रही
मस्तीकी रात आई तो हस्ती[2] नहीं रही

(१४)

जब बाग़बाने-क़ौम[3] ज़फ़रमन्द[4] हो गया
हर बर्गे-नर्म[5] ख़ाकका पैवन्द हो गया
आशिक़ जो वस्ले-यारसे[6] ख़ुरसन्द[7] हो गया
फ़ालिज[8] गिरा दिमाग़पे, दिल बन्द हो गया
उतरा बुख़ार,[9] अक़्लको ताऊन[10] हो गया
पैदा हुआ लहू तो जिगर ख़ून हो गया

(१५)

बख़िया[11] हुआ तो और भी चादर उधड़ गई
बन्धन खुले तो जिस्मकी रग-रग जकड़ गई
भरने लगे जो शह्र तो बस्ती उजड़ गई
टूटी रसन[12] तो अक़्लमें जंजीर पड़ गई
ताक़त मिली तो कोई तवाना नहीं रहा
बरसा जो मेंह[13] तो खेतमें दाना नहीं रहा

(१६)

बारिश हुई, ज़मीन दँदक[14] कर उबल गई
ऊदी घटा उठी तो हरी दूब जल गई

---

[1]शराब पीनेका उपाय, [2]जिन्दगी, जीवन [3]राष्ट्र (वाटिका)का माली [4]विजयी [5]मुलायम पत्ता [6]प्रेमिकाके मिलाप [7]खुश, प्रसन्न [8]सन्निपात [9]ज्वर [10]प्लेग [11]सिलनेपर, सिलाई होनेपर [12]रस्सी [13]पानी [14]दहक

उभरी हयात[1] मौतके साँचेमें ढल गई
बाँहें पड़ीं गलेमें कि तलवार चल गई .

आबे-बक़ासे[2] ज़हरकी लहरें उबल पड़ीं
बोसे[3] मिले तो मुंहसे ज़बानें निकल पड़ीं

(१७)

दुश्मन गये तो दोस्त बने दुश्मने-वतन[4]
शबनम जो पी तो खौल गये लाला-ओ-समन[5]
सनकी हवाए-सर्द[6] तो कजला गया चमन
ख़िलअतकी[7] तह खुली तो बरामद[8] हुआ कफ़न

नग़मे छिड़े तो शोर सरेबाम[9] मच गया
चटकी कली तो बाग़में कोहराम[10] मच गया

(१८)

हर मूए-ज़ुल्फ़[11] ऐंठ गया, मार[12] बन गया
हर मेह्‌रका ख़तीब[13] जफ़ाकार बन गया
हर सुब्हका रसूल[14] शबे-तार[15] बन गया
हर लोच एक उर्यां[16] हुई तलवार बन गया

"बदली निगाह तौरसे बेतौर हो गये
"हम तो जवान होते ही कुछ और हो गये"

---

[1]जीवन [2]अमृत जल [3]चुम्बन [4]देशका शत्रु [5]लाल रंगके और चमेलीके फूल [6]शीतल पवन [7]सुन्दर वस्त्र [8]निकला [9]कोठेपर [10]हाहाकार [11]केशका प्रत्येक बाल [12]साँप [13]दयाका उपदेशक, मेह्‌र=दया, ख़तीब=व्याख्यानदाता [14]अवतार [15]अँधेरी रात [16]नंगी, चमकती

(१९)

सिखने गुरूके नामको बट्टा लगा दिया
मन्दिरको बरह्मनके[1] चलनने गिरा दिया
मसजिदको शेख़जीकी करामतने ढा दिया
मजनूँने बढ़के पर्दए-महमिल[2] गिरा दिया
एक सूए-ज़नको[3] ग़ुलग़ुलए-आम[4] कर दिया
मरियमको[5] ख़ुद मसीहने[6] बदनाम कर दिया

(२०)

सिक्कोंकी अंजुमनमें[7] ख़रीदार आ गये
सेठोंके ख़ादिमाने-वफ़ादार[8] आ गये
खद्दर पहन-पहनके बद अतवार[9] आ गये
दरपर सफ़ेदपोश सियहकार[10] आ गये
तारीकियोंको छोड़के रोशनजबीं गये
जो लोग आस्मान थे ज़ेरे-ज़मीं[11] गये

---

[1]ब्राह्मण [2]ऊँटके कजावेपर पर्दा डालकर पर्दानशीन स्त्रियोंके लिये जो जगह बनाई जाती है उसे महमिल कहते हैं। इस पंक्तिका मतलब यह है कि मजनूँने उस महमिलको जिसमें लैला सवार थी उसका पर्दा गिरा दिया [3-4]भलाईकी कपोल कल्पित धारणाको एक शोरके रूपमें फैला दिया या उसका झूठा हल्ला-ग़ुल्ला मचा दिया [5]मरियम ईसा मसीहकी माँ थीं वे कुमारी ही रहीं और उनके गर्भसे ईसाके जन्मको लोगोंने ईश्वरका चमत्कार माना था ईसाई लोग उनके पुत्र ईसाको ईश्वरका पुत्र मानते हैं [6]ईसा मसीह [7]सभा [8]स्वामिभक्त सेवक [9]दुराचारी [10]श्वेत वस्त्र धारी किन्तु काले कार्य करनेवाले [11]ज़मींनके नीचे अंडर-ग्राउंड

(२१)

पल भरमें सूए-दश्ते-जनूँ[1] मुड़ गया समाज
अपने वतनकी शर्म न अपने गुरुकी लाज
रस्में बदल गईं तह-ओ-बाला[2] हुए रिवाज
वह गुफ़्तगू[3] रही न वो लहजे[4] न वह मिज़ाज

घर अपना घर गृहस्थ[5] ही ख़ुद मूसने लगी
हद है ज़बाने-देव[6] परी चूसने लगी

(२२)

नसरीन-ओ-गुलको[7] शोलए-बेबाक[8] कर दिया
सर्व-ओ-चनारको[9] ख़स-ओ-ख़ाशाक[10] कर दिया
छोड़े अनार[11] लाखका घर ख़ाक कर दिया
ख़ुद बूए-गुलने दामने-गुल[12] चाक कर दिया

"शोले भड़कके उठने लगे दिलके दाग़से
"इस घरको आग लग गई घरके चिराग़से"

(२३)

ख़ायन[13] हुए हरीमे-अमानतमें[14] बारयाब[15]
शैताँ बने फ़राज़े-हिदायतके[16] आफ़ताब[17]

---

[1]पागलपन के जंगलकी ओर [2]उलट-पुलट [3]बात-चीत [4]स्वर [5]यहाँ गृहणीसे मतलब है [6]राक्षसकी जीभ [7]जंगली गुलाब और अन्य फूल [8]निर्भीक लपट [9]सनोबर और चनार, पहाड़ी पेड़ [10]कूड़ा-करकट [11]आतशबाज़ीके अनार [12]स्वयं फूलोंकी सुगन्धने फूलोंका दामन चाक कर दिया [13]जिनके पास कोई चीज़ धरोहरके रूपमें जमा की जाय और वह उसे हड़प कर जायँ [14]अमानत धरोहर रखनेकी जगह [15]पहुंच गये [16]पथप्रदर्शनके आकाशके स्थानपर [17]सूर्य

बेड़े डुबो चुके हैं जो बेहद्द-ओ-बेहिसाब
उन ज़ालिमोंका हज़रते-इलयास[1] है ख़िताब
वह जो तमाम राहज़नोंका[2] इमाम है
वह शख़्स आज ख़िज़्र अलैहिस्सलाम[3] है

(२४)

देते थे सुबह-ओ-शाम सज़ाएँ जो नासज़ा[4]
गर्दन पे जिनकी ख़ून है मर्दाने-राहका[5]
कल जिनकी डपटियोंका निशाना थे रहनुमा[6]
उन डिप्टियोंको हमने कलक्टर बना दिया
क़ैदी छुटे तो ख़ैरसे बरबाद हो गये
जो क़ैद कर रहे थे वो आज़ाद हो गये

(२५)

हुक्काम मुजरिमोंके हैं दामन सिये हुए[7]
"सी० आई० डी०" है बादए-ग़फ़लत[8] पिये हुए
दारोग़ाजी हैं क़ौल बदोंको[9] दिये हुए
चोरोंसे कोतवाल है साज़िश[10] किये हुए
ब्रिटिशके ख़ादिमोंको उछाले हुए हैं हम
साँपोंको आस्तीनमें पाले हुए हैं हम

---

[1]एक महापुरुष जो समुद्र और पृथ्वीपर भूले भटके लोगोंको राह बताते हैं [2]चोरों, लुटेरों [3]एक पैग़म्बर जो भूले भटकोंको राह बताते हैं [4]दिन रात जो ग़लत और अनुचित सज़ाएँ देते थे [5]स्वतन्त्रताकी राहके बहादुरोंका [6]नेता जिनकी डाँट-डपटका निशाना बने हुए थे [7]बुराइयाँ छिपाये हुए [8]बेपरवाही-की शराब [9]बुरे लोगोंको आश्वासन दिये हुए [10]षड्यन्त्र

(२६)

ग़द्दार थे जो कल वो मुहिब्बे-वतन[१] हैं आज
बदख़्वाहे-बाग़[२] हमदमे-सर्व-ओ-समन[३] हैं आज
कल तक थे जो समूम,[४] नसीमे-चमन[५] हैं आज
ख़ुसरो[६] के जो ग़ुलाम थे वह कोहकन[७] हैं आज
लछमनका[८] दिल है शिद्दते-ग़मसे[९] फटा हुआ
दरपर है रामचन्द्रके रावन डटा हुआ

(२७)

मुफ़सिद[१०] हैं फ़ौजे-अम्नके[११] सालार[१२] आजकल
डाकू हैं सीम-ओ-ज़रके[१३] निगहदार[१४] आजकल
ज़ाग़-ओ ज़ग़न[१५] हैं मुतरिबे-गुलज़ार[१६] आज कल
अफ़सर हैं बुलबुलोंके चिड़ीमार आजकल
चंगेज़ख़ाँ[१७] हैं ईसिये-दौराँ[१८] बने हुए
काँटे हैं चोबे-ख़ेमए-बुस्ताँ[१९] बने हुए

---

[१]देशप्रेमी [२,३]बाग़की बुराई चाहनेवाले पेड़ों और फूलोंके शुभ-चिन्तक बने हैं [४]लू, गर्म हवा [५]बाग़की ठंडी हवा [६]ईरानका बादशाह, जो शीरींका पति था [७]फ़रहाद, शीरींका प्रेमी जिसने पहाड़ काटकर नहर निकाली थी और इसी कारण कोहकन (पहाड़ खोदनेवाला)के नामसे प्रसिद्ध है [८]लक्ष्मणका [९]दुखकी तीव्रता [१०,११,१२]दंगाई, झगड़ालू लोग शान्ति-सेनाके सेनापति [१३,१४]चाँदी सोनेके रखवाले [१५]कौवे और चील [१६]वाटिकाके मधुर स्वरमें गाने, चहचहानेवाले [१७]प्रसिद्ध मंगोल बादशाह जो अत्यन्त निर्दयी था [१८]युगके ईसा [१९]वाटिकाके शामियानेकी डोर और खम्भे

(२८)

बरतानियाके ख़ास ग़ुलामाने-ख़ाना-ज़ाद[1]
देते थे लाठियोंसे जो हुब्बे-वतनकी[2] दाद[3]
जिनकी हर एक ज़र्ब[4] है अब तक सरोंको याद
वह "आई० सी० एस०" अब भी हैं ख़ुशवक़्त-ओ-बा-मुराद[5]
शैतान एक रातमें इन्सान बन गये
जितने नमकहराम थे कप्तान बन गये

(२९)

सीनोंसे उठ रही है वही बेदिलीकी भाप
अब भी बग़लमें पुनको दबाये हुए हैं पाप
माथेपर अब भी दौलते "ताग़ूत"[6] की है छाप
बेटे हैं उसके आज भी हम लोग और वह बाप
आज़ादियाँ हैं बूए-ग़ुलामी[7] लिये हुए
अब भी सरों पे ताज है साया[8] किये हुए

(३०)

झोंकोंमें रक़्स-ओ-कैफ़[9] है मौसममें एतदाल[10]
लहका हुआ है बाग़ तो निखरा हुआ हिलाल[11]
लेकिन ब-ईं सुरूर-ओ-ब-ईं कसरते जमाल[12]
उश्शाक़की रविश है निराली शबे-विसाल[13]

---

[1]घरका पैदा हुआ ग़ुलाम, लौंडीका बच्चा [2]देशप्रेम [3]इनाम, शाबाशी [4]चोट [5]सुखी, सम्पन्न [6]कामन-वेल्थ [7]दासताकी गन्ध [8]छाया, ब्रिटिश कामन-वेल्थ, जिसका भारत आज भी एक सदस्य है [9]नाच और मस्ती [10]अतिसे बचे रहने का गुण [11]द्विजका चाँद [12]इस आनन्द और सौन्दर्यका बाहुल्य होते हुए भी [13]प्रेमियों, आशिक़ोंके ढंग मिलनकी रातमें बड़े निराले हैं

माशूक़ा है वफ़ूरे-हया[1] से गड़ी हुई
अग़ियारके[2] गलेमें हैं बाँहें पड़ी हुई

(३१)

अरबाबे-इक़्तिदारका[3] अल्लाह रे कमाल
देखो तो सरबलन्द[4] टटोलो तो पायमाल[5]
कालोंके आरिज़ों[6] पे हैं गोरोंके ख़त्त-ओ ख़ाल[7]
भारतका रंग-रूप है ब्रिटिशकी चाल-ढाल
हाथोंमें फूल, जेबमें ढेले लिये हुए
सारी गुरूकी शान हैं चेले लिये हुए

(३२)

गो हुक्म है कि बन्द शबिस्ताँका[8] दर न हो
जो आये एतराज़ किसी शख़्सपर न हो
क़दग़न[9] है यह मगर कि लबे-ख़ुश्क[10] तर न हो
इन्दर सभामें लाल परीका गुज़र न हो
रोशन थे कल जो सुर्ख़ पियालोंके सामने
गुल आज वो चिराग़ हैं कालोंके[11] सामने

(३३)

वहशत रवा,[12] एनाद[13] रवा, दुश्मनी रवा
हलचल रवा, ख़रोश[14] रवा, सन्सनी रवा

---

[1]प्रेमिका अत्यधिक लज्जासे गड़ी हुई है [2]ग़ैरों, दूसरों [3]शासनारूढ़ लोगों [4]ऊँचे [5]गिरे हुए [6]गालों [7]नयन नक़्श [8]वह स्थान जहाँ रात हो गई हो [9]रोक, मनाही [10]सूखे होंठ [11]यहाँ कालोंका मतलब काला साँप भी है, साँपके आगे चिराग़ नहीं जलता [12]पागलपन, बर्बरता भी उचित है [13]वैर [14]चिल्लाना,

रिशवत रवा, फ़साद रवा, रहज़नी[1] रवा
अलक़िस्सा हर वो शय कि है नाकरदनी[2] रवा
इन्सानके लहूको पियो इज़ने-आम[3] है
अंगूरकी शराबका पीना हराम है

(३४)

जिनके क़लम हैं तेग़-ओ-तबरसे[4] लड़े हुए
जिनकी लड़ाइयोंके हैं झंडे गड़े हुए
हक़पर[5] हैं जो पहाड़की सूरत अड़े हुए
ज़िल्लत[6]के ग़ारमें हैं वो अब भी पड़े हुए
शायर हो, या अदीब,[7] क़लन्दर[8] हैं आज भी
अँगरेज़का ग़ुलाम गवर्नर है आज भी

(३५)

वो शायराने-क़ौम, गराँ क़द्री-ओ-मोतबर[9]
रहते हैं जिनकी जेबमें असरारे बह्र-ओ-बर[10]
सूरज पै जिनका हाथ है और पाँव चाँदपर
रोटी वो ढूँढ़ते हुए फिरते हैं दर-ब-दर
क्या चीज़ है अदब[11] ये कोई जानता नहीं
जाने वो क्या जो हर्फ़[12] भी पहचानता नहीं

---

[1]लूटना, चोरी करना [2]जो न करना चाहिये [3]सबको खुली अनुमति [4]तलवार और कुल्हाड़े [5]सत्य [6]बेइज़्ज़ती, नाक़दरी [7]साहित्यकार [8]निर्धन, फ़ाक़ामस्त [9]सम्मानके योग्य और विश्वासपात्र [10]सागर और पृथ्वीके रहस्य [11]साहित्य [12]अक्षर

(३६)

वह जिनकी वुसअतोंकी[1] कोई इन्तहा[2] नहीं
सबसे सिवा उन्हींके लिये तंग है ज़मीं
दफ़्तरमें कोई क़ैद, कोई बोरियानशीं[3]
यह अबतरी[4] है कोई कहीं है कोई कहीं
लोग आये और गये भी ग़िज़ा[5] बाँटते हुए
ये रह गये दवात क़लम चाटते हुए

(३७)

जाहिल[6] हुज़ूरको नजर आता है दूरबीं[7]
आलिमको[8] आँख उठाके कभी देखते नहीं
बातिल[9] जभी तो हक़[10] पै चढ़ाये हैं आस्तीं
बैठी है आस्माँको दबोचे हुए ज़मीं
कौवा है ज़मज़मोंकी[11] तराज़ू बना हुआ
मुर्ग़-चमन[12] है काठका उल्लू बना हुआ

(३८)

छाई हुई हैं ज़ेरे-फ़लक[13] बद हवासियाँ
आँखें उदास-उदास तो मुँह हैं धुआँ-धुआँ[14]
मनके[15] ढले हुए हैं तो ऐंठी हुई ज़बाँ
वह ज़ोफ़[16] है कि मुँहसे निकलती नहीं फ़ुग़ाँ[17]

---

[1]व्यापकता [2]सीमा [3]बोरियोंपर सोनेवाला अर्थात ग़रीब [4]गड़बड़, परेशानी [5]जीविका, भोजन [6]अपढ़ [7]दूरदर्शी [8]विद्वान [9]असत्य [10]सत्य [11]संगीत [12]वाटिका, चहचहानेवाले पक्षी [13]आकाशके नीचे [14]चिन्तित, परेशान [15]रीढ़का ऊपरी भाग, मनका ढलना अर्थात मरते समय गर्दनका एक ओर लुढ़क जाना [16]दुर्बलता [17]चीत्कार, रुदन

एक दूसरेकी शक्लको पहचानता नहीं
मैं ख़ुद हूँ कौन यह भी कोई जानता नहीं

(३९)

ख़ामोश हैं तयूरे चमन सुर्मा दरगुलू[1]
शाख़ें फ़सुर्दा,[2] ख़ोशए-अंगूर ज़र्द-रू[3]
फूलोंको अब नहीं है तमन्नाए-रंग-ओ-बू
बुलबुलको आशियाँमें[4] क़फ़सकी[5] है आरज़ू[6]
ग़ारतगरे-बहारका[7] मुँह चूमने लगे
आई जो आँधियाँ तो चमन झूमने लगे

(४०)

फिर ज़लज़ले हैं राकिबे-तमकीने-ज़िन्दगी[8]
बेआइनी है नाज़िमे आईने-ज़िन्दगी[9]
फिर जुर्म बन चुके हैं क़वानीने-ज़िन्दगी[10]
फिर मौत है पयामबरे-दीने-ज़िन्दगी[11]
फिर शक्ले-ज़िन्दगीसे डरे जा रहे हैं लोग
बस ए हयात[12] बस कि मरे जा रहे हैं लोग

---

[1]वाटिकाके पक्षियोंको सुर्मा खिला दिया गया है, सुर्मा खिलानेसे आवाज़ वन्द हो जाती है [2]मुरझाई हुई [3]अंगूरके गुच्छे पीले हैं [4]नीड़, घोंसले [5]पिंजड़े [6]चाह, अभिलाषा [7]बहारका विनाश करनेवाला [8]भूचाल जीवनके ठहराव और विश्रामपर सवार हैं [9]अव्यवस्था जीवनकी व्यवस्था निश्चित कर रही है [10]जीवनके नियम [11]मृत्यु जीवन-धर्मका सन्देश वन गई है [12]जीवन

(४१)

फ़ुटपाथ, कारख़ाने, मिलें, खेत, भट्टियाँ
गिरते हुए दरख़्त, सुलगते हुए मकाँ
बुझते हुए यक़ीन,[1] भड़कते हुए गुमाँ[2]
इन सबसे उठ रहा है बग़ावतका फिर धुआँ
शोलोंके पैकरोंसे[3] लिपटनेकी देर है
आतशफ़शाँ[4] पहाड़के फटनेकी देर है

(४२)

वह ताज़ा इन्क़लाब हुआ आगपर सवार
वह सनसनाई आँच, वो उड़ने लगे शरार[5]
वह गुम हुए पहाड़, वो ग़लताँ[6] हुआ ग़ुबार[7]
ए बेख़बर, वो आग लगी आग—होशियार
बढ़ता हुआ, फ़िज़ा पै क़दम गाड़ता हुआ
भूँचाल आ रहा है वो फुनकारता हुआ

---

[1]विश्वास [2]भ्रम [3]आकारों [4]ज्वालामुखी
[5]चिनगारियाँ [6]छागया [7]धूल

फ़रेब

(१५ अगस्त और उसके बाद)

अली सरदार जाफ़री

नागहाँ[1] शोर हुआ
लो शबे-तारे-ग़ुलामीकी सहर[2] आ पहुँची
उँगलियाँ जाग उठीं

बरबत-ओ-ताऊसने[3] अँगड़ाई ली
और मुतरिबकी[4] हथेलीसे शुआएँ[5] फूटीं
खिल गये साज़में नग़मोंके महकते हुए फूल
लोग चिल्लाये कि फ़रियादके दिन बीत गये
राहज़न[6] हार गये
राहरौ[7] जीत गये

क़ाफ़िले दूर थे मंज़िलसे, बहुत दूर, मगर
ख़ुदफ़रेबीकी[8] घनी छाँवमें दम लेने लगे
चुन लिया राहके काँटोंको ख़ज़फ़-रेज़ोंको[9]
और समझ बैठे कि बस लाल-ओ-जवाहर[10] हैं यही
राहज़न हँसने लगे छिपके कमींगाहोंमें[11]

---

[1]अचानक [2]ग़ुलामीकी काली रातका सवेरा [3]सितार और मोरकी शक्लका एक साज़ [4]सितार-सरोद बजानेवाला [5]किरनें [6]डाकू, चोर [7]राही, पथिक [8]स्वयंको धोखा देने [9]कंकड़ों [10]लाल जवाहर [11]छिपकर हमला करनेकी जगह

हमनशीं[1] यह था फ़िरंगीकी फ़रासतका[2] तिलिस्म
रहबरे-क़ौमकी[3] नाकारा क़यादतका[4] फ़रेब
हमने आज़ुर्दगिए-शौक़को[5] मंज़िल जाना
अपनी ही गर्दे-सरे-राहको महमिल[6] जाना
गर्दिशे-हलक़ए-गिरदाबको[7] साहिल जाना
अब जिधर देखो उधर मौत ही मँडलाती है
दर-ओ-दीवारसे रोनेकी सदा आती है
ख़्वाब ज़ख़्मी हैं उमंगोंके कलेजे छलनी
मेरे दामनमें हैं ज़ख़्मोंके दहकते हुए फूल
ख़ूँ में लुथड़े हुए फूल
मैं जिन्हें कूचा-ओ-बाज़ारसे चुन लाया हूँ
क़ौमके राहबरो राहज़नो !
अपने ऐवाने-हुकूमतमें[8] सजा लो इनको
अपने गुलदाने-सियासतमें[9] सजा लो इनको
अपनी सदसाला तमन्नाओंका हासिल[10] है यही
मौजे-पायाबका[11] साहिल है यही
तुमने फ़िरदौसके[12] बदलेमें जहन्नम[13] लेकर
कह दिया हमसे गुलिस्ताँमें[14] बहार आई है
चन्द सिक्कोंके एवज़, चन्द मिलोंकी ख़ातिर
तुमने नामूसे-शहीदाने-वतन[15] बेच दिया
बाग़बाँ बनके उठे और चमन बेच दिया

---

[1]साथी [2]चालाकी [3]राष्ट्रके नेता [4]निकम्मा नेतृत्व [5]यात्राकी थकावटको मंज़िल जाना [6]अपने ही चलनेपर पीछे उड़नेवाली धूलको महमिल समझ लिया [7]भँवरके चक्करको किनारा समझ लिया [8]राजभवन [9]राजनीतिके गुलदस्ते [10]अपनी सौ वर्षीय कामनाओंका यही फल है [11]घुटनों तक पानीवाली लहर [12]स्वर्ग [13]नरक [14]वाटिका [15]देशपर शहीद होनेवालोंकी इज़्ज़त

(२)

कौन आज़ाद हुआ
किसके माथेसे सियाही छूटी
मेरे सीनेमें अभी दर्द है महकूमीका[1]
मादरे-हिन्दके[2] चेहरेपे उदासी है वही

ख़ंजर आज़ाद हैं सीनेमें उतरनेके लिये
मौत आज़ाद है लाशोंपे गुज़रनेके लिये

चोर बाज़ारोंमें बदशक्ल चुड़ैलोंकी तरह
क़ीमतें काली दुकानों[3] पै खड़ी रहती हैं
हर ख़रीदारकी जेबोंको कतरनेके लिये

कारख़ानों पै लगा रहता है
साँस लेती हुई लाशोंका हुजूम[4]
बीचमें उनके फिरा करती है बेकारी भी
अपने ख़ूँख़ार दहन[5] खोले हुए

और सोनेके चमकते सिक्के
डंक उठाये हुए, फन फैलाये
रूह[6] और दिल पे चला करते हैं
मुल्क और क़ौमको दिन रात डसा करते हैं

रोटियाँ चकलोंकी क़हबाएँ[7] हैं
जिनको सरमायेके[8] दल्लालों ने
नफ़ाख़ोरीके झरोखोंमें सजा रक्खा है

---

[1]पराधीनता [2]भारत-माता [3]ब्लैक मार्केटकी दुकानों [4]भीड़ [5]मुँह, जबड़ा [6]आत्मा [7]वेश्याएँ [8]पूँजी

बालियाँ धानकी गेहूँके सुनहरे खोशे[1]
मिस्र-ओ-यूनानके मजबूर ग़ुलामोंकी तरह
अजनबी देसके बाज़ारोंमें बिक जाते हैं
और बदबख़्त[2] किसानोंकी बिलखती हुई रूह
अपने अफ़्लासमें[3] मुँह ढाँपके सो जाती है
हम कहाँ जाएँ कहें किससे कि नादार[4] हैं हम
किसको समझाएँ ग़ुलामीके गुनहगार[5] हैं हम
तौक़[6] ख़ुद हमने पिन्हा[7] रक्खा है अरमानोंको
अपने सीनेमें जकड़ रक्खा है तूफ़ानोंको
अब भी ज़िन्दाने-ग़ुलामीसे[8] निकल सकते हैं
अपनी तक़दीरको हम आप बदल सकते हैं

(३)

आज फिर होती हैं ज़ख़्मोंसे ज़बानें पैदा
तीरा-ओ-तार फ़िज़ाओंसे[9] बरसता है लहू
तारे आकाश पै कमज़ोर हबाबोंकी[10] तरह
शबके सैलाबे सियाहीमें[11] बहे जाते हैं
फूटनेवाली है मज़दूरके माथेसे किरन
सुर्ख़ परचम[12] उफ़क़े-सुब्ह[13] पै लहराते हैं

---

[1]गुच्छे [2]अभागे [3]दरिद्रतामें [4]निर्धन [5]ग़ुलामीका पाप करनेवाले [6]पट्टा, जंजीर [7]पहना [8]ग़ुलामीके वन्दीगृह [9]अन्धकारपूर्ण वायुमंडल [10]पानीके बुलबुलों [11]रातके अन्धकारकी बाढ़ [12]लाल झंडे [13]प्रात:कालके क्षितिज

ज़ंजीर टूटती है

'मख़मूर' जालन्धरी

हम आँसू हैं जलते हुए ख़ूनके सुर्ख़[1] मोती
टपकते रहे हैं, टपकते रहेंगे
ये आँसू हैं—हम चीथड़े हैं क़बाए-दरीदाके[2] लाखों परख़चे[3]
उधड़ते रहे हैं, उधड़ते रहेंगे
ये आँसू हैं, ये चीथड़े—और हम ज़ख़्म हैं ज़िन्दगीके बदनपर
तपकते[4] रहे हैं, तपकते रहेंगे
हमारा तयक़्क़ुन[5] ! बरसते रहेंगे, उधड़ते रहेंगे, तपकते रहेंगे
हमें तुमने क्यों डगमगाया
हमें तुमने छेड़ा, हमें तुमने नोचा, हमें तुमने छीला
हम अपने क़नाअतके[6] गोशोंमें[7] बेसुध पड़े थे
हम आँसूसे पर जी तो हलका किये जा रहे थे
ये आँसू थे हम चीथड़े थे, बरहना-तनी[8] अपनी जूँ तूँ ढके जा रहे थे
ये आँसू थे, ये चीथड़े और हम ज़ख़्म थे, गिरते पड़ते जिये जा रहे थे
हमें—तुमने छेड़ा
कि ज़ंजीर टूटी तो काँटोंकी कलियाँ बनेंगी बिखर जाएँगी रास्तोंपर
नक़ाहतके[9] मारे हुए बाँझ खेतोंमें दाने नहीं अब ज़मुर्रद[10] उगेंगे
उँडेलेंगे ख़ाना-बरअन्दाज़े-गुलशन[11] चमनके चमन झोलियोंमें

---

[1]लाल [2]फटे कुर्ते [3]चिथड़े, धज्जी-धज्जी [4]जलने, दुखने और खटकने [5]विश्वासके [6]संतोषके [7]कोनोंमें [8]शरीरकी नग्नता [9]दुर्बलताके [10]हीरे जवाहर [11]गुलशनको, बाग़को लूटने, बरबाद करनेवाले

उतारे हुए मातमी जोड़ा[1] रातें उरूसी-लिबादेमें[2] आया करेंगी
ये अरमान सीनेमें घोंपे हुए तेज़ ख़ंजर न होंगे
तमन्नाएँ रोज़े[3] न रक्खेंगी इसके बजाए फ़रावानिये-सेरचश्मीका[4] शिकवा करेंगी
न होगी खनकती हुई जेब भी मोल दोशीज़गीका[5]
जो तलवार उट्ठी तो उट्ठेगी हिफ़्ज़े-हमीयतकी[6] ख़ातिर

हमें तुमने नोचा
तपक भी वही है, कसक भी वही है, जलन बढ़ गई है
पकाई थी जो काठकी हँडिया तुमने कई मरतबा चढ़ गई है
हमारा बहुत एतबार[7] आज़माया गया है
बहक तो गये हैं, फ़रेबे-ग़लतकार[8] खा तो गये हैं
यहाँ तक पहुँचकर मगर लौट जाएँ ये मर्दानगी तो नहीं है
तुम्हारे लिये जो निबर्द-आज़मा[9] हो गये थे वो अपने लिये क्या नहीं कर सकेंगे
अभी तुमने यह भेद पाया नहीं है
कि हमने तुम्हें दूसरा रूप अपना अभी तक दिखाया नहीं है
हम आँसू हैं—जलते हुए तेल के छींटे बनकर उड़ेंगे
ये आँसू हैं हम चीथड़े हैं अभी ताज़ियानोंमें[10] तब्दील होकर बरसने लगेंगे
ये आँसू हैं ये चीथड़े—और हम ज़ख़्म हैं रिस पड़ेंगे हलाकतके[11] धारे बनेंगे
कि लोहेसे कटता है लोहा—

---

[1]शोककी पोशाक [2]दुल्हनकी लाल पोशाक [3]आशाएँ, अभिलाषाएँ व्रत न रक्खेंगी, अर्थात निराशामें परिणत न होंगी [4]अधिक पेटभर खानेकी शिकायत [5]कुमारियोंकी लाज [6]लाज, इज़्ज़तकी रक्षा [7]विश्वास [8]ग़लत कार्य करनेवालोंका धोखा [9]लड़नेको तैयार हो गये, लड़ने लगे [10]कोड़ोंमें [11]विनाश, हत्या

नया सूरज

मुईन अहसन 'जज़्बी'

बड़े नाज़से आज उभरा है सूरज
हिमालयके ऊँचे कलस जगमगाये
पहाड़ोंके चश्मोंको[1] सोना बनाया
नये बल, नये ज़ोर इनको सिखाए
लिबासे-ज़री[2] आबशारोंने[3] पाया
नशेबी ज़मीनों[4] पै छींटे उड़ाये
घने ऊँचे-ऊँचे दरख़्तोंका मंज़र[5]
ये हैं आज सब आबे-ज़रमें[6] नहाए
मगर इन दरख़्तोंके सायेमें ए दिल
हज़ारों बरसके ये ठिठुरेसे पौदे
ये हैं आज भी सर्द बेहाल बेदम
ये हैं आज भी अपने सरको झुकाए
अरे ओ नई शानके मेरे सूरज
तेरी आबमें[7] और भी ताब[8] आये
तेरे पास ऐसी भी कोई किरन है
जो ऐसे दरख़्तोंमें भी राह पाये
जो ठिठुरे हुओंको जो सिमटे हुओंको
हरारत भी बख़्शे[9] गले भी लगाये

---

[1]स्रोत [2]सुनहरा वस्त्र [3]झरनों [4]नीची ज़मीन [5]दृश्य [6]सोनेके पानी [7]पानी [8]चमक [9]गर्मी प्रदान करे

बड़े नाज़से आज उभरा है सूरज
हिमालयके ऊँचे कलस जगमगाये
फ़िज़ाओंमें होने लगी बारिशे-ज़र[1]
कोई नाज़नीं जैसे अफ़शाँ[2] छुड़ाए
दमकने लगे यों ख़लाओंके[3] ज़र्रे
कि तारोंकी दुनियाको भी रश्क आये
हमारे अक़ाबोंने अँगड़ाइयाँ लीं
सुनहरी हवाओंमें पर फड़फड़ाये
फ़ज़ूँ तर[4] हुआ नश्शए-कामरानी[5]
तजस्सुसकी[6] आँखोंमें डोरेसे आये
क़दम चूमने बर्क़-ओ-बाद-आब-ओ-आतश
बसद शौक़ दौड़े, बसद इज्ज़[7] आये
मगर बर्क़-ओ-आतशके सायेमें ए दिल
ये सदियोंके ख़ुदरफ़्ता नाशाद तायर
ये सदियोंके परबसता बरबाद तायर
ये हैं आज भी मुज़महिल[8] दिल गिरफ़्ता[9]
ये हैं आज भी अपन सरको छिपाय
अरे ओ नई शानके मेरे सूरज
तेरी आबमें और भी ताब आये
तेरे पास ऐसी भी कोई किरन है
उन्हें पंज-ए-तेज़से जो बचाये
उन्हें जो नये बाल-ओ-पर आके बख़्शे
उन्हें जो नये सरसे उड़ना सिखाये

---

[1]स्वर्ण वर्षा [2]कुमकुम [3]शून्य [4]और बढ़ा [5]सफलता का नशा [6]जिज्ञासा [7]विनम्रताके साथ [8]उदास, शिथिल [9]उदास मनवाले

आज़ादी

जाँनिसार अख़्तर

मैं तो यूँ ख़ुश था कि आज़ाद हुआ मेरा वतन
मैं तो यूँ ख़ुश था कि छूटा वह ग़ुलामीका गहन[1]
मैं तो यूँ ख़ुश था कि अब रातने खींचा दामन[2]
मैं तो यूँ ख़ुश था कि अब सुबह हुई जलवाफ़िगन[3]
ढल गया नूरके साँचेमें चमन आज मेरा
अपने गुलशनकी बहारों पै है अब राज मेरा
मैं तो यूँ ख़ुश था कि वह वक़्त नहीं है अब दूर
जब हर एक कास-ओ-साग़रसे[4] उठे मौजे-सरूर[5]
चेहरए-ख़ाक पै उतरे गुहर-ओ-सीमका नूर[6]
रंगे-गुलसे[7] हो शराबोर जबीने-मज़दूर[8]
देर ही क्या है कली दिलकी खिली जाती है
ख़ुद गले ख़्वाबके ताबीर[9] मिली जाती है
मैं तो यूँ ख़ुश था कि फूलोंकी गुँधेगी हैकल[10]
चाँदनी ख़ाक पै डालेगी रुपहला आँचल
मौजके पाँवमें मोतीकी बजेगी छागल[11]
लबे-जू[12] नर्म हवा आके जलायेगी कमल
जाल ज़रतार शुआओंका[13] बुना था मैंने
कितनी हँसती हुई किरनोंको चुना था मैंने

---

[1]ग्रहण [2]अंचल [3]जलवा दिखाने लगी [4]कटोरे और प्याले [5]सुरूरकी लहर [6]मोती और चाँदीकी चमक [7]फूलके रंग [8]मज़दूरका माथा [9]स्वप्न फल [10]फूलोंका हार [11]पायल [12]तालाबके किनारे [13]सुनहरी किरन

मैं तो यूँ खुश था कि अब गूँज उठेंगे वह साज़
फैल जायेगी फ़िज़ाओंमें अमलकी[1] आवाज़
ज़र्रे-ज़र्रेमें समा जायेगा ज़ौक़े-परवाज़[2]
ज़िन्दगी अपनी अदाओं पै करेगी खुद नाज़
एक लय सीना-ए-आलममें[3] मचल जायेगी
आजसे वक़्तकी रफ़्तार[4] बदल जायेगी

न सही आज, हरेक ज़ुल्फ़ सँवर जायगी कल
आज रंगत है जो फूलोंकी निखर जायगी कल
नब्ज़ ख़ाशाककी[5] गुलशनमें उभर जायगी कल
मौज गंगाकी[6] हिमालयसे गुज़र जायगी कल
अपना हर रंग धनक[7] ख़ाक पै बरसा देगी
कल ज़मीं हिन्दकी[8] ख़ुर्शीदको[9] शर्मा देगी

क्या ख़बर थी कि नज़र खुद है नज़ारोंका[10] तिलिस्म
रातकी रात है यह चाँद सितारोंका तिलिस्म
ये बरसते हुए मोती हैं शरारोंका[11] तिलिस्म
यूँ ख़िज़ाँ[12] छिपके रचायेगी बहारोंका तिलिस्म
टूट जायेगा कोई दममें ये अफ़सूने-बहार[13]
नोके-हर ख़ारसे[14] टपकेगा अभी ख़ूने-बहार[15]

हाथ लगते ही तो रंगे-गुले-तर[16] छूट गया
हार गुँधनेभी न पाया था अभी, टूट गया

---

[1]क्रिया, कार्य [2]उड़नेका चाव, इच्छा, रुचि [3]दुनियाकी छाती [4]चाल, गति [5]सूखे तिनकों पत्तोंकी नाड़ी [6]गंगाकी लहर, धारा [7]इन्द्रधनुष [8]भारत-भूमि [9]सूर्य [10]दृश्यों [11]चिनगारियों [12]पतझड़, हेमन्त [13]बसन्तका जादू [14]प्रत्येक काँटेकी नोक [15]बहारका खून [16]गीले फूलका रंग

जाम लब[१] तक भी न आया था अभी, फूट गया
मेरे ख़्वाबोंको नहीं, कोई मुझे लूट गया
मैंने जिस नक़्शमें[२] भर दी थी शफ़क़की[३] तनवीर[४]
वक़्तने सामने रख दी वहीं जलती तस्वीर

तुन्द शोलोंमें[५] ये लिपटी हुई अर्ज़े-पंजाब[६]
ज़र्रे-ज़र्रेसे उबलता हुआ बह्रे-ख़ूँ-नाब[७]
करवट कर्बसे[८] लेते हुए रावी व चनाब
ग़मके तूफ़ानसे सतलजके किनारे बेताब
ज़ुलमते-मर्गसे[९] छाया हुआ जेहलमपै हरास[१०]
कश्तियाँ आगकी सीनेपै लिये रौदे-ब्यास[११]

फिर से लुटता हुआ यह शाहजहाँका गुलज़ार[१२]
ख़ून रोती हुई यह लाल क़िलेकी दीवार
यह हमेशाको उजड़ता हुआ उर्दू बाज़ार[१३]
लाख जानोंको समेटे यह हुमायूँका मज़ार[१४]
कौन यह छोड़ चला ख़ित्त-ए-पाके-देहली[१५]
किसके क़दमोंसे लिपटती है ये ख़ाकेदेहली[१६]

अम्नसे बरहम-ओ-बरगश्ता[१७] ये तेग़ोंका[१८] मिज़ाज
रस्म-ओ-तहज़ीबकी[१९] होती हुई क़दरें ताराज[२०]

---

[१]प्याला, होंठों तक [२]मूर्ति [३]संध्याकी लालिमा [४]ज्योति [५]तेज़ शोलों, लपटों [६]पंजाबकी ज़मीन [७]रक्त-सागर [८]कष्टसे [९]मृत्युके अँधेरे [१०]आतंक [११]पंजाबकी एक नदी [१२]बाग़ [१३]जुमा मस्जिद दिल्लीके पास उर्दू पुस्तकोंकी दुकानोंका बाज़ार [१४]हुमायूँका मक़बरा जहाँ दंगेके समय पीड़ितोंने शरण ली थी [१५]दिल्लीकी पवित्र भूमि [१६]दिल्लीकी मिट्टी [१७]रुष्ट और बिगड़े हुए [१८]तलवारों [१९]सभ्यता [२०]रीत-रिवाज और सभ्यताके मूल्य नष्ट होते हुए

हिन्दीकी कोहना-रवायातकी[१] लुटती हुई लाज
ख़ाके-जमना[२] पै ये बेहोशसा होता हुआ ताज
एक सियाही रुख़े-ख़ुर्शीद[३] पै फिरनेके क़रीब
चाँद ख़ुद टूटके अफ़लाकसे[४] गिरनेके क़रीब

गिर गये ख़ाक पै थर्राके मिनारे[५] कितने
रह गए टूटके तूफ़ाँमें किनारे कितने
हो गये ग़र्क़[६] अँधेरेमें नज़ारे कितने
ख़ूनमें डूब गये चाँद सितारे कितने
तुन्द होता हुआ हर लमहा लहूका सैलाब[७]
जैसे शमशीरकी यह प्यास न होगी सेराब[८]

क्या ख़बर थी कि गिरफ़्तारे-फ़ुसूँ[९] होना है
सैदको[१०] और अभी सैदे-ज़बूँ[११] होना है
इस चमनको अभी आलूद-ए-ख़ूँ[१२] होना है
ग़मके शोलेको अभी और फ़ज़ूँ[१३] होना है
क्या ख़बर थी कि फ़क़त नाम है आज़ादीका
यह भी एक तर्ज़ है सैयादकी[१४] सैयादीका[१५]

क्या ख़बर थी कोई तदबीर न काम आयेगी
गर्दिशे-वक़्त[१६] लिये ख़ूनका जाम आयेगी
नूरकी मौज न हरगिज तहे-दाम[१७] आयेगी
सुब्ह होने भी न पायेगी कि शाम आयेगी

---

[१]पुरानी परम्पराओं [२]यमुना किनारेकी भूमि [३]सूर्यके चेहरे [४]आस्मानोंसे [५]मीनार [६]डूब [७]रक्तकी वाढ़ [८]तृप्त [९]जादूमें फँसना [१०]शिकार [११]शिकार, जिसकी दशा और भी विगड़ जाय [१२]रक्तमें लथपथ [१३]वढ़ना [१४]शिकारी [१५]शिकार [१६]समयकी गति [१७]जालके नीचे

किसको मालूम था यह ज़ह्र[1] भी पीना होगा
सर्द फिर हिन्दके माथेका पसीना होगा

कुछ हो, उम्मीदकी सीनेमें झलक आज भी है
दिलमें बुझते हुए शोलेकी लपक आज भी है
पर्द-ए-अब्रमें[2] हलकीसी धनक[3] आज भी है
फूल खिलनेकी हवाओंमें महक आज भी है
एक ज़रा सब्र कि गुलरंग घटा छायेगी
इस गुलिस्ताँमें कोई सुर्ख़ बहार आयेगी

[1]विष [2]बादलके पर्दे [3]इन्द्रधनुष

आज़ादीका दिन

मसऊद हुसैन

मैंने आज़ादीके दिन देखा था
एक सैलाबे-निशात[1]
बग्घियाँ, घोड़े, एक अंबोहे-कसीर[2]
कारें[3] फूलोंसे ढँकी
और बेकारोंके सीने पै उछलते हुए हार
आ गई जैसे बहार
क़ौमके ताज़ा निहाल[4]
हिन्द माताके सपूत, उसके लाल
आर्यावर्तके बेदार ख़याल[5]
जिनका दिल तंग था और जिस्म निढाल
जाममें अपने लिये शबनम थे
ज़र्रे[6] ज़्यादा थे सितारे कम थे
बीबियाँ चन्द उदास
जिनकी आँखोंमें न नश्शा[7] न ग़रूर
लज़्ज़ते-शौक़े-ग़ुलामीसे[8] जो अबतक थीं चूर
सरकशी[9] जिनके न सीनेमें, न दिलमें भरपूर
यौमे-आज़ादीने[10] बख़्शा[11] न जिन्हें जज़्बे-सरूर[12]

---

[1]ख़ुशीकी बाढ़ [2]भारी भीड़ [3]मोटर कारें [4]नये पौधे [5]जाग्रत विचार [6]कण [7]नशा [8]ग़ुलामीके शौक़का स्वाद, मज़ा [9]उद्दंडता [10]स्वतंत्रता दिवस [11]प्रदान किया [12]प्रसन्नताकी भावना

लाला-ओ गुलका ये पज़मुर्दा हजूम[1]
देखकर और भी दिल था मग़मूम[2]
ख़ाके-रह[3] आज भी बेदार न होने पाई
ऐसी आज़ादीका आया न समझमें मफ़हूम[4]
कैसा सैलाबे-निशात
एक भी मौज थी तेज़ ?
मिलके चलते थे मगर फिर भी थे सब कम-आमेज़[5]

मैंने आज़ादीके दिन देखा था
बुलबुले चन्द नमूदार[6] हुए
सितहपर रक़्स[7] किया
फूट गये
और दरियाको ख़बर तक न हुई

---

[1]लाल सफ़ेद फूलोंका उदास समूह [2]दुखी [3]राहकी धूल [4]अर्थ [5]कम मिलेजुले [6]प्रकट [7]नृत्य

तिशनगी

(प्यास)

नियाज़ हैदर

यह छलकता हुआ जाम
मैं इसे पी न सकूँगा साक़ी
आज़माई हुई शय[1]
ज़ायक़ा तल्ख़[2] नशा फीका है
चन्द लमहोंका[3] सरूर
जैसे एक माहेजबीं दोशीज़ा[4]
मुस्कराती हुई तेज़ीसे गुज़र जाती है
चन्द लमहोंका सरूर
तिशनगी साग़रे-मयसे[5] भी कहीं जाती है
तोड़ दे जाम-ओ-सबू[6]
तिशनगी नाम है जीनेका मुझे जीने दे
तिशनगी रोज़े-अज़लसे[7] है रफ़ीक़े-दिल-ओ-जाँ[8]
तिशनगी वजहे-तलब,[9] ज़ौक़े तलब,[10] हुस्ने तलब[11]
तिशनगीपर है ज़मानेका मदार[12]

---

[1]चीज़ [2]कटु [3]क्षणों [4]चाँदसी सुन्दर कुमारी [5]मदिराके प्याले [6]शराबका प्याला और सुराही [7]जिस दिन संसारकी रचना हुई [8]दिल और जानका साथी [9]माँगका कारण [10]माँगकी रुचि [11]मांगका सुन्दर ढंग [12]निर्भरता

रातें—जो आँखों ही आँखोंमें बसर होती हैं
रातें—जो पिछले पहर अश्कोंसे[1] तर होती हैं
सुबह होती है तो पी जाता है सूरज उनको
रात ढल जाती है शबनमके हसीं क़तरोंमें[2]
सुब्ह-दम[3]—फूलोंके लाखों साग़र[4]
मुन्तज़िर[5] होते हैं सूरजके लिये
यह सबूही[6] कि जिसे पीके दमक उठता है
रूए-ख़ुरशीदे-जहाँताब[7]—शुआएँ[8] जिसकी
नागिनें बनके हर एक बूँदको पी जाती हैं
बूँद—आँसूकी हो या शबनमकी
कुरए-अर्ज़[9] पै बाक़ी नहीं रहने पाती
ख़ुश्क[10] हो जाते हैं सब
गुले-तर[11]
दीदए-तर[12]
कोई ख़ुर्शीदकी सफ़्फ़ाक-तपिश[13] पी जाये
रातके चाँदका आलम देखो[14]
चाँद एक घूँटमें पी जाता है सूरजकी तपिश
शबनम-ओ-अश्क दुआ करते हैं[15]
कि ज़मानेमें सहर[16] हो न कभी
और यह सिलसिलए-तिशना-लबी[17]
ए ख़ुदा दह्‌रमें[18] जारी है न जाने कबसे

---

[1]आँसू [2]सुन्दर बूँदों [3]प्रातःकाल [4]प्याले [5]प्रतीक्षा करते हैं [6]सुबहकी शराब [7]संसारको जगमगानेवाले सूर्य [8]किरनें [9]पृथ्वीके गोले [10]शुष्क [11]गीले फूल [12]गीले नयन [13]निर्दय गर्मी [14]दशा [15]प्रार्थना [16]प्रभात [17]प्यासे होनेका सिलसिला [18]संसार

कैसे मानूँ लबे-लालोंके[1] हज़ारों बोसे[2]
रूहकी[3] प्यास बुझा सकते हैं
इश्क़ सेराब[4] नहीं हो सकता
यह छलकता हुआ जाम
मैं इसे पी न सकूँगा साक़ी

---

[1]लाल होंठ [2]चुम्बन [3]आत्मा [4]प्रेम तृप्त नहीं हो सकता

आज़ादीकी पूजा

'फ़िक्र' तौंसवी

राजमंदिरमें मुसलसल[1] बज रही हैं घंटियाँ
और बुलावेपर बुलावा दे रहे हैं—"आओ, आओ
"अपने ज़ौक़े-सजदा रेज़ीको[2] ज़रा तस्कीन दो
एक बुते-नौ[3]को तुम्हारी बन्दगीका[4] इम्तहाँ मक़सूद[5] है
तुम—कि सदियों तक रहे हैं बन्द जिनपर ये सुनहरे बाम-ओ-दर[6]
तुम—कि ज़ंजीरोंमें, आहोंमें रहे अब तक असीर[7]
आजसे आज़ाद हो
आज ये ज़रतार[8] चौखट और तिलाई-दायरे[9] तुमको न रोकेंगे कभी
—आओ आओ, फूल चुन लाओ, अगरबत्ती जलाओ
थालियाँ काँसीकी छनकाओ, जलाओ प्रेमके ख़ूँसे चिराग़
आरतीकी धुनमें गाओ—गाओ, गाओ, झूम जाओ
नाच उट्ठो, माथा रगड़ो, सर झुकाओ
और भक्तीके सुरीले मदभरे संगीत रसमें डूब जाओ"

(२)

मैं—कि था सदियोंसे ज़ंजीरोंमें, आहोंमें असीर[10]
और उस आज़ाद लमहेके[11] तसव्वुरसे[12] तड़प जाता था मैं

---

[1]लगातार [2]सिर झुकानेके शौक़ [3,4,5]एक नई प्रतिमा तुम्हारी पूजाकी परीक्षा लेना चाहती है [6]कोठे और दरवाजे [7]बन्दी [8]सुनहरी चौखट [9]सुनहरे दायरे रक्त [10]बन्दी [11]स्वतंत्र क्षण [12]कल्पना

आज क्यों उठते नहीं मेरे क़दम
आज मेरी रूहमें क्यों थरथरी मचती नहीं
आज क्यों इन घंटियोंकी लय पै मेरे कानकी ये बंसरी बजती नहीं
मेरी पेशानीमें[1] क्यों वह सिजद-ए-सीमाब-आसा[2] सो गया
आह ! यह मेरी नज़रके सामने कैसे अँधेरेसे उमंडकर आ गये
आह, मुझको थाम लो
लाओ, लाओ---वह मेरे फूलोंके गजरे क्या हुए
वह मेरी काँसीकी थाली, वह अगरबत्ती मेरी
वह कहाँ रक्खा है मेरे प्रेमके रसका चिराग़
आरतीके बोल मुझको याद थे---वह क्या हुए
मैं भला क्या लेके जाऊँ, देवताके सामने
मैं तहीदामन[3] फ़सुर्दा दिल,[4] अँधेरेका शिकार
पाँव पत्थर होंठ गूँगे आँख नम[5]
मैं भला क्या लेके जाऊँ देवताके सामने
आह मैं मजबूर हूँ
आह मैं मजबूर हूँ, ए राजमंदिरकी मुसलसल घंटियो
बन्द कर दो अपने ये पैहम[6] बुलावे---मैं बहुत मजबूर हूँ
मैं बहुत मजबूर हूँ

---

[1]माथे [2]पारेकी तरह तड़पनेवाला सिजदा, पूजाके लिये नतमस्तक होनेकी व्याकुल भावना [3]खाली दामन [4]बुझे हुए दिल [5]भीगी [6]बार-बार

१५ अगस्त : एक कहानी

रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

मुक्त छन्द

[१]

एक घराना छोटासा ह
मियाँ जवान और कमसिन बीवी
नन्हा मुन्नासा एक बच्चा
चाँदका टुकड़ा
एक बुढ़िया माँ, बड़ी लड़ाका
यह बुढ़िया थी बड़ी पटाख़ा
नवजवान ए० जी० आफ़िसमें
जूनियर क्लर्कीपर नौकर है
कमसिन बीबी मैट्रिक है
महिला विद्यालयमें मिसट्रेस है
दोनों मिलकर
एक सौ साठ कमा लेते हैं
तीस रुपया घरका किराया
बाक़ीमें
काले बाजारसे गीले कोयले, शकर किरकिरी
उजला गँदला पानीसा कुछ
जिसे दूध कहना पड़ता है
बढ़िया माँका पान तमाक

धोबी, मेहतर, बिजली, बीड़ी
साबुन तेल हजामत
कटे फटे जूतेकी मरम्मत
नन्हेके लिये सस्ते खिलौने
सेकंड हैंड लट्टू और बाजा
घटिया झिलमिल कपड़े लत्ते
जानसे बढ़कर जिनकी क़ीमत
फिर ऐसी सिलाई
जो नंगा कर दे
इनके अलावा और भी कितने फुटकर ख़र्चे
सुई तागा, कार्ड लिफ़ाफ़े
दियासलाई कितनी मँहगी
नमक मसाला
घटिया चायके दो एक पैकेट
चार पेट इस भाँति पालना
चार बदन इस भाँति ढाँकना
चार सरोंपर एक ठीकरी
ये हैं 'बजेट' इस पढ़ी लिखी फ़ैमिलीका

[२]

जब हिन्दुस्तान आज़ाद न था
यह परिवार इसी घरमें रहता था
यह घर हमेशासे
मशहूर लीडरोंके
चित्रोंसे सजा हुआ था
जब हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ

तो मोहल्ले भरमें
सबसे ज़्यादा रोशनी
रंग बिरंगकी सबसे ज़्यादा झंडियाँ
जय हिन्दकी सबसे ज़्यादा
सुन्दर पट्टिकाएँ
इसी घरमें सबको दिखाई पड़ीं
इसी ढाई कमरोंके घरमें
सबसे बड़ी दीवारपर
नेताजी
सुभाष बाबूकी फ़ौजी सैल्यूट
लेती हुई तस्वीर सजी थी
जिसके चारों ओर पड़े थे
रंग बिरंग चमकते हार
गांधीजी, नेहरूजी, पटेलजी, राजाजी
सबके चित्र लगे थे
बन्दनवारों और कुमकुमों
से यह घर हो रहा था जगमग जगमग
लेकिन यह थी सन् सैंतालिस
की पहली १५ अगस्त

[३]

इसके बाद
हर साल १५ अगस्तको
इस घरकी सजावटमें
झंडियोंकी गिनती सिकुड़ने लगी
कमसे कम हो चली

बिजलीके कुमकुमे
दो चार ही रह गये
जो दो घड़ी टिमटिमा कर
तोड़ देते थे दम
पट्टिकाओंपर
जयहिन्द मन्द पड़ने लगा
और नेताओंके चित्रोंके चारों ओर
हारोंका रंग भी फीका पड़ने लगा
रौशनीसे उदासी टपकने लगी
इस घरानेकी यह धारना है
कि १५ अगस्तको
जब आज़ादी आई
तो उसपर सरकारने कोई
कन्ट्रोल लगाया नहीं
इसलिये
यह आज़ादी सारीकी सारी
चोर बाज़ारमें 'होर्ड' कर ली गई
अब वहाँ
इसके मुँह माँगे मनमाने लगते हैं दाम
सस्ती आज़ादी महँगी हुई जाती है
बढ़ते जाते हैं दाम
माँग इस आज़ादीकी है ज्यादा बहुत
और सप्लाई कम
कामगारों किसानों ग़रीबों और कारीगरों
एम० ए० बी० ए० जो हैं पास
और लेखकों चित्रकारों कलाकारोंके

ये आज़ादी पल्ले नहीं पड़ सकी
थे सब
रह गये देखते रह गये ताकते
रह गये माँगते
सबके हिस्सेमें आज़ादी आई नहीं
सबको हिस्सा मिले तो बचेहीगा क्या
इसलिये
बड़ी सावधानीसे इसको
सहेजकर रख लिया है
कुछ बड़े सेठोंने जिनके हाथों सहेजी
गई है यह आज़ादीकी लक्ष्मी
जब समय आयगा
मनमें धीरज धरो
तब यह आज़ादी जनतामें बट जायेगी
सब्रसे काम लो
वक़्त आने तो दो
सबको हिस्सा मिलेगा इस आज़ादीमें

[४]

आज़ादीके बटवारेकी आश लगाये
मियाँ जवान और कमसिन बीबीका यह जोड़ा
यह पूरा घराना
जीवन ऋण भरता चला जा रहा है
और राष्ट्रीय झंडेके साये तले
दस दसके सोलह नोटोंके बूते
चूल्हे आग सुलगती रहेगी
ढाई कमरोंके घरसे

नवजवान ए० जी० आफ़िस
और ए० जी० आफ़िससे
ढाई कमरोंके घरके
आवागमनमें जुता रहेगा
कमसिन बीबी स्कूल रिसेसमें
नन्हेंको दूध पिलाने
हाँपती, काँपती, दौड़ती-भागती
आती रहेगी
आज़ादीके बटवारेकी आस लगाये
यह नवजवाँ एक दिन
अपनी जगह मुन्नेको सौंपकर चल बसेगा
और मुन्ना भी होकर जवान
देशके लीडरों
के चित्रोंसे कमरा सजाता रहेगा
झंडियों, पट्टिकाओं, हारों और कुमकुमों
से १५ अगस्त मनाता रहेगा
नस्लन बाद नस्लन
पीढ़ी-व-पीढ़ी
यह घराना १५ अगस्त मनाता रहेगा
और एक सौ साठ रुपये
गीले कोयलों, शकर किरकिरी, गीले अनाज
सड़े कपड़ोंके भेंट चढ़ते रहेंगे
आज़ादीके बटवारेकी आश
लगाये
बोलो सब नेताओंकी जै
बोलो भाई राम राजकी जै

३

साम्प्रदायिक हत्याकांड

जो असली या नक़ली, सच्ची या झूठी, सही या ग़लत आज़ादी हमें अगस्त १९४७ में मिली उसकी वड़ी महँगी क़ीमत हमको देनी पड़ी। वह क़ीमत हम अव तक दिये जा रहे हैं और न जाने कव तक दिये जायें। चालीस करोड़की आवादीमें लगभग दो करोड़ प्राणी झुलस गये, कट गये, घायल हो गये, उखड़ गये और उजड़ गये और अव तक आज़ादीके नामपर रो रहे हैं और तड़प रहे हैं। हिन्दुस्तानके इतिहासमें इतना वड़ा हत्याकांड न आदिकालमें हुआ था न महाभारतके समय हुआ था न प्राचीन कालमें सिकन्दर या तैमूरके आक्रमणोंमें हुआ था। न मुसलमानोंके भारत आते समय हुआ था न अंग्रेज़ी राज के स्थापित होने में और न सन् १८५७ ई० के ग़दरमें हुआ था। इतने वड़े दुखान्त नाटकके होनेपर यह असम्भव था कि उर्दू साहित्य,जो देशकी छाती और कोखमें पला है वह तड़प न उठे। इस हत्याकांडकी कराह, इसकी ज्वाला, इसकी चिनगारियाँ और इसका धुआँ वहुत सी उर्दू कविताओं, उपन्यासों, नाटकों और कहानियोंमें जीते जागते रूपमें दिखाये गये हैं।

इस दुख भरे विषयपर जो कविताएँ इस संकलनमें दी गई हैं उनसे इसका साफ़-साफ़ अन्दाज़ा हो जाता है कि देशके दुख और मुसीवतको उर्दू कवियोंने किस तरह अपनाया है और उनकी कल्पनाने किस तरह उसे चित्रित किया है। इन कविताओंमें जलन है, आँसू हैं, सिसकियाँ हैं, हिचकियाँ हैं, असहनीय तड़प है और ऐसी करुणा है जिसकी मिसाल काव्य साहित्यमें शायद ही मिले। हमारे शायरोंका स्वर, उनकी आवाज़ें इन

कविताओंमें लहू लोहान हो गई हैं और उनके छन्दोंकी रगें पीड़ासे कम्पित नज़र आती हैं। रस्मी तौरपर ग़मका इज़हार इन कविताओंमें नहीं किया गया है न छन्द बद्ध पत्रकारी की गई है न सस्ता प्रोपेगंडा किया गया है। अगर हमारी आज़ादीकी लड़ाई सच्चे अर्थोंमें क्रान्तिआत्मक होती है, अगर वह सचमुच किसान मज़दूर राज या जनता राजकी लड़ाई होती, अगर साम्यवादके उज्वल आदर्शोंसे प्रेरित और प्रकाशित हमारा स्वतंत्रता संग्राम होता तो शायद न देशका बटवारा होता, न लगभग एक करोड़ भारत माताके लाल इस बेदर्दीसे बलिदान किये जाते। क्रान्तिआत्मक न होनेके कारण हमारी आज़ादीकी लड़ाई अपने भाइयों और बहनोंके ख़ूनमें नहा उठी और संसारके अनेक हत्याकांडोंसे भी कहीं अधिक हिंसात्मक सिद्ध हुई। सत्य और अहिंसाके नारे हमें बर्बरता, पाशविकता और राक्षसी संस्कारोंसे बचा नहीं सके न बचा सकते थे।

इन कविताओंमें भी कहीं एक सुरापन नहीं मिलेगा। एक कवि दूसरे कविके ख़यालातको दोहराता हुआ नहीं सुनाई देगा। हर कवि इस हत्याकांडके रक्त सागरमें डूब गया है और मौलिक कल्पनाके आधार-पर सत्यसे प्रेरित होकर, यथार्थका सहारा लेकर अपनी कविता हमें सुनाता है। कितना निर्मूल था उन लोगोंका विचार जो उर्दू कविताको क़ोरमा पुलाव साहित्य, नवाबोंका साहित्य, दरबारोंका साहित्य, जागीरदारोंका साहित्य, भोगविलासका साहित्य या हिन्दुस्तानसे प्रेम न करनेवाले मुसल-मानोंका साहित्य बताते रहे हैं। कितने रुद्धकंठसे उन उर्दू कवियोंने हमारे इतिहासकी इस सबसे बड़ी दुर्घटनाको बयान किया है। इन कविताओंमें कवियोंके स्वर कितने हृदयस्पर्शी हैं, इसका अन्दाज़ा हिन्दीके पाठक खुद लगाएँ और इस विषयपर भारतकी दूसरी भाषाओंमें कविताएँ ढूँढनेकी कोशिश करें। इन कविताओंके करुण स्वरके बारेमें इतना ही कहा जा सकता है कि :—

गला रुँधा हुआ आवाज़ थरथराई हुई

सूची

पृष्ठ

१. अज़मते-आदम--अब्दुलमजीद भट्टी ५९
२. अकेली--बलराज कोमल ६२
३. आज--'साहिर' लुधियानवी ६४
४. आँसुओंके चिराग़--सरदार जाफ़री ६७
५. इन्तक़ाम--ग़ुलाम रब्बानी 'तावाँ' ७२

अज़मते-आदम

(मानवकी महानता)

अब्दुल मजीद भट्टी

हम तुम्हें क़त्ल ही कर देंगे मगर आजकी रात
मत कहो बेटी, बहू और बहन
तुम तो हो एक हसीं मशग़लए-ऐश-ओ-निशात[1]
आज तक देखी न थी जिसकी झलक
गोरा गोरासा भरा जिस्मे-गुदाज़[2]
जिसने अरमानोंमें एक आग लगा रक्खी है

सिसकियाँ बन्द करो और बिलखना छोड़ो
अपने वावैलासे[3] अब और मुनग़्ग़ज़[4] न करो
छोड़ दो अपने अज़ीज़ोंका[5] ख़याल
जिनमें नामूसपै[6] कट मरनेकी हिम्मत ही न थी
भाग निकले हैं जो जीनेकी तमन्ना लेकर
भूल जाओ कि कभी उनसे भी निसबत[7] थी तुम्हें
सूरमाओंसे मिलो, आनकी अज़मत[8] समझो
महफ़िले-ऐशको[9] हाँ और मुनग़्ग़ज़ न करो

---

[1]भोगविलासका साधन [2]नर्म शरीर [3]रुदन और चीत्कार [4]बेमज़ा [5]सगे सम्बन्धियों [6]लाज, इज़्ज़त [7]सम्बन्ध [8]महानता [9]ऐशकी महफ़िल

यह नवाज़िश[1] नहीं कुछ कम कि चुना है हमने
तुम्हें इस महफ़िले-इशरतको[2] सजानेके लिये
दो घड़ी रंग जमानेके लिये
पोंछ लो आँसू फिरा लो आँखें
लाश बच्चेकी नहीं, यह तो है ज़िल्लतका[3] निशाँ
कैसे इन्सानोंसे निसबत थी तुम्हें
हमने तो रह्मसे[4] ख़ामोश किया है इसको
वरना हम यह भी तो कर सकते थे
हाथ और पैर क़लम करके इसे तड़पाते
एक-एक बोटी उड़ाते तुम्हें दुख पहुँचाते
तुम तो ख़ुशबख़्त[5] हो आया नहीं यों तैश[6] हमें
यह तो मंज़ूर नहीं था ख़लले-ऐश[7] हमें

जामपर जाम उठाती हुई दो साथ अभी
छोड़ दो अब ये तड़प और फड़क
इस तरह रुकते भी हैं बढ़ते हुए हाथ कभी
आजकी रात फ़क़त आजकी रात
एक पलका भी तअम्मुल[8] हमें मंज़ूर नहीं
वरना कुछ दूर नहीं
अपनी संगतके[9] लिये पास बुला लें तुमको
सामनें छतसे जो लटकी हैं तुम्हारी बहनें
छातियाँ जिनकी हैं पैरोंमें पड़ी
और जिस्मोंमें खुबे हैं भाले

---

[1] कृपा [2] विलास-सभा [3] अपमान [4] दया [5] भाग्यवान
[6] क्रोध [7] ऐशमें खलल डालना [8] देर [9] साथ

अपने बढ़ते हुए हाथोंको झटकनेकी सज़ा
ये दहकते हुए भाले भी हैं अंगारे भी
और रस्सीकी जगह ये हैं तुम्हारी ज़ुल्फ़ें[1]

आजकी रात मगर आजकी रात
एक पलका भी तअम्मुल हमें मंज़ूर नहीं
मुस्कराओ बढ़ो और जाम उठाओ
शामे-ग़म[2] कैसी है अब सुब्हे-मसर्रत[3] बन जाओ
हम तुम्हें क़त्ल ही कर देंगे तुम्हारी खातिर
ताकि नामर्द-ओ-ज़लील और कमीने वो अज़ीज़
भाग निकले हैं जो जीनेकी तमन्ना लेकर
देख पाएँ तो न यह कहके तुम्हें शर्माएँ
अपने हाँ बेटी बहू कोई न थी कोई न थी
हाँ जो इस नामकी लड़की थी वो मरखप भी गई

और तुम्हारे वो अज़ीज़
उनकी इज़्ज़त भी रहे आन भी बाक़ी रह जाय
जिनके हिस्सेमें न ग़ैरत[4] है न मौत
हम तुम्हें क़त्ल ही कर देंगे मगर आजकी रात

---

[1]केश [2]दुखकी संध्या [3]सुखका प्रभात [4]लाज, शर्म

अकेली

वलराज कोमल

अजनबी[1] अपने क़दमोंको रोको ज़रा
जानती हूँ तुम्हारे लिये ग़ैर हूँ
फिर भी ठहरो ज़रा
सुनते जाओ ये अश्कों भरी दास्ताँ
साथ लेते चलो यह मुजस्सम-फ़ुग़ाँ[2]

आज दुनियामें मेरा कोई भी नहीं
मेरी अम्मी नहीं
मेरे अब्बा नहीं
मेरी आपा नहीं
मेरा नन्हासा मासूम भैया नहीं
मेरी इस्मतकी[3] मग़रूर[4] किरनें नहीं
वह घरौंदा नहीं जिसके साये तले
लोरियोंके तरन्नुमको सुनती रही
फूल चुनती रही
गीत गाती रही
मुस्कराती रही
आज कुछ भी नहीं
आज कुछ भी नहीं

---

[1]अपरिचित [2]साकार फ़रियाद [3]सतीत्व [4]अभिमानी

मेरी नज़रोंके सहमे हुए आइने
मेरी अम्मीके अब्बाके आपाके और मेरे नन्हेसे मासूम भैयाके ख़ूँसे हैं दहशतज़दा[1]
आज मेरी निगाहोंकी वीरानियाँ चन्द मजरूह[2] यादोंसे आबाद हैं
आज मेरी उमंगोंके सूखे कँवल मेरे अश्कोंके[3] पानीसे शादाब[4] हैं
आज मेरी तड़पती हुई सिसकियाँ एक साज़ेशिकस्ताकी[5] फ़रियाद हैं
और कुछ भी नहीं
भूख मिटती नहीं
तन पे कपड़ा नहीं
आस मादूम[6] है
आज दुनियामें मेरा कोई भी नहीं
आज दुनियामें मेरा कोई भी नहीं

अजनबी अपने क़दमोंको रोको ज़रा
सुनते जाओ ये अश्कों भरी दास्ताँ
साथ लेते चलो ये मुजस्समफ़ुग़ाँ
मेरी अम्मी बनो
मेरे अब्बा बनो
मेरी आपा बनो
मेरे नन्हेसे मासूम भैया बनो
मेरी इस्मतकी मग़रूर किरनें बनो
मेरे कुछ तो बनो
मेरे कुछ तो बनो
मेरे कुछ तो बनो

---

[1]सहमे हुए, डरे हुए [2]घायल [3]आँसुओं [4]भरे हुए [5]टूटे साज़ [6]लोप

आज

'साहिर' लुधियानवी

साथियो मैंने बरसों तुम्हारे लिये
चाँद, तारों, बहारोंके सपने बुने
हुस्न और इश्क़के गीत गाता रहा
आरज़ूओंके ऐवाँ[1] सजाता रहा
मैं तुम्हारा मुग़न्नी[2] तुम्हारे लिये
जब भी आया, नये गीत लाता रहा

आज लेकिन मेरे दामने-चाकमें
गर्दे-राहे-सफ़रके[3] सिवा कुछ नहीं
मेरे बरबतके[4] सीनेमें नग़मोंका[5] दम घुट गया है
तानें चीख़ोंके अंबारमें[6] दब गई हैं
और गीतोंके सुर हिचकियाँ बन गये हैं

मैं तुम्हारा मुग़न्नी हूँ नग़मा नहीं हूँ
और नग़मेकी तक़ख़लीका[7] साज़-ओ-सामाँ
आज तुमने जलाकर भसम कर दिया है
और मैं अपना टूटा हुआ साज़ थामे
सर्द लाशोंके अंबारको तक रहा हूँ
मेरे चारों तरफ़ मौतकी वहशतें[8] नाचती हैं

---

[1]महल [2]गायक [3]यात्राके मार्गकी धूल [4]एक बाजा
[5]गीतों [6]ढेर, बोझ [7]रचना [8]भय, घबराहट

और इन्साँकी हैवानियत जाग उठी है
वर्बरीयतके खूँख़्वार इफ़रीत[1]
अपने नापाक जबड़ोंको खोले
ख़ून पी-पीके गुर्रा रहे हैं
बच्चे माओंकी गोदोंमें सहमे हुए हैं
बहनें बेहुरमतीके[2] तसव्वुरसे[3] अफ़्सुरदा[4] हैं—भाई मजबूर हैं
हर तरफ़ शोरे-आह-ओ-बुका[5] है
और मैं इस तबाहीके तूफ़ानमें
आग और खूँके हैजानमें[6]
सरनुगूँ[7] और शिकस्ता मकानोंके मलबेसे पुर[8] रास्तोंपर
अपने नग़मोंकी झोली पसारे
दर-ब-दर[9] फिर रहा हूँ
मुझको अम्न और तहज़ीब की भीख दो
मेरे गीतोंकी लय, मेरे सुर, मेरी नय[10]
मेरे मजरूह होंठोंको फिर सौंप दो
साथियो ! मैंने बरसों तुम्हारे लिये
इन्क़लाब और बग़ावतके[11] नग़मे अलापे
अजनबी राजके ज़ुल्मकी छाँवमें
सरफ़रोशीके ख़्वाबीदा-जज़्बे[12] उभारे
और उस सुब्हकी राह देखी
जिसमें इस मुल्ककी रूह आज़ाद हो
आज ज़ंजीरे-महकूमियत[13] कट चुकी है
और इस मुल्कके बह्र-ओ-बर,[14] बाम-ओ-दर[15]

---

[1]राक्षस [2]लाज लुटने [3]कल्पना [4]उदास [5]हाहाकार [6]उथल पुथल [7]सिर झुकाए [8]मलबेसे भरे [9]दर-दर [10]बाँसुरी [11]विद्रोह [12]सुप्त भावनाएँ [13]पराधीनताकी ज़ंजीरें [14]सागर और पृथ्वी [15]कोठे और द्वार

अजनबी क़ौमके ज़ुलमत-अफ़शाँ फरहरे[1]की मनहूस छाओंसे आज़ाद हैं
खेत सोना उगलनेको बेताब हैं
वादियाँ[2] लहलहानेको बेचैन हैं
कोहसारोंके[3] सीनेमें हैजान[4] है
संग[5] और ख़िश्त[6] बेख़्वाब[7]-ओ-बेदार[8] हैं
उनकी आँखोंमें तामीरके[9] ख़्वाब हैं
उनके ख़्वाबोंको तकमीलका[10] रूप दो
मुल्ककी वादियाँ, घाटियाँ, खेतियाँ
औरतें बच्चियाँ
हाथ फैलाये ख़ैरातकी[11] मुन्तज़िर हैं
उनको अम्न और तहज़ीबकी भीख दो
माओंको उनके होंठोंकी शादाबियाँ
नन्हे बच्चोंको उनकी ख़ुशी बख़्श दो
मुझको मेरा हुनर मेरी लय बख़्श दो
मेरे सुर बख़्श दो मेरी नय बख़्श दो
और मैं इस भिखारी फ़िज़ामें
अपने नग़मोंकी झोली पसारे
दर-ब-दर फिर रहा हूँ
मुझको फिर मेरा खोया हुआ साज़ दो
मैं तुम्हारा मुग़न्नी तुम्हारे लिये
जब भी आया नया गीत लाता रहूँगा

---

[1]अंधकार फैलानेवाले झंडे [2]घाटियाँ [3]पहाड़ों [4]हलचल, परेशानी [5]पत्थर [6]ईंट [7]अनिद्रित [8]जाग्रत [9]निर्माण [10]पूर्णता [11]भिक्षा दान

आँसुओं के चिराग़

(हिन्दुस्तानके शरणार्थियों और पाकिस्तानके महाजरीन[1] के नाम)

सरदार जाफ़री

(१)

मैं सुन रहा हूँ
वो सिसकियाँ जो ज़मींके सीनेमें दाग़-ग़म[2] बनके रह गई हैं
वो हिचकियाँ जिनके सख़्त फन्दे
रबाब[3]-ओ-बरबतकी[4] गरदनोंमें पड़े हुए हैं
वो आहें जो ज़ालिमोंके डरसे
दिलोंमें महबूस[5] हो गई हैं
वो चीख़ें जो मादरे-वतनकी
जराहतोंके[6] हजूममें[7] जाके खो गई हैं
वो गीत जो नौहा-ओ-फ़ुग़ाँके[8]
सियाहख़ानोंमें[9] छिप गये हैं
वो हमहमे[10] जो फ़रेबकारीके[11] सब्ज़ बाग़ोंमें सो गये हैं
वो साज़िशें जिनका ज़ह्र काम-ओ-दहनको[12] बेकार कर चुका है
वो ओहदे जिनका नुकीला नशतर रगोंके अन्दर उतर चुका है
वो अह्द-ओ-पैमाँ[13]

---

[1]शरणार्थी [2]ग़मके दाग़ [3]सितारके समान बाजा [4]एक बाजा [5]बन्द हो गई हैं [6]घावों [7]समूह [8]रोने चिल्लाने [9]अँधेरे स्थानों [10]उमंगें [11]धोखेबाज़ी [12]जीभ और मुंह [13]वायदे, वचन

कि जिनके हरफ़ोंसे[1] वक़्त-ओ-तारीख़की जबींपर[2]
सियाह धब्बे पड़े हुए हैं

(२)

ये कौन ज़ालिम है जिसने क़ानूनके दहकते हुए क़लमसे
वतनके सीने पे ख़ूने-नाहक़की एक गहरी लकीर खींची
ये क्या हुआ एक दमसे महफ़िलमें सारे साज़ोंके राग बदले
क़दामतोंके[3] खँडरमें माज़ीके[4] भूत दीवानावार[5] नाचे
बहारके सुर्ख़ आँचलोंसे ख़िज़ाँके बीमार रंग बरसे
सहरकी रंगीन वादियोंमें सियह बगूले मचल रहे हैं
हज़ारों सूरज निकल निकलकर गहनके साँचेमें ढल रहे हैं
हरे भरे खेत गर्म शोलोंके पैरहनमें[6] दहक रहे हैं
शगूफ़े लिपटे हुए धुएँके सियह कफ़नमें सुलग रहे हैं
कटे हुए हाथ अपनी बाँहोंसे राह रोके खड़े हुए हैं
फटे हुए आँचलोंके टुकड़ोंमें इस्मतोंकी[7] जवान लाशें
छिदी हुई धर्म और मज़हबके ख़ंजरोंमें दिलोंकी क़ाशें[8]
कटी हुई छातियोंकी नस-नससे दूध ख़ूँ बनके रिस रहा है

(३)

ये रात है किस क़दर भयानक
ये ख़्वाब है किस क़दर परीशाँ
हज़ारों सहमी हुई निगाहें
बिलखती आँखें, सिसकती पलकें
अँधेरी शबमें

---

[1]अक्षरों [2]माथेपर [3]प्राचीनता [4]अतीत [5]पागलोंकी भाँति
[6]लिबास [7]सतीत्व [8]फाँकें

करोड़ों अश्कोंके झिलमिलाते चिराग़ लेकर
हजूममें क़ातिलोंके इन्साफ़के फ़रिश्तेको ढूँढती हैं
मगर मैं यह पूछता हूँ तुमसे
शरीफ़ बहनो
ग़यूर[1] माँओ
तुम्हारी आँखोंमें बिजलियोंकी चमकके बदले
ये आँसुओंका वफ़ूर[2] क्यों है
मैं जानता हूँ
तुम्हारे सीनेमें दिलमें ज़ख्मोंमें कितने आँसू भरे हुए हैं
तुम उनकी बूँदोंसे आस्मान-ओ-ज़मींका दामन भिगो चुकी हो
तुम इस तलातुममें[3] विन्ध्या और हिमालियाको डुबो चुकी हो
मगर ये ख़ूँ नाबा-बार[4] आँखोंकी बहती गंगा
ज़मींपे फैले हुए लहूके सियाह धब्बे न धो सकेगी
ये झिलमिलाते हुए दिये हैं
जो ज़ुल्मके झक्कड़ों[5] मुसीबतकी आँधियोंमें न जल सकेंगे
तुम उनकी मद्धिम-सी रोशनीमें
हसीन[6] इन्साफ़के फ़रिश्तेको कब तलक ढूँढती रहोगी
कि वो भी इस मुस्तक़िल वतनमें
तुम्हारी ही तरह ज़ख्मख़ुर्दा[7] है और आवारा फिर रहा है

(४)

ये किससे फ़रियाद कर रही हो
ये किसको आवाज़ दे रही हो

---

[1]स्वाभिमानी [2]वेग [3]तूफ़ान [4]रक्त वरसाती [5]तीव्र झोंकों [6]सुन्दर [7]घाव खाये हुए

तुम अपने ज़ख़्मोंकी राखियाँ लेके किसकी महफ़िलमें जा रही हो
तुम्हारे ये राहबर नहीं हैं
तुम्हारे ये दादगर[1] नहीं हैं
ये काठकी पुतलियाँ हैं जिनको
सियासी[2] पर्दोंके पीछे बैठे हुए मदारी
सफ़ेद रेशमकी डोरियोंपर नचा रहे हैं
ये साम्राजी बिसाते-शतरंजके पियादे हैं जिनको शातिर[3]
हज़ार चालोंसे शाह-ओ-फ़रज़ीं[4] बना-बनाकर चला रहे हैं
यही तो हैं वो जिन्होंने क़ानूनके दहकते हुए क़लमसे
वतनके सीने पै ख़ूने-नाहक़की एक गहरी लकीर खींची
इन्होंने महफ़िलके साज़ बदले
इन्होंने साज़ोंके राग बदले
यही तो हैं जो तुम्हारे अश्कोंसे अपने मोती बना रहे हैं
तुम्हारी इसमत,[5] तुम्हारी इज़्ज़त,[6] तुम्हारी ग़ैरत[7] चुरा रहे हैं
ये क़स्र[8] वो है कि जिसके दीवार-ओ-दरमें सदियोंकी लानतें बसके रह गई हैं
ये ताज वो है कि जिसकी ज़ौ में
वतनके चेहरेका रंग तहलील[9] हो गया है
ये तख़्त वो है कि जिसके पाये
हमारे दिलमें गड़े हुए हैं
ये फ़र्श वो है जहाँ फ़िरंगीके भूत दिन रात चल रहे हैं
यहाँ शहीदोंका ख़ूँ छलकता है मौजे-रंगे-शराब[10] बनकर
यहाँ उमीदोंके फूल और आरज़ूके ग़ुंचे[11] न खिल सकेंगे

---

[1]दाद फ़रियाद सुननेवाले [2]राजनैतिक [3]शतरंजके खिलाड़ी, दूसरा अर्थ, चालाक [4]शतरंजके बादशाह और वज़ीर [5]सतीत्व [6]लाज [7]स्वाभिमान [8]महल [9]घुल-मिल [10]शराबके रंगकी लहर, रंगीन लहर [11]कली

यहाँ तुम्हें अद्ल[1] और इन्साफ़के फ़रिश्ते न मिल सकेंगे
ये जालिमोंका महल है ये क़ातिलोंका मसकन[2] है ये लुटेरोंकी अंजुमन[3] है

(५)

शरीफ़ माओ ग़यूर बहनो
तुम्हारे भाई
तुम्हारे बेटे
तुम्हारी फ़रियाद सुन रहे हैं
मिलोंसे खेतोंसे और कानोंसे[4] तुमको आवाज़ दे रहे हैं
वो देखो उनके जवान सीनोंमें अद्ल-ओ-इन्साफ़की ज्वाला भड़क रही है
निगहमें बिजली चमक रही है
अँधेरी शबसे परे शफ़क़की[5] सुनहरी मीना[6] छलक रही है

वो अपने सीनेका सोज़[7] लाएँ
मैं अपने नग़मोंकी आग लाऊँ
तुम अपनी आहोंकी मिशअलोंको[8] जलाके निकलो
हम अपनी रूहोंकी ताबनाकीसे[9] इस अँधेरेको फूँक देंगे
कि जिसके मनहूस दामनोंमें
गुनाह परवान[10] चढ़ रहे हैं

---

[1]न्याय [2]निवास स्थान [3]संस्था [4]खानों, खदानों [5]प्रातःकालकी लालिमा [6]शराबकी बोतल, सुराही [7]जलन [8]मशालों [9]चमक-दमक [10]पल रहे हैं, पोषित हो रहे हैं

इन्तक़ाम

(प्रतिशोध)

गुलाम रब्बानी 'तावाँ'

मैं किससे इन्तक़ाम[1] लूँ
ये सच है बेकसोंके ख़ूँसे सुर्ख़ हो गई ज़मीं
मुसीबतोंकी दास्ताँ, मैं सुन चुका हूँ हमनशीं[2]
मैं सुन चुका हूँ किस तरह बुज़ुर्ग[3]-ओ-नातवान[4] भी
बिलखते शीर-ख़्वार[5] भी, फ़सुर्दा नौजवान भी
अजलके[6] घाट एक-एक करके सब उतर गये
घरोंकी शाहज़ादियाँ—हरीमे-नाज़की[7] मकीं
(जो इफ़्फ़तें[8] गँवा चुकीं—जो इसमतें[9] लुटा चुकीं)
भटक रही हैं दर-ब-दर
बरहना पा[10]—बरहना सर[11]
मैं सुन चुका हूँ हमनशीं ये दास्ताने दिलख़राश[12]
मगर किसे मैं दोष दूँ
मैं किससे इन्तक़ाम लूँ

तबाहियोंकी गोदके पले हुए किसानसे
कि जंगे-इन्क़लाबके सिपाही नौजवानसे

---

[1]प्रतिशोध [2]साथी [3]बूढ़े [4]निर्बल, निरीह [5]दूध पीते बच्चे [6]मौत [7]अन्त:पुरकी रहनेवाली [8]लाज [9]सतीत्व [10]नंगे पाँव [11]नंगे सिर [12]दिल खुरच देनेवाली

ग़रीब-ओ-नातवानसे
नहीं, नहीं
ये सब मेरे अज़ीज़ हैं--ये सब मुझे अज़ीज़ हैं
मैं किससे इन्तक़ाम लूँ
बता किसे मैं दोष दूँ
चमनमें किसने आग दी है मौसमे-बहारमें
एक अजनबी सफ़ेद हाथ--आतशीन-ओ-शोलाबार[1]
फ़िज़ाए-तीरए-वतनमें[2] रक़्स[3] कर रहा है आज

---

[1]आग और शोले, बरसाता हुआ [2]देशके अंधकारपूर्ण वायुमंडल
[3]नाच

४

विश्व शान्ति

विश्व-शान्तिके विषयपर उर्दू साहित्यकारोंकी कुछ रचनाएँ विदेशी भाषाओंमें अनुवादित हो चुकी हैं। जो कविताएँ अम्न और जंगपर इस संग्रह-में मिलेंगी वह अत्यन्त सफल रचनाएँ हैं। प्रगति-शील साहित्यने इतना ही नहीं किया कि हमारे कलाकारोंको अनेक ऐसे महत्वपूर्ण विषय और शीर्षक दे दिये जिन्हें पुराने साहित्यकारोंने छुआ तक नहीं था बल्कि एक-एक विषय और शीर्षकके इतने पहलू उनकी कल्पनाओंमें उजागर कर दिये कि एक ही विषयपर अनेक कविताएँ नई झलकियाँ दिखा रही हैं। इन कविताओंको धीरे-धीरे पढ़िये, संगीत और भावके मर्मों और रहस्योंको अपनी आवाज़में ढालिये, भाषा और शैलीके चमत्कारोंपर नज़र डालिये और इस बातका अन्दाज़ा लगाइये कि आजकी उर्दू शायरी कहाँसे कहाँ पहुँच रही है।

विश्व-शान्तिके पक्ष और जंगके विरोधमें इन कविताओंका अभिप्राय यह नहीं है कि दुनियामें जंग छिड़े और हम चीन और रूसकी ओरसे लड़ें या आंग्ल-अमरीकाकी ओरसे। हम क्या करें, यह बादकी बात है। इन कविताओंकी ललकार यह है कि दुनियामें जंग छिड़ने ही न पाये।

सूची

	पृष्ठ
१. नीला परचम--'वामिक़' जौनपूरी	७६
२. खोलो नीला परचम--राही मासूम रज़ा	८५
३. सवाल यह है जवाव यह है--राही मासूम रज़ा	८७
४. वाबुल--राही मासूम रज़ा	९२
५. अम्न--हसन आराफ़ी	९५
६. शकुन्तलासे--'तेग़' इलाहावादी	९८
७. जंग--मख़दूम मुहीउद्दीन	१००
८. सिपाही--मखदूम मुहीउद्दीन	१०२

नीला परचम

'वामिक़' जौनपूरी

हम इसलिये अम्न चाहते हैं
कि आज ज़ुलमाते-जंगमें[1] आबे-ज़िन्दगी[2] मिल नहीं रहा है
और अम्न ही ख़िज्रे-ज़िन्दगी[3] है
हयात बेकैफ़[4] हो रही है
कि टैंककी घनघनाहटोंमें हमारा संगीत खो गया है

हम इसलिये अम्न चाहते हैं
कि जंगके भूत कोरियाकी हदोंसे बाहर निकल न आएँ
बुझा दो इस आगको वहींपर
दो बारा फिर जी उठे न हिटलर
कि जिसके नापाक सायेमें आके जंगबाज़ अपने ज़ुल्म ढाएँ

हम इसलिये अम्न चाहते हैं
कि नौए-इन्साँकी[5] शहरगोंमें[6] ये ज़ह्र पैवस्त[7] हो न जाए
जो साज़िशोंका बने सहारा
हमारे होंठों पै है ये नारा
ये नारए-हुर्रियत[8] सिमटकर गरजमें तोपोंकी खो न जाए

---

[1]युद्धके काले सागर [2]ज़िन्दा रहनेके लिये पानी [3]जीवनका पथप्रदर्शक [4]नीरस [5,6]मानव जातिकी नाड़ियों [7]धँस न जाये [8]आज़ादीका नारा

हम इसलिये अम्न चाहते हैं
कि आज आज़ादियोंका बढ़ता हुआ सफ़ीना[1] रुके न पल भर
भँवरमें फँसकर न डूब जाये
ये नीला परचम[2] न झुकने पाये
कि आलमी अम्न[3] हीमें क़ौमें निखार सकती हैं अपने जौहर

हम इसलिये अम्न चाहते हैं
कि जो ट्रूमैनको[4] हैं हासिल वही हों हक़ पाल राब्सनको[5]
रहे न बाक़ी निज़ामे-दहशत[6]
यही है पैग़ामे-आदमीयत[7]
कि ज़िन्दगी यूँ सजाई जाये, सजाते हैं जिस तरह दुल्हनको

हम इसलिये अम्न चाहते हैं
कि एशियासे सफ़ेद क़ौमें हटा लें अपना सियाह डेरा
ये काले बादल बरस न जाएँ
हम आज मिलकर क़सम ये खाएँ
कि हिन्दको हम न बनने देंगे कभी भी इस जंगका अखाड़ा

मगर हम उस वक़्त क्या करेंगे
पड़ोसमें आग जब लगेगी
तो उसके शोले ज़रूर लपकेंगे अपने प्यारे वतनकी जानिब
ख़िज़ाँ बढ़ेगी चमनकी जानिब
तुम्हें अभी कुछ पता नहीं है
यहाँ कभी बम गिरा नहीं है

---

[1]नाव [2]झंडा [3]विश्व-शान्ति [4]अमेरिकाके भूतपूर्व राष्ट्रपति [5]अमेरिका-का प्रसिद्ध हब्शी गायक [6]आतंककारी व्यवस्था [7]मानवताका संदेश

अगर न यह जंग रुक सकी तो
न जाने कितने सुहाग बिरहाकी[1] आग हीमें सुलग उठेंगे
न जाने कितने दिलोंके अरमाँ दिलोंके अन्दर ही जल बुझेंगे
न जाने कितने हुमकते आग़ोश[2] ख़ूनमें तरबतर मिलेंगे
करोड़ों मासूम[3] मामताकी तलाशमें दरबदर फिरेंगे
कोई न होगा सहारा जिनका
बिलखते बच्चोंका एक लशकर
सड़ी हुई लाशोंका समुन्दर
उबल पड़ेंगी वबाकी[4] नदियाँ नहीं मिलेगा किनारा जिनका
ये जन्नते-अर्ज़[5] भी न ऐटमकी ज़दसे[6] बचकर निकल सकेगी
झुलसके रह जायगी हर एक शय
पिघलके रह जायगी ये मिट्टी
वो 'हीरोशीमा'[7] व 'नागासाकी'[8] का क़ातिल[9] अब तक मरा नहीं है
हमारी मसजिदके ऊँचे-ऊँचे मिनारोंका सर झँझोड़ देगा
हमारे मन्दिरके जगमगाते कलसको गहनाके तोड़ देगा
हमारे गंग-ओ-जमनकी सीमीं[10] कलाइयोंको मरोड़ देगा
हमारे ये 'ताज' और 'अजन्ता' जमाले-मर्मर[11] जलाले-असवद[12]
हमारी तहज़ीबके[13] अमर कारनामे जिनके नक़ूश-ओ-गुम्बद[14]
हमारी तख़लीक़के[15] नमूने
हमारे पिन्दारके सफ़ीने[16]

---

[1]विरह [2]गोद [3]अबोध बालक [4]महामारी [5]भू-स्वर्ग [6]ऐटम बमकी मार, पहुँच [7,8]जापानके नगर, जिनपर पिछले महायुद्धमें अमेरिकाने ऐटम बम गिराकर उसके हज़ारों निवासियोंको जलाकर भस्म कर दिया था [9]हत्यारा [10]गंगा-यमुना रुपहली [11]संगमर्मरकी सुन्दरता [12]काले पत्थरका गम्भीर रंग [13]सभ्यता [14]चित्र और गुम्बज [15]निर्माण [16]कशती, नाव

जवान ही जो हुए थे पैदा
जवान जो आज तक रहे हैं
जवान ताज़िन्दगी रहेंगे
मगर इन ऐटमके ज़लज़लोंमें शबाब उनका न टिक सकेगा
कोई न उनको बचा सकेगा

हमारी तहज़ीब जिसके नग़मोंमें इश्ककी रूह पल रही है
हमारी तहज़ीब जिसके रक़्सोंमें[1] नौजवानी मचल रही है
मुसव्विरी[2] वह कि जिसकी आँखोंमें फ़िक्रकी[3] शमा जल रही है
वो बुतगरी[4] जिसके साअद-ओ-कदमें[5] हुस्नकी आँच ढल रही है
हमारी तहज़ीब जिसके मेमार[6] तुलसी-ओ-कालीदास जैसे
बरहना-इन्सानियतके[7] तनपर पिन्हाया जाये लिबास जैसे
हमारी तहज़ीबके ग़ज़लख्वाँ[8] 'टैगोर'-ओ-'ग़ालिब' व 'मीर' जैसे
हमारी तहज़ीबके निगहबाँ[9] 'हरीशचन्द्र'[10] और 'नज़ीर'[11] जैसे
हयाते-जावेद[12] पा चुके हैं
मगर ये डर है कि मर न जाएँ
ये सच्चे मोती बिखर न जाएँ

कथाकलीका वो पैरहन[13] तुमसे अम्नकी भीख माँगता है
मनीपुरीका[14] कुँआरापन तुमसे अम्नकी भीख माँगता है
कथक[15] अदाओंका बाँकपन तुमसे अम्नकी भीख माँगता है

---

[1]नाचों [2]चित्रकारी [3]विचार [4]मूर्तिकारी [5]कलाई और शरीर [6]निर्माता [7]नग्न मानवता [8]गुणगान करनेवाले [9]रक्षक [10]भारतेन्दु हरिश्चन्द्र [11]महाकवि 'नज़ीर' अकबरावादी [12]अमर जीवन [13]कथाकली नृत्यके समय पहनी जानेवाली पोशाक [14]प्रसिद्ध भारतीय नृत्य [15]कत्थक नृत्य

ये परचमे-अम्न[1] हीके सायेमें रहके परवान[2] चढ़ सकेंगे
फ़ुनून, मश्शात-ए-जहाँ[3] हैं, मुहाफ़िज़त[4] उनकी हम करेंगे
वो सनअतें[5] जिनको सीनेसे हम लगाके रक्खे हुए हैं अब तक
हमारे गुमनाम दस्तकारोंके साथ ही साथ चल बसेंगी

बनारसी पोत और साड़ी
ज़मीं पै जिनके बनें न साथे
वो अनकबूताना सेह्रकारी[6]
कि रूहे-मानी सरूरपाए[7]
वो लखनऊके खिलौने जिनके क़दम पै आज़र[8] जबीं[9] झुकाए
चिकनकी नाज़ुक मिज़ाजियाँ, जिनसे चश्मे-शहला[10] नज़र चुराए
श्रीनगरका[11] वो नर्म पशमीना, लम्सका[12] दिल जो गुदगुदाए
वो हैदराबादका बदर[13] जिस पै शाखे-तूबाको[14] वज्द आए
ये और कितने हमारे दावे
तबाहियोंका शिकार होंगे
हुदूदे-इमकाँके[15] पार होंगे

---

[1]शान्ति-ध्वज [2]बढ़ेंगे [3]संसारको सजाने सँवारने वाली कलाएँ, मश्शाता उस स्त्रीको कहते हैं जो बड़े घरोंकी स्त्रियोंकी कंघी चोटी करके उन्हें सजाती सँवारती हैं [4]रक्षा [5]उद्योग [6]मकड़ीके जाल जैसी बुनावट, जादूगरी [7]मानीकी आत्मा प्रसन्न हो, मानी ईरानका अपने समयका अद्वितीय चित्रकार था [8]एक बहुत बड़ा मूर्तिकार [9]माथा [10]नर्गिसका एक प्रकारका काला फूल जिसकी उपमा फ़ारसी उर्दू कवि प्रेमिकाकी आँखोंसे देते हैं [11]काश्मीरकी राजधानी [12]स्पर्श [13]हैद्राबादका बना बहुत सुन्दर कपड़ा [14]स्वर्गका एक वृक्ष [15]सम्भावनाकी सीमाओं

शऊरे-फ़्यूज़िक[1] तहे-कफ़न कबसे मौतपर वार कर रहा है
'पिकासो'[2] का वो अज़ीम फ़न[3] हमको आज बेदार कर रहा है
नवागरे-'पाल राब्सन' अब इलाजे-बीमार कर रहा है
शऊर बेदार[4] करके उट्ठो
क़दमको हुशियार करके उट्ठो
कि मुन्तज़िर है निगाहे-रहज़न[5]

गुरूरे-फ़ारसका[6] अज़्मे-कोहकन[7] नये-नये छब दिखा रहा है
मलायामें गोरखोंके दस्तों पै हिन्दको तैश[8] आ रहा है
वो बेगुनह ख़ून कोरियाका लहूके आँसू रुला रहा है
निगारे-चींकी[9] जबीं पै रौशन सितारा तुमको बुला रहा है
क़लमको तैयार करके उट्ठो
दिलोंसे एक़रार[10] करके उट्ठो
कि जंग अब हम न होने देंगे

क़सम है उस जुरअते-जवाँकी[11] जो तोड़कर रख दे तौक़े-आहन[12]
क़सम है उस अज़्मकी[13] जो सहराके[14] आँचलोंपर उगाये गुलशन

---

[1]फ़्युज़िककी चेतना, फ़्युज़िक चेकोस्लावेकियाका एक पत्रकार और नेता था जिसे गेस्टपोकी तानाशाही सरकारने बड़े कष्ट देकर मार डाला [2]विश्व विख्यात हब्शी चित्रकार [3]महान कला [4]चेतनाको जगा रहे हैं [5]चोर, लुटेरेकी निगाह [6]ईरानके अभिमान [7]दृढ़ संकल्प इस पंक्तिमें ईराननने तेलके सम्बन्धमें ब्रिटिश कम्पनी और ब्रिटेनके विरुद्ध जो नीति अपनाई है उसकी ओर संकेत है [8]क्रोध [9]चीनकी मूर्तिके माथेपर चमकता तारा [10]प्रतिज्ञा [11]जवान साहस [12]लोहेका फन्दा [13]संकल्प [14]उजाड़ मैदान, बंजर भूमि

क़सम है उस जोशे-कामराँकी[1] जो रुख़को सैलाबके[2] बदल दे
क़सम है उस रफ़अते-नज़रकी[3] जो छीन ले आस्माँसे तारे
क़सम है उस जुस्तजूकी[4] जो ज़ख़्मे-दिलकी हर फाँस ढूँढती है
क़सम है उस अह्‌दे-नौकी[5] जिसको हमारी हर साँस ढूँढती है
क़सम है उस बेनवा किसान और ग़रीब मज़दूरके यक़ींकी
वो अपनी मेहनतकी ज़िन्दगीमें
हबीबे-जाँकी[6] बरहनगीमें[7]
कसीफ़[8] बच्चोंकी गन्दगीमें
अँधेरीसी अपनी झोंपड़ीमें
ख़याले-फ़रदाकी[9] रोशनीमें
हयाते-नौकी[10] उमीद लेकर तलाशमें वक़्तकी लगे हैं
क़सम है उन बेशुमार हाथोंकी, आज जो अपने दस्तख़तसे
ये एक एलान कर रहे हैं कि "जंग अब हम न होने देंगे
"कि जंग अब हम न होने देंगे"

जो ऐटमी बम बने हुए हैं, वहा दो उनको समुन्दरोंमें
कि जंग दुश्मन है ज़िन्दगीकी
रुख़े-सहरसे[11] नक़ाब उठा दो
हमें ज़रूरत है रोशनीकी
हम इसलिये अम्न चाहते हैं,

अगर न ये जंग रुक सकी तो
हमारी तारीख़े-इरतक़ाकी[12] सुनहरी जिल्दें, रुपहली सतरें

---

[1]सफलताके उत्साह [2]बाढ़ [3]ऊँची दृष्टि, निगाहकी ऊँचाई [4]जिज्ञासा [5]नवयुग [6]प्राणप्रिय [7]नग्नता [8]गन्दे मैले बच्चों [9]भविष्यका विचार [10]नवजीवन [11]प्रभातके मुखसे [12]विकासका इतिहास

लहदमें[1] निसियाँके[2] दफ़्न होंगी
हमारी हव्वा,[3] हमारी मरियम,[4] हमारी सीता,[5] हमारी राधा[6]
हमारी 'जोन'[7] और हमारी 'ज़ोया'[8]
उरूसे हर दिल, उरूसे दुनिया[9]

हमारे दिलमें न रह सकेंगी
हमारी दुनियाको छोड़ देंगी
हमारी 'अज़रा'[10] हमारा 'शेली'[11] हमें कभी फिर न मिल सकेंगे
हमारी शीरीं,[12] जो आज अपनी शरारतोंसे है घरकी रौनक़
न घर रहेगा न घरकी रौनक़

न जाने ये अंग क्या करेगी
बस एक सन्नाटा एक वहशत[13]
मुहीब[14] चीख़ें क़दम-क़दमपर
हवामें गोलीकी सनसनाहट
वो मौतकी चाप ख़ौफ़से जिसके दिल अभीसे दहल रहा है
हमारे खेतोंकी छातियोंको न जाने कब तक ये टैंक रौंदें
न जाने कब तक ये आग बरसानेवाले रॉकिट[15] फ़िज़ामें कौंदें
अगर हम इससे भी बच गये तो वबाई कीड़ोंके[16] बम गिरेंगे

---

[1]क़ब्र [2]विस्मृतकी [3/4/5/6/7/8]आदि पुरुष आदमकी पत्नी, ईसाकी माँ, सीता, राधा, फ्रांसकी क्रान्तिकी नायिका जोन आफ़ आर्क, रूसकी वीर बालिका जिसने हिटलरकी फ़ौजोंका मुक़ाबिला किया [9]प्रत्येक हृदय और समस्त संसारकी प्यारी दुल्हन [10]वामिक़ अज़रा नामक प्रेमी प्रेमिका भी लैला मजनूँकी तरह मुस्लिम साहित्यमें मशहूर हैं [11]प्रसिद्ध अंग्रेज़ी कवि [12]फ़रहादकी प्रेमिका [13]वीरानी [14]भयानक [15]बान [16]बीमारी फैलानेवाले कीटाणु

अगर हम उससे भी बच गये तो 'नपाम बम का'[1] शिकार होंगे
बदन पे उभरेंगे कोढ़के दाग़
बदलके रह जायगी शबाहत
ज़मीनपर एड़ियाँ रगड़कर
हमें तमन्नाए-मौत होगी
मगर न हम जल्द मर सकेंगे—
कोई न होगा किसीका हमदम
वो जंग होगी कि हश्र[2] होगा

---

[1]ऐसा बम जिसके गिरनेसे धरतीपर ६ फ़िट ऊँचाई तक प्रत्येक चीज़ जल जाती है [2]प्रलय

खोलो नीला परचम

(पेकिंग कानफ़्रेन्सके नाम)

राही मासूम रज़ा

युद्धकी अग्नीकी लपटोंसे जीवनकी जूही कुम्हलाये
लयकी डोरी टूट रही है, गाये तो भौंरा कैसे गाये
शबनम अंगारोंकी क़ैदी, कौन कलीकी प्यास बुझाये
काजलकी कविता मिटती है, नयन कँवलमें नीर भर आये
जीवनकी बीनापर कोई छेड़ रहा है मौतका सरगम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

आँगनसे लिपटा है अँधेरा, डालर सारे दीप बुझाये
बापकी लाठी टूट रही है, कौन उसे गिरनेसे बचाये
लोरीका झूला टूटा है, माँ कैसे बच्चेको सुलाये
मौत खिलौनोंमें बैठी है, बचपनको यह कौन बताये
देर हुई तो करना होगा, जीवनके सपनोंका मातम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

जीवनकी कोमलतापर अब रेंग रहे हैं कोढ़के धब्बे
खेतोंकी हरियालीमें अब, होते हैं ऐटमके चर्चे
युद्धसे दूकानोंमें हलचल, मिलको एक पल नींद न आये
युद्ध आकाशके ज्ञानका दुश्मन, युद्धसे सागरका दिल धड़के
धरतीकी यह आस न टूटे, रस्तेमें है फूलोंका मौसम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

युद्ध यानी हर रात अमावस युद्ध यानी हर दिन गहनाया[1]
दीवाली भी दीपको ढूँढे, युद्धसे चारों ओर अँधेरा
युद्ध यानी दीवारें बैठें——युद्ध यानी शमशान[2] हो दुनिया
युद्ध यानी सड़कों पै बिगड़े सारा रंग-रचाव कलाका
युद्ध यानी हर घुंघरू रोये, युद्ध यानी रोये हर परछम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

युद्ध यानी कलियाँ जल जाएँ, धूप पड़े और लाशें चटकें
घुंघरू संगीनोंपर उछलें, मौतके ताल पै लाशें नाचें
बालोंकी खुशबू मर जाये, सड़ती गलती लाशें महकें
युद्ध यानी सड़कोंपर लाशें, घर और स्कूलोंमें लाशें
धरती जख्मोंसे बेदम है आओ लगाएँ अम्नका मरहम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

धरतीके सूखे होंठोंपर अम्नका ठंडा रस टपकाओ
जीवनके मन्दिरमें जाकर अम्नके सुन्दर दीप जलाओ
दुनिया भरके साज मिलाकर जीवनका संगीत बनाओ
जीवनके सपने नाच उट्ठें, अम्नका वह पैग़ाम सुनाओ
जीवनकी वीनापर छेड़ो अम्नकी धुन, पर मद्धम-मद्धम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

[1]ग्रहण लगा दिन [2]श्मशान

सवाल यह है—जवाब यह है

(जालन्धर अम्न कानफ़रेन्सके नाम)

राही मासूम रज़ा

सवाल यह है कि तीसरी जंगसे भला क्यों मैं डर रहा हूँ
सवाल यह है कि मेरी नज़्मोंमें अम्नकी ये पुकार क्यों है
सवाल यह है कि जंग होगी तो हो, मुझे क्या ग़रज़ है इससे
सवाल यह है कि मेरी नज़्मोंको अम्नपर एतबार क्यों है

ये शह्र[1] शाहेजहाँके दिलका अमीन होता तो फ़िक्र होती
यहाँ अजन्ताकी अज़मतोंके निशान मिलते तो सोचता भी
गुलाबके खेत अपनी वीरानीके कफ़नमें[2] सिसक रहे हैं
हमेशाकी तरह इस ज़मींपर गुलाब खिलते तो सोचता भी

हवामें दिक़के[3] क़दमकी आहट, ज़मीं पे सिलके[4] लहूकी सीलन
कुछ और अमराज़[5] हों तो डर क्या, ज़मीन फ़रियाद क्या करेगी
उजाड़ सड़कें, उदास आँगन, ये गिरती दीवारोंका वतन है
लड़ाई होगी तो हो, लड़ाई खँडरको बरबाद क्या करेगी

लड़ाई होगी तो ख़ून बरसेगा, मौत लहरायेगी फ़िज़ामें
हयातको आज मौतका इन्तज़ार है, फ़िक्र क्या करूँ मैं

---

[1]ग़ाज़ीपुर [2]दूसरी लड़ाईमें हमारे गुलाबके खेत हवाई अड्डोंके काम आ गये [3]क्षय रोग [4]यक्ष्मा [5]रोग

लड़ाई होगी तो भूख शह-रग पै[1] हाथ डालेगी बस यही न
यहाँ तो बेरोज़गारीही रोज़गार है—फ़िक्र क्या करूँ मैं

लड़ाई होगी तो साफ़-ओ-शफ़्फ़ाफ़[2] ज़िन्दगी चीख़ने लगेगी
मगर सलामत अँधेरी गलियाँ, ग़िलाज़तें[3] अब भी उग रही हैं
लड़ाई होगी तो इस्मतें[4] शामकी सजावट पै ख़र्च होंगी
मगर यहाँ कच्चे आँगनोंमें तवायफ़ें अब भी उग रही हैं

लड़ाईकी फ़िक्र दिल्लियों सारनाथों और काशियोंको होगी
हसीन बाग़ात अम्न चाहें हसीन बाज़ार अम्न चाहें
लड़ाईकी फ़िक्र अगर करेंगे तो बुद्धके बुत, मुझे ग़रज़ क्या
अशोककी लाटें अम्न चाहें, अजन्ताके ग़ार अम्न चाहें

मैं उस ख़राबेका[5] रहनेवाला कि क़हक़हा सुनके चौंक उट्ठे
हवाका जो रास्ता नहीं है, ज़मींका जो रास्ता नहीं है
यहाँकी मटियाली ज़िन्दगीपर किसीका ऐटम नहीं गिरेगा
ये टूटा फूटासा शह्र दिल्ली नहीं है, हीरोशिमा नहीं है

तो साथियो अब सवाल यह है कि जंगके मैं ख़िलाफ़ क्यों हूँ
तो साथियो अब सवाल यह है कि फ़िक्र क्यों गर्म-जुस्तजू[6] है
तो साथियो अब सवाल यह है, लड़ाईकी मुझको फ़िक्र क्यों हो
तो साथियो अब सवाल यह है कि अम्न क्यों मेरी आरज़ू है

गवाह रहना कि मेरा फ़न इस ख़िज़ाँमें अब एक गुलाब देगा
गवाह रहना कि मेरा फ़न ज़ुल्मतोंमें[7] एक आफ़ताब[8] देगा

---

[1]नाड़ी [2]निर्मल, स्वच्छ [3]गन्दगी [4]सतीत्व, स्त्रियोंकी लाज
[5]उजाड़, वीरान स्थान [6]जिज्ञासामें लीन है [7]अन्धकारोंमें [8]सूर्य

गवाह रहना कि इन सवालोंको सुनके मैं चुप नहीं रहा हूँ
गवाह रहना कि मेरा फ़न इन सवालोंका अब जवाब देगा

उदासी बिखराये बाल जिन आँगनोंमें सदियोंसे खेलती है
गवाह रहना कि आया हूँ मैं उन आँगनोंका सलाम लेकर
गवाह रहना कि सैकड़ों मील चलके आया हूँ मैं यहाँपर
उजाड़ सड़कोंने मुझको भेजा है आज अपना पयाम देकर

गवाह रहना कि टूटी सड़कोंका एक नुमाइन्दा कह रहा था
कि अम्न मेरी उजाड़ सड़कोंकी एक बेचैन आरज़ू है
गवाह रहना, गुलाबोंका एक सफ़ीर[1] आया था, कह रहा था
लड़ाईसे इख़्तलाफ़[2] हमको—सुकूनकी हमको जुस्तजू है

लड़ाई होगी किसान टामीगनोंसे खेलेंगे हलको रखके
सवाल यह है कि खेतियाँ गुफ़्तगू करेंगी अगर तो किससे ?
लड़ाई होगी तो सीनए-बह्रपर धमाकोंका राज होगा
सवाल यह है कि नद्दियाँ गुफ़्तगू करेंगी अगर तो किससे ?

लड़ाई होगी तो शाहराहों पे टैंक घूमेंगे, शोर होगा
सवाल यह है कि जिन्दगीकी निशानियाँ फिर कहाँ रहेंगी
लड़ाई होगी तो आँगनोंके हर एक कोनेमें खौफ़ होगा
सवाल यह है कि दादियोंकी कहानियाँ फिर कहाँ रहेंगी

मैं आज गुमनाम हूँ यह सच है—अगर मैं फ़नकार[3] हूँ रफ़ीक़ो
मैं 'राब्सन',[4] 'फ़ास्ट'[5] और 'शह-यन'के[6] वास्ते अम्न चाहता हूँ

---

[1]दूत [2]विरोध [3]कलाकार [4]पाल राब्सन [5]अमेरिकाका प्रसिद्ध प्रगतिशील लेखक [6]प्रसिद्ध चीनी उपन्यासकारके

मैं एक ख़राबेका रहनेवाला तो हूँ मगर बेख़बर नहीं हूँ
मैं मास्को रोम और बर्लिनके वास्ते अम्न चाहता हूँ

ये जूहीके गुनगुनाते पौदे, ये बेलेके मुस्कराते गुंचे
गुलाबके खेतोंकी कहानी सुना न दें इससे डर रहा हूँ
ये तीसरी जंग दूसरी जंग हीकी मानिन्द जंग होगी
हवाई अड्डे कहीं इन्हें भी मिटा न दें इससे डर रहा हूँ

लड़ाई होगी तो फ़ौजके साथ जिन्सकी[1] भूख भी बढ़ेगी
कहाँ रहेगा ग़ुरूरे-मरियम[2] कहाँ रहेगा विक़ारे-सीता[3]
बताओ सीनोंपर और ज़ख़्मोंके वास्ते अब जगह कहाँ है
नहीं, ये खेल अबसे बन्द होगा यहाँ न होगा कहीं न होगा

नहीं, लड़ाई नहीं, लड़ाई ख़िज़ाँका एक नाम है रफ़ीक़ो
गुलाबके उजड़े खेत अपनी शगुफ़्तगी[4] माँगते हैं मुझसे
ये मदरसे जिनमें टाटके गन्दे फ़र्शपर इल्म ऊँघता है
ये मदरसे आज उदास बैठे हैं, जिन्दगी माँगते हैं मुझसे

मैं एक ख़राबेका रहनेवाला, तो क्या दरिन्दोंको[5] भूल जाऊँ
तो क्या भयानक लड़ाईकी मैं ख़बर सुनूंगा तो चुप रहूँगा
सुनो! रफ़ीक़ो, सुनो! ब-बाँगे-दोहलमें[6] मैं एलान कर रहा हूँ
मैं अम्नके वास्ते जिऊँगा, मैं अम्नके वास्ते मरूँगा

शिकस्ते-आईना[7] किसको कहते हैं, यह कोई मेरे दिलसे पूछे
कुछ और शीशे भी टूट जायें, मैं यह गवारा नहीं करूँगा

---

[1]ऐन्द्रिक भूख　[2]मरियमका अभिमान　[3]सीताका तेज
[4]प्रफुल्लता, ताज़गी　[5]हिंसक पशुओं　[6]ढोलकी आवाज़के साथ, अर्थात
चिल्ला-चिल्लाकर　[7]दर्पण टूटना

मैं टूटी सड़कोंके दर्दको ख़ूब जानता हूँ इसीलिये तो
कुछ और सड़कें भी टूट जायें मैं यह गवारा नहीं करूँगा
मैं जानता हूँ कि दिक़की आहटसे नींद किस तरह टूटती है
मैं जानता हूँ कि गाढ़ा बलग़म ज़मींको किस तरह चूसता है
अँधेरे कमरे हयातसे क्या सलूक करते हैं, जानता हूँ
मैं जानता हूँ कि टूटे गमलेमें पौदा किस तरह सूखता है

तो क्या ज़मीं एक टूटा गमला बने तो मैं देखता रहूँगा ?
जो एक पौदेके ग़ममें रो दे, चमनकी बरबादी देख लेगा
जो एक ख़राबेकी नालियोंकी ग़िलाज़तोंपर गवाह हो ख़ुद
वो वादिये-वाल्गा[1] व गंग-ओ-जमनकी बरबादी देख लेगा ?

दराज़ ज़ुल्फ़ोंकी बरहमी[2] अम्न माँगती है मेरी ज़बाँसे
मैं अम्नकी माँग कर रहा हूँ, घटाओंकी तिश्नगीकी[3] ख़ातिर
हसीं सितारोंकी रोशनी अम्न माँगती है मेरी ज़बाँसे
मैं अम्नकी माँग कर रहा हूँ, फ़िज़ाकी शाइस्तगीकी[4] ख़ातिर

घरोंकी दीवारोंपर लड़कपन लकीरें खींचा किया है अब तक
मैं घरकी दीवारोंकी लकीरोंके वास्ते अम्न चहता हूँ
मैं दिक़की तल्ख़ीको[5] जानता हूँ कि ख़ून थूका है खाँसियोंमें
मैं दिक़के बीमारोंकी दवाओंके वास्ते अम्न चहाता हूँ

मैं हर हसीं शय्के तहफ़्फ़ुज़के[6] वास्ते अम्न चाहता हूँ
ज़मीन अब तक सुना रही है लड़ाईका एक तवील क़िस्सा
सवाल करते हैं लोग मुझसे कि अम्न या जंग, किस तरफ़ हूँ
मैं जंगके साथ अगर रहूँगा तो अम्नके साथ कौन होगा ?

---

[1]रूसकी नदी [2]अस्तव्यस्त, परेशानी, बिखरा होना [3]प्यास
[4]सुसंस्कृत बनाने [5]कटुता [6]रक्षा

बाबुल

राही मासूम रज़ा

दुल्हन चली
छनन छनन
छनन छनन
मिरासिनोंका[1] गीत शामियानेसे निकल गया
क़रीबे-दर[2]—
क़रीबे-राह[3] आ गया
तमाम औरतें सिमटके रास्तेपर आ गईं
मुहल्लवालियाँ भी हैं
उन्हींमें नौकरानियाँ
उन्हींमें बहनें और सहेलियाँ भी हैं
दुल्हनकी बन्द आँखोंसे
कुछ आँसुओंकी बूँदें गिरके लाल टोनकी रिदामें[4] जज्ब होके रह गईं
मिरासिनोंका गीत लेकिन और तेज हो गया
किसीने बढ़के पालकीके पर्देको उठा दिया
और आफ़ताब उस उफ़क़में[5] छिप गया
तुलूए-सुबहके[6] लिये—
कोई न छींक दे कहीं
कि यह बुरा शुगून है

---

[1]डोमनियों [2]द्वारके पास [3]रास्तेके पास [4]चादर [5]क्षितिज [6]प्रभातोदय

ये गीतका मुक़ाम है
ये जाय-एहतराम[1] है
विदाअका[2] ये वक़्त है
कोई शुगूने-बद न हो
सफ़ेद साड़ियों, दुपट्टों और अकेली राहकी तरह जो ख़ाली माँगें हों
उन्हें उधर ही रोक लो
क़रीबे-दर न आने दो
कोई शुगूने-बद न हो
विदाअका ये वक़्त है
ये एक ख़ानदानकी हयातका सवाल है

मिरासिनोंके गीतने
शुगूने-बदके डरसे पालकीको जैसे ढक लिया
ये गीत कितनी बार गाया जा चुका है आज तक
मगर ये गीत आज भी जवान है
एक अधपकासा आम है
खटास भी
मिठास भी

ये गीत उस दुल्हनकी तरह पाक है
ये गीत माँकी डबडबाई मुस्कराहटोंकी तरह पाक और अज़ीम[3] है
ये गीत उस दुल्हनके ख़्वाबकी तरह हसीन है
ये गीत छोटे भाइयोंकी भीगी आस्तीन है
जो माँको रोता देखकर
बहनको जाता देखकर

---

[1]आदरकी जगह [2]विदाई [3]महान

बग़ैर सोचे समझे बस बिलख पड़ें
ये गीत माँका प्यार है
ये बापका ग़ुरूर है
ये घरकी आनबान है
ये आज भी जवान है
न जाने कितना रस भरा है इसके बोल-बोलमें
न जाने कितने ख़्वाब हैं
उतार हैं
चढ़ाव हैं

अगर ये रस छलक पड़े
नहीं नहीं
ये एक ख़ानदानकी हयातका सवाल है
ये गीत ज़िन्दगीके इरतक़ाका[१] एक नाम है

सुहाग-नथको कौन तोड़ सकता है
हयातके इस इरतक़ाको कौन रोक सकता है
दुल्हनके बजते झाँझ इसको बढ़के रोक सकते हैं
मिरासिनोंके गीत इसको बढ़के टोक सकते हैं
वो कौन बदनसीब है
नई दुल्हन
अज़ीज़ माँ
मिरासिनो
मुहल्लेवालियो ! सुनो
वो तीसरी लड़ाई है

---

[१]विकास

अम्न

हसन आराफ़ी

अम्न—शादाब वादी नदीका तरन्नुम मचलती किरन
महकी-महकी हवा लहके लहकेसे वन बहके-बहके हिरन
फैली-फैली चरागाह भेड़ोंके रेवड़ गड़रियोंके गीत
तैरे-तैरे फ़िज़ामें कुलंगोंके[1] नग़मे पपीहोंके गीत

अम्न—इन्सानकी मेहनत अनहारमें[2] झिलमिलाती हुई
बाग़ सैराब होते हुए खेतियाँ लहलहाती हुई
डाली-डाली फलोंसे लदी कोयलें चहचहाती हुई
बालियाँ टिमटिमाती हुई ज़िन्दगी मुस्कराती हुई

अम्न—पनघटपै शाम-ओ-सवेरे बहम[3] कुनमुनाती उमंग
झमझमाती हुई गागरें झनझनाता हुआ जलतरंग
अबरुओंका तक़ाज़ा कि शोलेकी मानिन्द गोरी मिलो
घूँघटोंका इशारा कि भोले सनम चोरी-चोरी मिलो

अम्न—भीगी हुई रात छिटकी हुई चाँदनी नर्म सेज
दो सुलगते शरारोंसे[4] होती हुई दमबदम गर्म सेज
और शबानेके[5] साग़रकी गर्दिशसे मिलता सुबूहीका[6] दौर
कपकपाते लबोंपर यही इल्तजा 'साक़िया और और'

---

[1]एक चिड़िया [2]नहरों [3]साथ [4]चिनगारियों [5]रातको चलनेवाली शराब
[6]सवेरे चलनेवाली शराब

अम्न—हीरोंसी हीरोंका[1] नीमोंकी छतरीके नीचे हुजूम
चूड़ियोंकी खनक घुँघरुओंकी झनक चरखे-चरखे की धूम
पूनी तकलेसे टकराये तकला उसे तारमें ढाल दे
कातनेवालियोंके बे आहंग[2] सपनोंको सुर ताल दे

अम्न—करवा जुलाहा जहाँ नक़रई[3] जाल बुनता रहे
रात दिन आदमीके बदनके लिए ढाल बुनता रहे
आरज़ुओंके झूलेमें झूले उम्मीदोंके सपने बुने
उसके मनकी कली मुस्कराये नवेदोंके सपने बुने

अम्न—कच्चा घरौंदा जहाँ हल बने हलका फाला ढले
फ़स्ल फूले फले कोठी-कोठी भरे हल चले जग पले
और चरसे पे दोहेकी तानें किसानोंके दिलका धुआँ
'जोड़ियाँ जगदे विच थोड़ियाँ बेलियाँ जोड़ियाँ थोड़ियाँ'

अम्न—चौपालकी दोपहर ग़म लपकती हुई शामका
हालियोंके[4] मशक़्क़त भरे दिनमें इक वक़्फ़ा[5] आरामका
इक तरफ़ दिलके शीशेको दुनियाके ग़म चूर करते हुए
इक तरफ़ वारिस-ओ-फ़ज़्ल[6] जीने पे मजबूर करते हुए

अम्न—भरियोंसे दाने लपकते हुए दिल उछलते हुए
शाम होते ही अलगोज़े बजते हुए गीत उबलते हुए
और ढोलककी थापों पे धरतीकी छाती धड़कती हुई
चाँदको देखकर दिल-गिरफ़्ता[7] चकोरें फड़कती हुई

अम्न—ग़ल्लेके अम्बार क़न्द-ओ-शकर और रुईके ढेर
अल्ला अल्ला वो बहुतात हर शै मिले चार पैसेकी सेर

---

[1]राँझाकी प्रेमिका [2]सामंजस्यहीन [3]चाँदीके [4]हलवाहों [5]क्षण
[6]पंजाबी कवि [7]जिनका हृदय बन्दी है

दूधकी नहरें और शहदकी नद्दियाँ रक़्स[1] करती हुई
ज़िन्दगानीकी तस्वीरमें नित नये रंग भरती हुई
अम्न---देहाती क़स्बातकी यह तमन्ना कि आगे बढ़ें
बर्क़रफ़्तार[2] शहरोंके शानोंसे शानें[3] मिलाकर बढ़ें
'खेत मज़दूर जागीरदारीकी भुसमें शरारे भरें
खेत फैलायें दामन कि उनमें मशीनें तरारें भरें
अम्न---मेहनतकशोंकी तमन्ना कि तहज़ीब फूले फले
कारख़ानोंमें दुनियाए-नौ का अछूता सवेरा ढले
ज़र्रे-ज़र्रेके सीनेमें जोशेनुमू[4] कसमसाने लगे
ज़िन्दगानी उरूसेनवीकी[5] तरह मुस्कराने लगे
अम्न---जम्हूरका हक़्क़े-तहरीक-ओ-तंज़ीमे-पेशा वराँ[6]
एक एकाकि ग़ासिब[7] पै बरसे हज़ीमतकी बरक़-तपाँ[8]
मुफ़्तख़ोरोंके हीलोंसे जहमतकशोंको[9] ख़लासी मिले
वह दिखाये करामत जमाअत कि सहरामें गुलशन खिले
अम्न---क्या अम्न हीसे ये ग़द्दारियाँ अम्नके नामपर
तीसरी जंगे-आलमकी तैयारियाँ अम्नके नामपर
दुखके साथीसे अच्छी वफ़ादारियाँ अम्नके नामपर
चारों जानिबसे धावेकी तैयारियाँ अम्नके नामपर
अम्न---ख़ुद अम्नका जंगसाज़ोंकी छातीपै चढ़ बैठना
फ़ाख़्ताओंका ख़ूँख़्वार बाज़ोंकी छातीपै चढ़ बैठना
ताजदारोंकी मग़रूर कलग़ीको[10] क़दमों तले रौंदना
टोपी-टोपीमें मस्तूर कलग़ीको क़दमों तले रौंदना

---

[1]नाचती हुई [2]बिजलीकी गतिवाले [3]कन्धेसे कन्धा [4]विकासका जोश [5]नई दुलहन [6]जनताका आन्दोलन और संगठनका अधिकार [7]लुटेरे [8]पराजयकी बिजली [9]खटनेवाले [10]ताज

शकुन्तलासे

'तेग़' इलाहाबादी

तुम्हें तो यह बात याद होगी
कि दूसरी जंग हीमें पानीके बदले कीचड़ पिया गया है
ग़िज़ाके[1] बदले सिपाहियोंको निजासतें[2] फाँकनी पड़ी हैं
शिकस्तगी[3] बेबसीमें चमड़ेकी पेटियाँ चाटनी पड़ी हैं
हज़ारों माएँ जवान बच्चोंके वास्ते खून रो चुकी हैं
ज़ईफ़ बापोंके थरथराते हुए क़दम सर्द पड़ चुके हैं
सुहागिनोंकी निगाहें दूल्हाकी वापसीको तरस चुकी हैं
सिसकती बहनोंने भाइयोंको कफ़न पिन्हाकर जुदा किया है

अगर फिर इस बार जंग होगी
तो आदमीयत नोकीले बूटोंकी ठोकरोंसे लरज़[4] उठेगी
तुम्हारे घरके बरामदेमें चटख़ती ईंटोंके ढेर होंगे
तुम्हारे शौहरका जिस्म सीसेकी गोलियाँ खाके गिर पड़ेगा
तुम्हारी बच्चीसे लोग उसकी ज़रासी गुड़िया भी छीन लेंगे
तुम्हारे बच्चेके हाथमें दूधका कटोरा नहीं रहेगा
तुम्हारे चेहरे पै दाँतके नील होंगे, लबपर ख़राश होगी
तुम्हारे सीनेको भेड़ियोंके करीह[5] नाख़ून नोच लेंगे
तुम्हारी अलमारियों पै रक्खी हुई किताबें नहीं रहेंगी

---

[1]भोजन [2]गन्दी चीज़ें [3]पराजयकी दशामें
[4]काँप [5]घृणित

तुम्हारे चूल्हेमें लकड़ियोंके एवज़ तुम्हारा बदन जलेगा
तुम्हारी अपनी ज़मीं जलेगी, तुम्हारा अपना वतन जलेगा
तुम्हारे छज्जे पे काँचकी चूड़ियोंके टुकड़े नहीं रहेंगे
तुम्हारे आँगनकी रस्सियोंपर सफ़ेद कपड़े नहीं रहेंगे
तुम्हारे भाईका साज़ गिर जायगा सितारोंकी आह बनकर
तुम्हारे भाईके गीत जम जायँगे तुम्हारी कराह बनकर
ये बात तुम तक नहीं रहेगी
ये ज़हर धरतीकी एक-एक नसमें घुलके आँतोंको काट देगा
ये ज़हर रग-रगको चाट लेगा
ज़मीन गेहूँ नहीं जनेगी
कि इसके होंठोंपे आदमीके लहूकी पपड़ी जमी हुई है
मिलोंमें कपड़ा नहीं बनेगा
कि तकलियोंको घुमानेवालोंकी उँगलियाँ काट दी गई हैं
अदबका[1] नाम-ओ-निशाँ न होगा
कि दर्सगाहोंमें[2] गिद्ध मुर्दारिसकी लाशसे खून पी रहे हैं
कहीं तक़द्दुस[3] नहीं रहेगा
कि शाहराहोंपे फ़ौजके रूसियाह[4] कुत्ते ज़िना[5] करेंगे

---

[1]साहित्य [2]विद्यालयों [3]पवित्रता [4]काले मुँहवाले [5]व्यभिचार

जंग

मखदूम मुहीउद्दीन

निकले दहाने-तोप[1] से बरबादियोंके राग
बाग़े-जहाँमें फैल गई दोज़खोंकी आग
क्यों टिमटिमा रही है. ये फिर शमए-ज़िन्दगी
फिर क्यों निगारे-हक़[2] पै हैं आसारे-बेदगी

इफ़रीते-सीम-ओ-ज़रके[3] कलेजेमें क्यों है फाँस
क्यों रुक रही है सीनेमें तहज़ीबे-नौकी[4] साँस
अम्न-ओ-अमाँकी नब्ज़ छुटी जा रही है क्यों
बालीने-ज़ीस्त[5] आज अजल गा रही है क्यों

अब दूल्हनोंसे छीन लिया जायगा सुहाग
अब अपने आँसुओंसे बुझाएँ वह दिलकी आग
बरबत नवाज़े-बज़्मे-उलूही[6] इधर तो आ
दावत देहे-पयामेउबूदी[7] इधर तो आ

इन्सानियतके ख़ूनकी अरज़ानियाँ[8] तो देख
उस आस्मानवालेकी बेदारियाँ तो देख

---

[1]तोपोंके मुँह [2]सत्यकी तस्वीर [3]चाँदी सोने (लोभ)का राक्षस [4]नई सभ्यता [5]ज़िन्दगीके सिरहाने [6]ईश्वरकी ज्ञान ध्यानवाली सभाको संगीतसे नवाज़नेवाले [7]ईश्वरीय पूजाका संदेश पहुँचाने वाले [8]सस्ता

मासूमए-हयातकी[1] बेचारगी तो देख
दस्ते-हवससे[2] हुस्नकी ग़ारतगरी[3] तो देख
ख़ुद अपनी ज़िन्दगी पै पशेमाँ[4] है ज़िन्दगी
क़ुरबानगाहे-मौत[5] पै रक़्साँ[6] है ज़िन्दगी
इन्सान रह सके कोई ऐसा जहाँ भी है
इस फ़ितना ज़ा ज़मींका कोई पासबाँ भी है
ओ आफ़ताबे-रहमते-दौराँ तुलूअ[7] हो
ओ अंजुमे-हमीयते-यज़दाँ[8] तुलूअ हो

---

[1]अबोध ज़िन्दगी [2]लोभी हाथ [3]विनाश [4]पछताती है [5]मृत्युकी बलिवेदी [6]नाच रही है [7]युगपर दयाका प्रकाश लानेवाले सूर्य उदय हो [8]ईश्वरीय लाजके तारे उदय हों

सिपाही

मख़दूम मुहीउद्दीन

जानेवाले सिपाहीसे पूछो
वह कहाँ जा रहा है

कौन दुखिया है जो गा रही है
भूखे बच्चोंको बहला रही है
लाश जलनेकी बू आ रही है
ज़िन्दगी है कि चिल्ला रही है
जानेवाले सिपाहीसे पूछो
वह कहाँ जा रहा है

कितने सहमे हुए हैं नज़ारे
कैसा डर डरके चलते हैं तारे
क्या जवानीका ख़ूँ हो रहा है
सुर्ख़ हैं आँचलोंके किनारे
जाने वाले सिपाहीसे पूछो
वह कहाँ जा रहा है

गिर रहा है सिपाहीका डेरा
हो रहा है मेरी जाँ सवेरा
ओ वतन छोड़कर जानेवाले
खुल गया इन्क़लाबी फरेरा
जानेवाले सिपाहीसे पूछो
वह कहाँ जा रहा है

५

ग़ज़लें और गीत

ग़ज़ल शब्दका अर्थ है माशूक़से बातें करना। लेकिन इस अर्थको विस्तार देकर प्रेम और सौन्दर्यके परस्पर सम्बन्ध, प्रेम और सौन्दर्य सम्बंधी भाव और विचार, अनेक रूपों द्वारा प्रेम और प्रेम के अतिरिक्त जीवनके दूसरे मुख्य पहलू, सृष्टिके सम्बन्धमें हमारी भावनाएँ ये सब ग़ज़लके विषय बना दिये गये हैं। बस इसका ध्यान रखना आवश्यक समझा गया है कि दोस्त या माशूक़से बातें करनेमें जिस अपनत्व, सहृदयता, नर्मी और घुलावटको हम काममें लाते हैं, ग़ज़लकी भाषा और उसके स्वरमें भी यही सब होनी चाहिये। उर्दू कवितामें ग़ज़ल अधिकसे अधिक मानवीय या निजी स्वर-कम्पनसे अलंकृत कविता होती है। नई उर्दू शायरीमें यह प्रयास किया गया है कि ग़ज़लको नई चेतना और जीवनपर नई आलोचनाका माध्यम बनाया जाय। नई उर्दू ग़ज़लमें नई प्रतिक्रियाएँ और नई प्रेरणाएँ व्यक्त की गई हैं।

इस पुस्तकके इस भागमें ग़ज़लोंके साथ कुछ गीत भी रख दिये गये हैं। गीतोंमें भी भाव और विचार, स्वर और ध्वनि नर्मा दिये जाते हैं और गीत बहुत उतरके कहे जाते हैं। उर्दूके नये गीतोंमें अक्सर इस युगके वातावरण, उसकी समस्याओं और उसके अनेक पहलुओं की ओर संकेत होते हैं। बातों बातोंमें अनेक परिस्थितियों को और युगकी आत्माको छूते हुए उर्दू गीतोंके लेखक गुज़र जाते हैं। गीतोंमें भाषा इतनी सरल हो जाती है और इतनी ठेठ बन जाती है कि हिन्दी उर्दूका भेद अक्सर मिट जाता है।

ग़ज़लें और गीत

	पृष्ठ
१. 'मजरूह' सुलतानपुरी--	
ये रुके-रुके से आँसू	१०५
निगाहे-साक़िये-ना-मेह्रबाँ	१०५
खत्म शोरे तूफ़ां था	१०६
मुझे सह्ल हो गईं	१०७
२. 'आरिफ़' अब्दलमतीन--	
तेरे बाज़ुओंका सहारा	१०८
३. 'बाक़ी' सिद्दीक़ी--	
पंछी चहके फूल खिले	१०९
४. 'हफ़ीज़' जालन्धरी--	
अगर मौज है	१०९
५. मुइन अहसन 'जज़्बी'--	
मरनेकी दुआएँ	११०
हम दह्रके इस	११०
६. श्रीमती 'अदा' जाफ़री--	
नाज़ उठे कब	१११
७. 'ख़ुमार' बाराबंकवी--	
जन्नतकी आब-ओ-ताबसे	१११
८. 'फ़िराक़' गोरखपुरी--	
जमीं बदली, फ़लक बदला	११३
१. स्व० मीराजी--	
अनजाने नगर	११५
२. मुनीर नियाज़ी--	
बिछुड़के जाने वाले लोगो	११६
किस किससे हम	११६
३. 'साहिर' लुधियानवी--	
रातके राही	११७
४. हफ़ीज़ जालन्धरी--	
अपने मनमें प्रीत	११८
५. 'तनवीर' नक़वी--	
समझ न आए बात	१२०

'मजरूह' सुलतानपूरी--

ग़ज़ल

(१)

ये रुके-रुकेसे आँसू ये घुटी-घुटीसी आहें
युँही कब तलक ख़ुदाया ग़मे-ज़िन्दगी निबाहें
कहीं ज़ुल्मतोंमें घिरकर है तलाशे-दस्ते-रहबर[1]
कहीं जगमगा उठी हैं मेरे नक़्शे-पा[2] से राहें
तेरे ख़ानमाँ ख़राबोंका[3] चमन न कोई सहरा
ये जहाँ भी बैठ जाएँ वहीं इनकी बारगाहें[4]
कभी जादए-तलबसे[5] जो फिरा हूँ दिलशिकस्ता
तेरी आरज़ूने हँसकर वहीं डाल दी हैं बाहें

(२)

निगाहे-साक़िये-नामेहूबाँ[6] ये क्या जाने
कि टूट जाते हैं ख़ुद दिलके साथ पैमाने
मिली जब उनसे नज़र बस रहा था एक जहाँ
हटी निगाह तो चारों तरफ़ थे वीराने
हयात लग़ज़िशे-पैहमका[7] नाम है साक़ी
लबोंसे जाम लगा भी सकूँ ख़ुदा जाने

---

[1]पथप्रदर्शकके हाथकी खोज [2]पदचिन्ह [3]बरबाद होनेवालोंका [4]घर [5]माँगके मार्ग [6]जो साक़ी मेहरबान न हो उसकी निगाह [7]बार-बार भूलें करने

वह तक रहे थे, हमीं हँसके पी गये आँसू
वह सुन रहे थे, हमीं कह सके न अफ़साने
तबस्सुमोंने[1] निखारा है कुछ तो साक़ीके
कुछ अहले-दिलके[2] सँवारे हुए हैं मैख़ाने
ये आग और नहीं दिलकी आग है नादाँ
चिराग़ हो कि न हो, जल बुझेंगे परवाने
फ़रेबे-साक़िये-महफ़िल[3] न पूछिये 'मजरूह'
शराब एक है बदले हुए हैं पैमाने

(३)

ख़त्म शोरे-तूफ़ाँ था दूर थी सियाही भी
दमके दममें अफ़साना थी मेरी तबाही भी
इलतिफ़ात[4] समझूँ या बेरुख़ी कहूँ इसको
रह गई ख़लिश[5] बनकर उसकी कमनिगाही[6] भी
उस नज़रके उठनेमें उस नज़रके झुकनेमें
नग़मए-सहर[7] भी है, आहे-सुब्हगाही[8] भी
याद कर वो दिन जिस दिन तेरी सख़्तगीरीपर[9]
अश्क भरके उट्ठी थी मेरी बेगुनाही भी
पस्तिये-ज़मींसे[10] है रफ़अते-फ़लक[11] क़ायम
मेरी ख़स्ताहालीसे[12] तेरी कजकुलाही[13] भी
शमअ भी उजाला भी मैं ही अपनी महफ़िलका
मैं ही अपनी मंज़िलका राहबर भी राही भी

---

[1]मुस्कराहटोंने [2]दिलवालों [3]महफ़िलके साक़ीका धोखा [4]प्रेम [5]खटक [6]कम देखना, कम ध्यान देकर देखना [7]प्रभात-गान [8]प्रातःकालकी आह [9]कठोरता [10]धरतीकी निचाई [11]आकाशकी ऊँचाई [12]दुर्दशा [13]बादशाही, बाँकपन

गुम्बदोंसे पलटी है अपनी ही सदा 'मजरूह'
मसजिदोंमें की मैंने जाके दादख़ाही[1] भी

(४)

मुझे सह्ल[2] हो गईं मंजिलें वो हवाके रुख़ भी बदल गये
तेरा हाथ हाथमें आ गया कि चिराग़ राहमें जल गये
वो लजाये मेरे सवालपर कि उठा सके न झुकाके सर
उड़ी जुल्फ़ चेहरे पै इस तरह कि शबोंके राज़[3] मचल गये
वही बात जो वो न कह सके मेरे शेर-ओ-नग़मेमें[4] आ गई
वही लब न मैं जिन्हें छू सका क़दहे-शराबमें[5] ढल गये
तुझे चश्मे-मस्त[6] पता भी है कि शबाब[7] गर्मिये-बज़्म[8] है
तुझे चश्मे-मस्त ख़बर भी है कि सब आबगीने[9] पिघल गये
उन्हें कबके रास[10] भी आ चुके तेरी बज़्मे-नाज़के हादिसे[11]
अब उठे कि तेरी नज़र फिरे जो गिरे थे गिरके सँभल गये
मेरे काम आ गईं आख़िरश[12] यही काविशें[13] यही गर्दिशें[14]
बढ़ीं इस क़दर मेरी मंजिलें कि क़दमके ख़ार[15] निकल गये

---

[1]अपनी इच्छा पूर्तिकी कामना [2]आसान [3]रातोंके भेद [4]कविता और गीतों [5]शराबके बड़े प्याले [6]मदभरी आँखों [7]जवानी [8]महफ़िलकी गर्मी [9]बुलबुले [10]मुआफ़िक़ [11]प्रेमकी महफ़िलकी घटनाएँ [12]अन्तमें [13]प्रयत्न [14]गर्दिश, घटनाचक्र [15]काँटे

'आरिफ़' अब्दुलमतीन--

ग़ज़ल

तेरे बाज़ुओंका सहारा तो ले लूँ मगर उनमें भी रच गई है थकन
मैं सहरासे बचकर चमनमें तो आऊँ पै सहरासे कुछ कम नहीं यह चमन
मेरी ज़ीस्तकी[1] राह तारीक[2] थी चाँद बनकर तुम आये तो रोशन हुई
राह ये आज फिर तीरा-ओ-तार[3] है ग़ालिबन[4] चाँदको लग गया है गहन[5]
हर एक सिम्त नागिनकी सूरत लपकती हुई तीरगीसे[6] हरासाँ[7] न हो
अजब क्या कि लौ दे उठे मेरे लम्से-फ़रोज़ाँसे[8] तेरा सुलगता बदन
ये अश्कोंसे भीगी हुई मुस्कराहट मुरव्वतका एजाज़[9] है वरना हम
ग़मोंकी हवाओंमें उड़ता हुआ देखकर आ रहे हैं कोई पैरहन[10]
फ़िराक़े लब-ओ-ज़ुल्फ़पर मुनहसर[11] कम ही पाई है अहले-वफ़ाकी[12] तड़प
तुम आग़ोशके[13] तंग हल्क़ेमें[14] हो फिर भी हर लमहा अफ़ज़ूँ[15] है दिलकी जलन
मेरे प्यारको एक नये मोड़पर देखकर यूँ मेरी जाँ तअज्जुब न कर
बदलते रहे हैं बदलते रहेंगे ज़मानेके हमराह दिलके चलन

---

[1]जीवनकी [2]अँधेरी [3]अन्धकारपूर्ण [4]सम्भवतः [5]ग्रहण [6]अँधियारी [7]निराश, परेशान [8]ज्योतिर्मय स्पर्श [9]चमत्कार [10]पोशाक [11]होंठों और काकुलोंके वियोगपर निर्भर [12]वफ़ा करनेवालों, प्रेमियों [13]गोद, बाहुपाश [14]घेरे [15]बढ़ रही है

बाक़ी सिद्दीक़ी—

ग़ज़ल

पंछी चहके फूल खिले बिछड़े साथी आन मिले
मैं कहता हूँ बात गई तुम कहते हो ज़ख़्म सिले
बेदारीका[1] नाम फ़िराक़[2] आँख लगी और आप मिले
बास भी हम तक आ न सकी फूल कुछ इतनी दूर खिले
क़दम-क़दमपर पहरा था मिलनेवाले फिर भी मिले
कितने तूफ़ाँ आये मगर अपनी जगहसे हम न हिले
जिनपर नाज़ किया 'बाक़ी' ऐसे भी कुछ दाग़ मिले

हफ़ीज़ जालन्धरी—

ग़ज़ल

अगर मौज है बीच धारे चला चल वगर न[3] किनारे किनारे चला चल
इसी चालसे मेरे प्यारे चला चल गुज़रती है जैसे गुज़ारे चला चल
तेरे साथ बहुरूपिये चल रहे हैं नयेसे नया रूप धारे चला चल
यहाँ तो बहरहाल झुकना पड़ेगा नहीं तो किसी और द्वारे चला चल
ख़ुदाको न तकलीफ़ दे डूबनेकी किसी नाख़ुदाके[4] सहारे चला चल
ये ऊपरका तबक़ा[5] ख़ला[6] है ख़ला है हवाओ-हवसके[7] ग़ुबारे चला चल

---

[1]जागरणका [2]वियोग [3]नहीं तो, वरना [4]मल्लाह, नाविक [5]वर्ग [6]शून्य [7]माया और लोभ

मुईन अहसन 'जज़्बी'—

ग़ज़ल

(१)

मरनेकी दुआएँ क्यों माँगूँ, जीनेकी तमन्ना कौन करे
यह दुनिया हो या वह दुनिया, अब ख़्वाहिशे-दुनिया कौन करे
जब कश्ती साबित-ओ-सालिम[1] थी, साहिलकी[2] तमन्ना किसको थी
अब ऐसी शिकस्ता[3] कश्तीपर साहिलकी तमन्ना कौन करे
जो आग लगाई थी तुमने उसको तो बुझाया अश्कोंने[4]
जो अश्कोंने भड़काई है, उस आगको ठंडा कौन करे
दुनियाने हमें छोड़ा 'जज़्बी' हम छोड़ न दें क्यों दुनियाको
दुनियाको समझकर बैठे हैं अब दुनिया दुनिया कौन करे

(२)

हम दह्रके[5] इस वीरानेमें, जो कुछ भी नज़ारा करते हैं
अश्कोंकी ज़बाँमें कहते हैं, आहोंमें इशारा करते हैं
क्या तुझको पता, क्या तुझको ख़बर, दिन रात ख़यालोंमें अपने
ए काकुले-गीती[6] हम तुझको दिन रात सँवारा करते हैं
ए मौजे-बला[7] उनको भी ज़रा दो चार थपेड़े हल्केसे
कुछ लोग अभी तक साहिलसे तूफ़ाँका नज़ारा करते हैं
क्या जानिये कब यह पाप कटे, क्या जानिये कब वह दिन आये
जिस दिनके लिये हम ए 'जज़्बी' क्या कुछ न गवारा करते हैं

---

[1]नौका टूटी न थी [2]किनारे [3]टूटी [4]आँसुओं [5]संसार [6]युगकी काकुल [7]भयानक लहर

श्रीमती 'अदा' जाफ़री--

ग़ज़ल

नाज उठे कब दीदएतरके हँस-हँसकर खाये हैं चरके
किसके सर इलजाम धरोगे बेपरवा अन्दाजे-नजरके
दिन भी रास आएँ कि न आएँ रातें तो काटीं सर-भरके
आँख उठी थी बेगानासी खाये हैं दिलने ये भी चरके
रातने तुमको लूटा होगा हमने धोखे खाये सहरके
किसको खबर थी हँसते-हँसते राज खुलेंगे दीद-ए-तरके
थक गई आँखें मंजिल तकते पाँव हुए हैं मन-मन भरके
टूटी माला कौन समेटे बिखरे सपने जीवन भरके
मोती बिखरे सपने टूटे क्या-क्या हैं एहसान सहरके
आज दिवाने खुल खेलेंगे उमरें बीतीं आहें भरके

'खुमार' बाराबंकवी

ग़ज़ल

ज़ब्तकी[1] आब-ओ-ताबसे इश्क़को जगमगाय जा
हाँ यूँही झूम-झूमकर चोट पै चोट खाय जा
हुस्नको छेड़-छेड़कर इश्क़को आजमाय जा
आग लगा-लगाके ख़ुद आग लगी बुझाय जा

---

[1]सहनशीलता

जुर्म पै जुर्म कर यूँही अश्क यूँही बहाय जा
रहमते-किरदिगारको[1] हाँ यूँही गुदगुदाय जा
चोट पै चोट खाय जा, ज़ख़्म पै ज़ख़्म खाय जा
उसकी निगाहे-नाज़में ख़ुदको हसीं बनाय जा
राहे-वफ़ासे मुँह न मोड़, आस न तोड़ जी न छोड़
वह यूँही ज़ुल्म ढाये जाय, तू यूँही मुस्कराय जा
देख ठहर न बेख़बर, मंज़िलें-इश्क़ दूर है
ख़ुदको भी पीछे छोड़ता आगे क़दम बढ़ाय जा
मौत भी गुनगुनाय जाय तेरी नवाके[2] साथ-साथ
साज़े-नफ़स[3] पै इस तरह नग़मए-ज़ीस्त[4] गाय जा
नाज़में[5] और नियाज़में[6] चलती रहे इसी तरह
तुझको रुलाये जाय वह और तू मुस्कराय जा
बादए-आतशीं[7] न छोड़ ख़न्दए-दिलनशीं[8] न छोड़
ग़मकदए-हयातमें[9] ग़मकी हँसी उड़ाय जाय
दर्द उठे तो मुस्करा, चोट लगे तो दे दुआ
हाँ इसी आन-बानसे उसकी जफ़ा पै छाय जा
तेरे लिये 'ख़ुमार' ने जान भी दे दी बेवफ़ा
तू भी 'ख़ुमार' के लिये अश्क ही दो बहाय जा

---

[1]ईश्वरकी दया [2]लय [3]साँसके बाजे [4]जीवन-गीत [5]रूप [6]रूपकी पूजा, या प्रेम [7]शराब (आगकी शराब, या आगसी शराब) [8]दिलमें बैठनेवाली हँसी [9]दुखपूर्ण जीवन

'फ़िराक़' गोरखपुरी—

ग़ज़ल

ज़मीं बदली, फ़लक[1] बदला मज़ाक़े-ज़िन्दगी[2] बदला
तमद्दुनके[3] क़दीम आहंग[4] बदले आदमी बदला
ख़ुदा-ओ-अह्रमन[5] बदले निज़ामे-ज़िन्दगी बदला
शऊरे-ख़ैर-ओ-शर[6] बदले मज़ाक़े-काफ़िरी[7] बदला
नये इंसानका जब दौरे-ख़ुद ना-आगही[8] बदला
रमूज़े बेख़ुदी[9] बदले तक़ाज़ाए ख़ुदी[10] बदला
बदलते जा रहे हैं हम भी दुनियाको बदलनेमें
नहीं बदली अभी दुनिया तो दुनियाको अभी बदला
नई मंज़िलके मीरे-कारवाँ भी और होते हैं
पुराने ख़िज्रे[11]-रह बदले वो तर्ज़े-रहबरी[12] बदला
कभी सोचा भी है इस नज़्मे-आलमके ख़ुदावन्दो
तुम्हारा हश्र क्या होगा जो ये आलम कभी बदला

---

[1]आस्मान [2]जीवनकी रुचि [3]संस्कृति [4]पुराने तरीक़े और पुरानी आवाज़ें [5]शैतान [6]नेकी बदी, पाप पुण्यकी चेतना [7]काफ़िरी—काफ़िर शब्द बहुत बदनाम है शाब्दिक अर्थ है उलटी राह चलनेवाला फिर कई और अर्थ और इशारे इसमें सम्मिलित हो गये हैं। ख़ूबसूरत, आकर्षक या मायाकी जगमगाहटसे आकर्षित होनेवाला रसीला, रसका प्रेमी, मज़ाक़=रुचि, परख संस्कार [8]आत्म-ज्ञानरहित युग [9]आत्मविस्मृति या तल्लीनताके भेद [10]आत्म-ज्ञानकी माँग [11]पथप्रदर्शक [12]पथप्रदर्शनका ढंग

इधर पिछलेसे इस नज़्मे-कुहनपर[1] रात भारी है
उधर बेदारिये-जमहूरका[2] अन्दाज़ भी बदला
सलामत सोज़े-पिनहा[3] बज़्मे-गीती[4] अब चराग़ाँ है
इसी इक शमअपर हमने जहाने-तीरगी[5] बदला
नये मन्सूर[6] हैं सदियों पुराने शेख़-ओ-क़ाज़ी हैं
न फ़तवे कुफ़्रके बदले न उज़्रे-दार ही बदला
ब-फ़ैज़े-आदमे-ख़ाकी यह दुनिया आज दुनिया है
इसी ज़र्रेने दौरे मेह्‌‌र-ओ-माह-ओ-मुतरी बदला
बताए तो बताए इसको तेरी शोख़िए पिनहाँ
तेरी चश्मे-तवज्जह है कि तर्ज़े-बेरुख़ी[7] बदला
सितारे जागते हैं रात लट छटकाये सोती है
दबे पाऊँ किसीने आके ख़्वाबे-ज़िन्दगी बदला
फ़िराक़ अहले-सलफ़की[8] हमनवाई[9] ता-बके आख़िर
वह बज़्मे-ज़िन्दगी बदली वह तर्ज़े शायरी बदला

---

[1]पुरानी व्यवस्था [2]जनजागृति [3]आन्तरिक जलन बनी रहे [4]संसारकी सभा [5]तिमिरका संसार [6]मंसूरपर 'अहं ब्रह्म' कहनेपर कुफ़्र (नास्तिकता) का फ़तवा लगाया गया था। आजके मंसूर अर्थात जनसाधारण अपनेको सर्वशक्तिमान बता रहे हैं। पुराने ख़यालवाले शासक इसे नास्तिकता बताते हैं और नए बाग़ियोंको पुराने क़ानूनके अनुसार फाँसी देना चाहते हैं [7]मिट्टीसे बने आदमीके पुण्यप्रतापसे यह दुनिया जगमगा उठी है और सूर्य चाँद और नक्षत्रोंकी गति इसी मिट्टीके कण (मनुष्य)ने बदल दी है [8]तेरी आन्तरिक चंचलता ही बता सकती है कि यह तेरी प्रेमदृष्टि है या तेरी उदासीनताने बहुरूप धारण किया है [9]पूर्वजोंके स्वरमें स्वर मिलाना

स्व० मीराजी—

गीत

अनजाने नगर मनमाने थे, मनमाने नगर अनजाने रहे

अपनी बातोंकी मस्तीमें
सुनते रहे दिलकी बस्तीमें
वही गीत जो कुछ मनमाने रहे
वही राग जो सुखके बहाने रहे

रातें बीतीं दिन बीत गये
रातें भी नई फिर दिन भी नये
मूरख मन ऐसा हटीला है
इसे याद वो रंग पुराने रहे

अनहोनीका जिसे ध्यान रहा
होनीने उसे चुपकेसे कहा
न वह बातें रहीं न ज़माने रहे
जो रहे भी तो बाक़ी फ़साने रहे

अब गीतमें रस टपकाते हैं
यों दिलकी आग बुझाते हैं
अब सबके लिये वही बावले हैं, जो बीते समय में सियाने रहे

मुनीर नियाज़ी—

दो गीत

(१)

बिछुड़के जानेवाले लोगो !
जब भी रातको बादल बरसे हमको ध्यानमें लाकर इतना
रोओ कि आँखोंका काजल बहकर सुन्दर गाल भिगो दे

बिछुड़के जानेवाले लोगो !!
जब भी रातको बिजली चमके चाहतके संगीत सुनाकर हमें बुलाओ
हम भी हवाके झोंकोंमें हर उजड़े नगरमें जाते हैं
और गीत पुराने गाते हैं

(२)

किस-किससे हम प्रीत निभाएँ कौनसी सूरत मनमें बिठाएँ
साँझ सवेरे किसको ढूँढने कुंजगलियोंमें जाएँ
किससे प्रीत निभाएँ

नित्य नई एक सुन्दर नारी हृदय बीच समाये
जिस नारीको मैं चाहूँ वह दूर खड़ी शर्माए
ऐसे भेद समझ ना आएँ

लो फिर साँझ सुहानी आई ध्यानमें लाखों बातें लाई
सूने घरोंमें सुन्दरियोंने नयन जोत जलाई
किस राधा संग रास रचाएँ

साहिर लुधियानवी—

गीत

रातके राही थक मत जाना सुबहकी मंज़िल दूर नहीं
धरतीके फैले आँगनमें
पल दो पल है रातका डेरा
ज़ुल्मका सीना चीरके देखो
झाँक रहा है नया सवेरा
ढलता दिन मजबूर सही, चढ़ता सूरज मजबूर नहीं
रातके राही थक मत जाना सुबहकी मंज़िल दूर नहीं
सदियों तक चुप रहनेवाले
अब अपना हक़ लेके रहेंगे
जो करना है खुलके करेंगे
जो कहना है साफ़ कहेंगे
जीते जी घुट-घुटके मरना, इस जगका दस्तूर नहीं
रातके राही थक मत जाना, सुबहकी मंज़िल दूर नहीं
टूटेंगी बोझिल जंज़ीरें
जागेंगी सोई तक़दीरें
लूट पे कबतक पहरा देंगी
ज़ंग[1] लगी ख़ूनी शमशीरें
रह नहीं सकता इस दुनियामें जो सबको मंज़ूर नहीं
रातके राही थक मत जाना सुबहकी मंज़िल दूर नहीं

---

[1]मोर्चा

हफ़ीज़ जालन्धरी—

प्रीतका गीत

(१)

अपने मनमें प्रीत
बसा ले अपने मनमें प्रीत
मन मन्दिरमें प्रीत बसाले ओ मूरख ओ भोले भाले
दिलकी दुनिया कर ले रोशन अपने घरमें जोत जगा ले
प्रीत है तेरी रीत पुरानी भूल गया ओ भारतवाले
भूल गया ओ भारतवाले प्रीत है तेरी रीत
बसाले अपने मनमें प्रीत

(२)

अपने मनमें प्रीत
बसाले अपने मनमें प्रीत
क्रोध कपटका उतरा डेरा छाया चारों खूँट अँधेरा
शैख़ बरहमन दोनों रहज़न[1] एकसे बढ़कर एक लुटेरा
ज़ाहिरदारोंकी[2] संगतमें कोई नहीं है संगी तेरा
कोई नहीं है संगी तेरा मन है तेरा मीत
बसाले अपने मनमें प्रीत

---

[1]लुटेरा [2]दिखलावेकी बातें करनेवालों

(३)

अपने मनमें प्रीत
बसा ले अपने मनमें प्रीत
भारत माता है दुखियारी दुखियारे हैं सब नरनारी
तू ही उठा ले सुन्दर मुरली तू ही बन जा श्याम मुरारी
तू जागे तो दुनिया जागे जाग उठें सब प्रेम पुजारी
जाग उठें सब प्रेम पुजारी गाएँ तेरे गीत
बसाले अपने मनमें प्रीत

(४)

अपने मनमें प्रीत
बसाले अपने मनमें प्रीत
नफ़रत एक आज़ार[1] है प्यारे दुखका दारू प्यार है प्यारे
आजा असली रूपमें आजा तू ही प्रेम अवतार है प्यारे
यह हारा तो सब कुछ हारा मनके हारे हार है प्यारे
मनके हारे हार है प्यारे मनके जीते जीत
बसाले अपने मनमें प्रीत

(५)

अपने मनमें प्रीत
बसाले अपने मनमें प्रीत
देख बड़ोंकी रीत न जाए सर जाए पर मीत न जाए
मैं डरता हूँ कोई तेरी जीती बाज़ी जीत न जाए
जो करना है जल्दी करले थोड़ा वक़्त है बीत न जाए
थोड़ा वक़्त है बीत न जाए वक़्त न जाए बीत
बसाले अपने मनमें प्रीत

---

[1] बीमारी, रोग

'तनवीर' नक़वी—

गीत

समझ न आए बात
टप टप बूँदें टपक रही हैं
या रोती है रात
समझ न आए बात
टिम टिम जलमें टपकें, नाचें
यूँ जैसे जल परियाँ
ऐसे, जैसे छूट रही हैं
पानीकी फुलझड़ियाँ
किस झूमरके मोती हैं ये
किस मालाकी लड़ियाँ
उनको गाता सावन बोलूँ
या रोती बरसात
समझ न आए बात
किसने जानीं
उन आँखोंकी
वे बोलोंकी बातें
सोचके आए
जो—सब भूले
उनकी अनोखी घातें
उनसे पलमें
हो जाती हैं
कुछ जीतें कुछ मातें

६

नई चेतना

हिन्दुस्तानकी नई चेतना बंगालके काल, सन् १९४७के हत्याकांड या झूठी आज़ादीके मातम और हाय-हाय तक सीमित नहीं। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवनके अनगिनत पहलू हमारी युगयुगान्तरकी बदलती हुई संस्कृति और प्राचीनकालसे आज तक मनुष्य जातिकी संस्कृति और उस इतिहासके मर्म और सन्देश इन सबको आजका प्रगतिशील साहित्य वानी देता है। इन कविताओंमें उर्दूके कवि प्रगतिवादकी अनेक राग-रागिनियोंको छेड़ते हुए नज़र आएँगे। विषय और शैली और काव्य-रचनाकी टेकनीककी एकसे एक मिसाल इन कविताओंमें मिलेगी। उर्दू कविता अपनी पृष्ठभूमिकी पूरी चेतना रखती हुई, अपनी परम्पराओं और रूढ़ियोंसे पूरा-पूरा लाभ उठाती हुई, सम्पूर्ण भारतीय साहित्यके स्वरोंसे गुंजित होती हुई आज सदियोंके बन्धन तोड़ रही है। उसमें नई खनक, नई झंकारें, नए चढ़ाव उतार, नई लय, नए ताल सम, नई आँच, नई गर्मियाँ, नई ताज़गी और नई ज़िन्दगी नज़र आती हैं। शीर्षकों और विषयोंका बाहुल्य और उनके प्रकार देखनेकी चीज़ें हैं। आज उर्दू कविता पर नई बहारें फट पड़ी हैं, नई जवानियाँ अपनी उठान दिखा रही हैं, कविताकी नई रूपरेखाएँ चमक उठी हैं। आवाज़ें नए साँचोंमें ढाली जा रही हैं, ख़यालातकी नई दुनियाके दरवाज़े खुल रहे हैं, सामूहिक जीवनको नया आत्मज्ञान मिल रहा है। आज उर्दू शायरी अपनी आवाज़ें वर्त्तमान विश्वकाव्यकी आवाज़ोंसे मिला रही है। नई तरकीबें ढाली जा रही हैं। पुराने शब्दोंके नए प्रयोग हो रहे हैं। भाषामें नए संकेत पैदा हो

रहे हैं। काव्यचेतनामें नई परछाइयाँ और नई रोशनियाँ चलती-फिरती हुई नज़र आ रही हैं। विज्ञान, समाजशास्त्र, राजनीति, तमाम कलाएं, दर्शन, युगआत्मा सबके सब आजकी उर्दू कवितामें उजागर हो रहे हैं। इन कविताओंमें भाव, रस, संगीत, आशा-निराशा, करुणा, मनोविनोद, दुख-सुख, नई आकांक्षाओं, नए जीवन स्वप्न, यथार्थ और आदर्श, नई तहज़ीव मिलकर नए संगीत पैदा कर रहे हैं। इतने रंगारंग भाव न प्राचीन साहित्यमें मिलते हैं न शायद भारतकी दूसरी भाषाओंके समकालीन साहित्यमें। सबसे बड़ी सफलता प्रगतिशील उर्दू कवियोंको इस बातमें हुई है कि उनकी अधिकांश रचनाएँ और उनकी गम्भीरसे गम्भीर वाणियाँ उन लोगोंकी समझमें भी आ जाती हैं जिन्होंने उर्दू नहीं पढ़ी। खड़ी बोलीके तमाम पहलुओं और उसकी समस्त सम्भावनाओंपर आजके उर्दू कवियोंको असाधारण अधिकार प्राप्त है। हमारे राष्ट्रीय जीवनके ऊँचेसे ऊँचे कामों और विभागों जैसे राजनीति, शासन, विश्वविद्यालयों और दूसरे शिक्षित कर्मक्षेत्रोंका स्तर जितना ऊँचा है और वातावरण जितना गम्भीर है उतना ही ऊँचा स्तर और उतना ही गम्भीर वातावरण इन कविताओंमें मिलेगा। ये कविताएँ हमारे राष्ट्रीय जीवनको मनोरंजन भी देंगी और उस जीवनको शिक्षित और सुसंस्कृत बनानेका साधन और माध्यम भी साबित होंगी। आजकी सफल उर्दू कविता हमारे समाजके लिये एक बड़ा विश्वविद्यालय बन गई है। राष्ट्रीय आत्माका पूरा चमत्कार इन कविताओंमें नज़र आता है। ये कविताएं नए भारतके सांस्कृतिक जीवनको नई चेतना देती हैं, नए मूलमंत्र देती हैं और उसे नए ढंगसे सजीव और क्रान्तिआत्मक बनाती हैं।

वर्त्तमान युगमें इतिहासकी प्रगति और समयका वेग बहुत तीव्र हो चुका है। किसी युग और किसी देशका साहित्य उस युग और उस देशकी वर्त्तमान चेतनाका दर्पण होता है। आजका प्रगतिशील उर्दू साहित्य इस युगकी ऐतिहासिक प्रेरणाओंको ग्रहण कर चुका है और इन कविताओंमें

चेतनाकी जो तीव्रता और वेग या तेज़ी या स्फूर्ति हमें मिलती है वह ध्यान देने योग्य चीज़ है। भारतके उच्चसे उच्च शिक्षित समाजकी आत्मा और उसकी धारणाएँ इन कविताओंमें हमें मिलती हैं। मरते हुए भारतके अनेक चित्र दिखाते हुए ये कविताएँ तेज़ीसे नया जन्म लेते हुए भारतकी ओर बढ़ रही हैं। आजकी उर्दू कविता भारतके दिल व दिमाग़का प्रतिनिधित्व कर रही है। वह हमारे ऊँचेसे ऊँचे विचारकोंकी सहयोगिनी बन गई है और हमारे देशके जनसाधारणकी ही नहीं बल्कि शिक्षितोंकी शिक्षक बन गई है। इसके साथ-साथ हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि पाठकोंका भी कुछ कर्त्तव्य है। ऊँचा मनोरंजन और ऊँची शिक्षा मंत्र अवश्य हैं लेकिन कोई छूमंतर नहीं हैं इसलिये हर पाठकको निजी रूपसे इन कविताओंमें डूबना पड़ेगा और जहाँ हँसी खेलके अवसर भी इन कविताओंमें आएँ उस हँसीखेलके पीछे जीवनकी जो आलोचना है उसे समझना पड़ेगा और कलाके रहस्योंको बूझना पड़ेगा।

सूची

	पृष्ठ
१. 'जोश' मलीहाबादी—	
आशाका राग	१२७
धन राजाका	१२७
२. 'शाद' आरिफ़ी—	
सास और बहू	१३३
बेटेकी शादी	१३५
३. अख़्तरुल ईमान—	
पस मंज़र	१३८
अनजान	१३९
जब और अब	१४०
अजनबी	१४१
अह्दे-वफ़ा	१४२
सवालिया निशान	१४२
यों न कहो	१४३
४. मुहम्मद सफ़दर—	
एक लमहा	१४४
५. 'अर्श' मलसियानी—	
एशियाको छोड़ दो	१४५
६. श्रीमती बिलक़ीस जमाल—	
दरियाके किनारे	१४७
७. स्वामी सारहरवी—	
क्या खूब ये अंजाम है	१४८
८. 'फ़िराक़' गोरखपुरी—	
बन्देमातरम्	१५०
माज़ी परस्त	१५९
नई चेतना	१६४
कांग्रेस, मुस्लिम लीग	१६९
९. अली सरदार जाफ़री—	
तुम्हारी आँखें	१७१
१०. मख़मूर जालन्धरी—	
चेमीगोइयाँ	१७३
गुजिया पनवाड़िन	१७८
११. नरेश कुमार 'शाद'—	
चराग़ाँ	१८३
१२. क़तील शिफ़ाई—	
ताजिरोंके देशमें	१८५
१३. अब्दुलमजीद भट्टी—	
परवाज़	१८७
चोर	१९०

पृष्ठ

१४. इब्ने इन्शा--
सराय १९१
१५. श्रीमती अदा जाफ़री--
ये मेरे दिलको १९३
१६. फ़ैज़ अहमद "फ़ैज़"--
मुझसे पहलीसी मुहब्बत १९५
चन्द रोज़ और मेरी जान १९६
हल्के झोंके १९७
१७. अख़्तर उरैनवी--
कोयल १९८
१८. मुईन अहसन 'जज़्बी'--
फ़ितरत एक मुफ़लिसकी नज़रमें २०२
मौत २०३
१९. मख़्दूम मुहीउद्दीन--
वतनकी आज़ादी २०४
मशरिक़ २०६
मौतका गीत २०७
शायर २०८
२०. 'राही' मासूमरज़ा--
जवान २०९
२१. अदम--
सुहाग २१२

पृष्ठ

२२. मसऊद हुसैन--
गुलामोंका नाच २१२
२३. अहमद नदीम क़ासिमी--
थपकी २१४
२४. 'तेग़' इलाहाबादी--
रात सुनसान है २१५
२५. तालिब बाग़पती--
दहक़ानी लड़की २१८
२६. शेर अफ़ज़ल जाफ़री--
हीरके देसमें २१९
२७. मजीद अहमद--
काँटे कलियाँ २२१
२८. जाँनिसार 'अख़्तर'--
हचकोले २२२
शादीकी सालगिरह २२२
खाके-दिल २२४
२९. अनवर जलाल--
छः कविताएँ २२८
३०. मजाज़--
रात और रेल २२९
अँधेरी रातका मुसाफ़िर २३३
३१. साहिर लुधियानवी--
तुलूए-इश्तराकियत २३६
आवाज़े-आदम २३७

	पृष्ठ
३२. तख़्तसिंह--	
भूली बिसरी रात	२३८
३३. राजा मेंहदी अली ख़ाँ--	
टेढ़ी लकीर	२४०
३४. रज़ी अख़्तर शौक़--	
उनके नाम	२४०
३५. 'पयाम' फ़तेहपुरी--	
चौपदे	२४६
३६. मुज़फ़्फ़र अली सैयद--	
होरी	२४७
३७. कैफ़ी आज़मी--	
हक़ीक़तें	२४८
३८. सैयद मुत्तलबी फ़रीदाबादी--	
इस सावनमें उस सावनकी याद	२५०
धरती माँ	२५२

'जोश' मलीहाबादी--

आशाका राग

तुझे चाँदकी है अगर लगन, तो सुखीके बदले दुखी न बन
वो छटा गहन, वो छटा गहन, वो छटा गहन, वो छटा गहन
तेरा इससे क्यों है उदास मन कि तेरे गुलों पै[1] नहीं फबन
वो खिला चमन, वो खिला चमन, वो खिला चमन, वो खिला चमन
तेरे दिलमें इससे है क्यों घुटन, कि घुटा घुटा सा है फूल बन
वो चली पवन, वो चली पवन, वो चली पवन, वो चली पवन
तू है ख़ाक ? छोड़ यह ख़ाकपन, तेरे पाँव चूमने जान-मन
वो झुका गगन, वो झुका गगन, वो झुका गगन, वो झुका गगन

धन राजाका जो पाये है लौंडा फ़क़ीरका

('नज़ीर' अकबराबादीके रंगमें)

(१)

लिक्खा पढ़ा तो ख़ैरसे कुछ भी नहीं मगर
उलझाके डाल देता है अख़बार इधर उधर
जाहिल है और इल्मका रखता है कर्रो-फ़र[2]
रंगीन मोटी मोटी किताबें ख़रीद कर

---

[1] फूलों [2] शान

'शो-केस'में जमाए है लौंडा फ़क़ीरका
धन राजाका जो पाए है लौंडा फ़क़ीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फ़क़ीरका

(२)

कुनबेको काट छाँटके नातोंको तोड़के
सिर्फ़ एक ज़रकी चाहसे रिश्तेको जोड़के
लुत्फ़-ओ-अता-ओ-जूदके[1] वारोंको छोड़के
कुत्तेकी तरह भाईको अपने भँभोड़के
माताकी गत बनाए है लौंडा फ़क़ीरका
धन राजाका जो पाये है लौंडा फ़क़ीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फ़क़ीरका

(३)

मन उससे यह कहे है कि ऐसा जतन करो
ले लो जो हाथ आए पर एक पाई भी न दो
इसका ही यह असर है कि जब चाहे देख लो
इस कानसे सुने है जो चन्देकी बातको
उस कानसे उड़ाए है लौंडा फ़क़ीरका
धन राजाका जो पाए है लौंडा फ़क़ीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फ़क़ीरका

(४)

मैदानमें वो ठहरेंगे जो सूर बीर हैं
वो क्या धनी बनेंगे जो दिलके फ़क़ीर हैं

---

[1]दया, दान, ख़ैरात

इस जगमें पोतड़ोंके[1] जो यारो अमीर हैं
गम्भीरता लिये हुए जिनके खमीर[2] हैं
सुफ़्त उनकी धज उड़ाए है लौंडा फ़क़ीरका
धन राजाका जो पाए है लौंडा फ़क़ीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फ़क़ीरका

(५)

बातोंमें है मिठास तो लहजेमें[3] प्यार है
गोया बड़ा रफ़ीक़, बड़ा ग़मगुसार[4] है
जब तक कि ख़ैरियत है बड़ा यारग़ार[5] है
पर जब यह देखे है कि मुसीबतमें यार है
यारीसे हाथ उठाए है लौंडा फ़क़ीरका
धन राजाका जो पाए है लौंडा फ़क़ीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फ़क़ीरका

(६)

हर रात मनचलोंको घर अपने बुला बुला
हँस हँसके बार बार और उनको हँसा हँसा
धन सबका ऐंठ लेनेको दारू पिला पिला
ताशोंको फेंट फेंटके गर्दन घुमा घुमा
पहरों जुआ खिलाए है लौंडा फ़कीरका
धन राजाका जो पाए है लौंडा फ़क़ीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फ़क़ीरका

---

[1]जो बड़े घरानोंमें पैदा होते हैं, पुश्तैनी अमीर [2]मिट्टी, हाड़मांस [3]स्वर, टोन [4]दुख बटानेवाला [5]दोस्त

(७)

कोई कवी हो, या कोई लेखक हो पुख़्ताकार[1]
पंडित हो कोई या कोई नेता हो नामदार
विद्वान हो कि हो कोई दानाए-रोज़गार[2]
इन सबका नाम सुनते ही भागे है नाबकार[3]
भडुवोंके नाज़ उठाए है लौंडा फ़क़ीरका
धन राजाका जो पाए है लौंडा फ़क़ीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फ़क़ीरका

(८)

सिन ढल चुका है इससे बहुत इख़्तलाज[4] है
हर पल दवाएँ कुटती हैं हर दम इलाज है
ग़म है जो ज़ोर कल था वह मफ़क़ूद[5] आज है
बस रात भर मसा[6] है तो दिन भर मसाज[7] है
कुश्ते पै कुश्ते[8] खाए है लौंडा फ़क़ीरका
धन राजाका जो पाए है लौंडा फ़क़ीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फ़क़ीरका

(९)

बोतलकी आग बर्फ़सी छातीमें डालकर
ठिठरी हुई तरंगका अंडा उबालकर
कन्टरसे इत्र, जेबसे गोली निकालकर
रंडीको लिल्ली घोड़ीके साँचेमें ढालकर
बेहरफ़ा[9] हिनहिनाए है लौंडा फ़क़ीरका

---

[1]पक्का [2]माना हुआ पंडित [3]नालायक़ [4]धड़का [5]नहीं है [6,7]मलवाना, दलवाना, मालिश [8]भस्म [9]बेतरह

धन राजाका जो पाए है लौंडा फ़क़ीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फ़क़ीरका

(१०)

लोगों पै मुफ़्त रोब जमानेके वास्ते
पुश्तोंके घटियापनको छिपानेके वास्ते
यारोंको ठाट बाट दिखानेके वास्ते
जरका दिलों पै सिक्का बिठानेके वास्ते
नोटोंको खड़खड़ाए है लौंडा फ़क़ीरका
धन राजाका जो पाए है लौंडा फ़क़ीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फ़क़ीरका

(११)

बख्शे जो पान, समझे बहा ख़ून बनके धन
सिगरेट जो दे किसीको तो जल जाय तन बदन
एक बूंद मय पिलाए तो पछताए एक मन
पड़ जाय मेज़पोश पै हलकीसी गर शिकन
तो पहरों तिलमिलाए है लौंडा फ़क़ीरका
धन राजाका जो पाए है लौंडा फ़क़ीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फ़क़ीरका

(१२)

असली अमीर हूँ ये दिखानेके वास्ते
पुरखोंकी गन्दगीको छिपानेके वास्ते
जो बू बसी है उसको दबानेके वास्ते
माता पिताका मैल छुड़ानेके वास्ते
दो दो पहर नहाए है लौंडा फ़क़ीरका

धन राजाका जो पाए है लौंडा फ़क़ीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फ़क़ीरका

(१३)

बहुरूपिया अनोखा, मदारी है बेबदल[1]
हर चन्द नातवाँ है, दिखाता है खुदको यल[2]
पर डाँट दो जो कसके तो गिर जाय मुँहके बल
इसपर भी दोनों मूछोंकी चोंचोंको देके बल
मुँहपर दुमें उठाए है लौंडा फ़क़ीरका
धन राजाका जो पाए है लौंडा फ़क़ीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फ़क़ीरका

(१४)

जब रागिनी सुने है तो ख़िफ़्फ़त[3] मिटानेको
सर बार बार मोड़े है सिगरेट जलानेको
गर्दनको भी हिलाए है उल्लू बनानेको
मैं राग जानता हूँ फ़क़त यह जतानेको
रह रहके मुस्कराए है लौंडा फ़क़ीरका
धन राजाका जो पाए है लौंडा फ़क़ीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फ़क़ीरका

(१५)

गर हम कहें कि आज तो राजा हो जमघटा
हो नाच रंग, धूम धड़क्का, अहा अहा

---

[1]बेमिसाल [2]पहलवान [3]झेंप

तो एक हीजड़ा भी न बुलवाए बेहया
पर एक इशारा पाते ही बस कोतवालका
सौ रंडियाँ नचाए है लौंडा फ़क़ीरका
धन राजाका जो पाए है लौंडा फ़क़ीरका
क्या क्या ठसक दिखाए है लौंडा फ़क़ीरका

'शाद' आरिफ़ी—

सास और बहू

उधर मुँह फेर लो अन्धे कहारो
बहन, डोलेसे दूल्हनको उतारो
मिलेगा सबको 'हक़' चीखें न मारो
मैं सदक़े जाऊँ आँखोंपर बिठा लूँ

बलाएँ लेके सीनेसे लगा लूँ
जरा ठहरो गिलौरी तो चबा लूँ
इसी कमरेमें, शमएँ तो जला दो
घुसे आते हैं, बच्चोंको हटा दो

'मेरी गुड़िया' को तकियेसे बिठा दो
ग़लाफ़ इस गावपर[1] नव्वे रुपैका
बुरा लगता है इस मसनद पै चिपका
किसे आता नहीं है याद मयका

[1]तकियापर

पतीली यह है, वह लोटा पड़ा है
अरी फूहड़, ये घरका रंग क्या है ?
बड़ी दूल्हनसे दो जूते सिवा हैं
मेरी पैज़ारसे[1] मोती जड़ी हैं

ज़बाँ गज़ भरकी छातीपर पड़ी है
तेरी ख़ाला,[2] तेरे मुँहपर खड़ी है
सुनूँ कब तक ये आज़ादीका दुखड़ा
दिखाती फिर ज़माने भरको मुखड़ा

मेरा दिल कौन दिन पर्देसे उखड़ा
नज़र अफ़ज़ा[3] सिनेमा और थियेटर
रिसाले[4] रेडियो फूटा मुक़द्दर
तुझे करना भी है महमूदका घर ?

मैं क्या हूँ थीं वो जल्लादन मेरी सास
जो पीछे बात ! पहले सत्यानास
कभी उतरा हो शायद सरसे ख़न्नास[5]
मिठाई हार ख़ुशबू तेरा शौहर

जो लाता है तो शर्माता है घर भर
ख़ुदा बख़्शे पटक देती थीं लेकर
कहा क्या ? अब नहीं है वह ज़माना
तनज़्ज़ुल[6] है तरक़्क़ीका बहाना
ख़ुदाया ! नाक और चोटी बचाना

---

[1]जूती [2]मौसी [3]निगाहोंको बढ़ानेवाले, आँखोंका पानी मारनेवाले
[4]पत्रिकाएँ [5]भूत [6]पतन

बेटेकी शादी

छः हज़ार तख़मीना[1] कमसे कम चढ़ावेका
राग और क्या लाता ज़ोर-ओ-बम[2] चढ़ावेका
ए शोऐबकी अम्मी कौन ग़म चढ़ावेका
बाग़-ओ-क़िता आराज़ी[3] जाके रेह्न[4] रखता हूँ

एहतमामे-शादीमें[5] हम ज़रा जो चूकेंगे
सो बनाएँगे बातें, सौ जनमपै थूकेंगे
और नुक्ताचीनोंके वह नहीं कि ऊकेंगे[6]
दोस्तोंका वह आलम, दुश्मनोंको क्या कोसूँ

सुन रही हो फिर दिलमें रेह्नकी सदा गूँजी
लोग सर कटाते हैं, अपनी बातपर क्यों जी ?
"बाग़-ओ-क़िता आराज़ी" आ पड़े तो क्या पूँजी
छः हज़ार कम क्यों हैं, लो मैं तुमको समझाऊँ

गुरुबचनसे बारह सौ सूदपर मँगा लेंगे
दो हज़ारसे ऊँचे पासके मिला लेंगे
रंग भी रचा लेंगे नाक भी बचा लेंगे
दिल समाजका भर जाय, देखना वो दावत दूँ

---

[1]अनुमानित बजट [2]उतार चढ़ाव [3]ज़मीनका एक टुकड़ा
[4]गिरवी, बन्धक [5]विवाहके प्रवन्ध [6]ख़ता करेंगे, चूकेंगे

पतीली यह है, वह लोटा पड़ा है
अरी फूहड़, ये घरका रंग क्या है ?
बड़ी दूल्हनसे दो जूते सिवा है
मेरी पैज़ारसे[1] मोती जड़ी है

ज़बाँ गज़ भरकी छातीपर पड़ी है
तेरी ख़ाला,[2] तेरे मुँहपर खड़ी है
सुनूँ कब तक ये आज़ादीका दुखड़ा
दिखाती फिर ज़माने भरको मुखड़ा

मेरा दिल कौन दिन पर्देसे उखड़ा
नज़र अफ़ज़ा[3] सिनेमा और थियेटर
रिसाले[4] रेडियो फूटा मुक़द्दर
तुझे करना भी है महमूदका घर ?

मैं क्या हूँ थीं वो जल्लादन मेरी सास
जो पीछे बात ! पहले सत्यानास
कभी उतरा हो शायद सरसे ख़न्नास[5]
मिठाई हार ख़ुशबू तेरा शौहर

जो लाता है तो शर्माता है घर भर
ख़ुदा बख़्शे पटक देती थीं लेकर
कहा क्या ? अब नहीं है वह ज़माना
तनज़्ज़ुल[6] है तरक़्क़ीका बहाना
ख़ुदाया ! नाक और चोटी बचाना

---

[1]जूती [2]मौसी [3]निगाहोंको बढ़ानेवाले, आँखोंका पानी मारनेवाले [4]पत्रिकाएँ [5]भूत [6]पतन

बेटेकी शादी

छः हज़ार तख़मीना[1] कमसे कम चढ़ावेका
राग और क्या लाता ज़ीर-ओ-बम[2] चढ़ावेका
ए शोऐबकी अम्मी कौन ग़म चढ़ावेका
बाग़-ओ-क़िता आराज़ी[3] जाके रेह्न[4] रखता हूँ

एहतमामे-शादीमें[5] हम ज़रा जो चूकेंगे
सौ बनाएँगे बातें, सौ जनमपै थूकेंगे
तीर नुक्ताचीनोंके वह नहीं कि ऊकेंगे[6]
दोस्तोंका यह आलम, दुश्मनोंको क्या कोसूँ

सुन रही हो फिर दिलमें रेह्नकी सदा गूँजी
लोग सर कटाते हैं, अपनी बातपर क्यों जी ?
"बाग़-ओ-क़िता आराज़ी" आ पड़े तो क्या पूँजी
छः हज़ार कम क्यों हैं, लो मैं तुमको समझाऊँ

गुरुबचनसे बारह सौ सूदपर मँगा लेंगे
दो हज़ारसे ऊँचे पासके मिला लेंगे
रंग भी रचा लेंगे नाक भी बचा लेंगे
दिल समाजका भर जाय, देखना वो दावत दूँ

---

[1]अनुमानित बजट [2]उतार चढ़ाव [3]ज़मीनका एक टुकड़ा
[4]गिरवी, बन्धक [5]विवाहके प्रबन्ध [6]खता करेंगे, चूकेंगे

रेह्लसे निबटनेका ग़म अभीसे क्यों आख़िर ?
जो कही सो उड़धंगी,[1] मैं हयात हूँ आख़िर
नौज ! क्या मैं लौंडी हूँ, क्यों न राय दूँ आख़िर
कलकी बात है भूमर मेरा रेह्ल ही था क्यों ?

पट्टियों पं खिचड़ी सर ऊपरीसा जचता है
यह ख़िज़ाब रहने दो कह रहे थे अच्छा है
कह सकूँगी किस किससे "ए बहन ये नज़ला है"
जानती हैं "अन्ना बी" कौन सन्‌की पैदा हूँ

अब उन्हें भी ले दौड़ीं अपनी हम नवाईसें[2]
और बात मतलबकी डाल दी खटाईमें
हक़ नहीं अधेड़ोंको बज़्मे-ख़ुद नुमाईमें[3]
बज़्मे-ख़ुद नुमाईसे तुम खिंचो तो मैं बचलूँ.

हाँ तो बैन्ड बाजा भी आचुका, बराती भी
मुसतइद[4] है आतिशबाज़ शेख़ शब बराती भी
थम गई 'रक़्मपेशा'[5] नाचती भी गाती भी
औरतोंसे तुम भुगतो मैं सवारियाँ भेजूँ

क्यों भरी चली जाएँ रथ है जेल थोड़ी है
क्यों ठुँसी चली जाएँ रथ है रेल थोड़ी है
हाँ लदी चली जाएँ, रथ है खेल थोड़ी है
"बैठ ए सलीमा बैठ, रो रही है थप्पड़ दूँ?"

---

[1]बेतुकी [2]समर्थन [3]आत्मप्रदर्शनकी सभा [4]मुस्तैद, तत्पर
[5]नाचनेवाली, वेश्या

घुट गई मेरी बच्ची हट तो जा तेरे वारी[1]
ए बुआ मेरा आँचल ए सखी मेरी सारी
'तूई'[2] और 'बुनत'[3] चुरमुर हो गई ख़ुदा मारी
फोड़ दूँ तेरे दीदे, घरनेका बदला दूँ ?

ठहर यार झंडे ख़ाँ, ये बरात देखेंगे
ठाठदार बाजेकी कायनात देखेंगे
झाँकते हुए जलवे 'पानसात'[4] देखेंगे
मौत आई है साले ? तू ठहर मैं चलता हूँ

मेह्र[5] चाहिये इतना जो अदा न हो पाए
चाहिये शराफ़तकी इन्तहा न हो पाए
रोज़ ख़ाना-जंगी[6] हो फ़ैसला न हो पाए
वरना सौ तलाक़े[7] हों हाज़रीने-महफ़िल[8] क्यों

डेढ़ सौकी 'आम्द'में कब है दमदरूद[9] इतना
'बिल' फ़लाँ फ़लाँ इतने गुरबचनका सूद इतना
ख़त्म रेह्नकी मुद्दत सर्फ़ हस्त-ओ-बूद[10] इतना
तार तार घर भरका लाओ बेच आता हूँ

---

[1]निछावर, बलि [2]एक कपड़ा [3]एक कपड़ा [4]पाँच सात [5]मुसलमानोंमें निकाहके समय लड़कीकी तरफ़से मनाई जानेवाली रक़म, जो यदि पति छोड़े तो पत्नीको देता है [6]गृहकलह [7]तलाक़ [8]सभामें उपस्थित जनो [9]सामर्थ्य, शक्ति [10]जीवन बितानेका ख़र्च

अख़्तरुल ईमान--

पस मंज़र

(पृष्ठ-भूमि)

किसकी याद चमक उट्ठी है धुँधले ख़ाके हुए उजागर
यूँ ही चन्द पुरानी क़ब्रें खोद रहा हूँ चुपका बैठा
कहीं किसीका मांस न हड्डी, कहीं किसीका रूप न छाया
कुछ कतबों[1] पर धुँधले धुँधले नाम खुदे हैं--मैं जीवन भर
इन कतबों, इन क़ब्रों ही को अपने मनका भेद बताकर
मुस्तक़बिल[2] और हालको[3] छोड़े, दुख सुख सब मैं लिये फिरा हूँ
माज़ीकी[4] घनघोर घटामें चुपका बैठा सोच रहा हूँ
किसकी याद चमक उट्ठी है धुँधले ख़ाके हुए उजागर

बैठा क़ब्रें खोद रहा हूँ--हूकसी बनकर एक एक मूरत
दर्दसा बनकर एक एक साया, जाग रहे हैं--दूर कहींसे
आवाज़ेंसी कुछ आती हैं--"गुज़रे थे एक बार यहींसे"
हैरत बनकर देख रही है, हर जानी पहचानी सूरत
गोया झूठ हैं ये आवाज़ें कोई मेल न था इन सबसे
जिनका प्यार किसीके दिलमें अपने घाव छोड़ गया है
जिनका प्यार किसीके दिलसे सारे रिश्ते तोड़ गया है
और वो पागल इन रिश्तोंको बैठा जोड़ रहा है कबसे

---

[1]शिलालेखों [2]भविष्य [3]वर्तमान [4]अतीत

मेरी नस नस टूट रही हैं बोझसे ऐसे दर्दके, जिसको
अपनी रूह समझकर अब तक लिये लिये फिरता था हर सू
लेकिन आज उड़ी जाती है इस मिट्टीकी सोंधी ख़ुशबू
जिसमें आँसू बोये थे मैंने, बैठा सोच रहा हूँ जो हो
इन कतबोंको, इन क़ब्रोंमें दफ़्न करूँ और आँख बचा लूँ
इस मंज़रकी[1] तारीकीसे[2] जो रह जाए वह अपना लूँ

अनजान

तुम हो किस बनकी फुलवारी अता पता कुछ देती जाओ
मुझसे मेरा भेद न पूछो, मैं क्या जानूँ मैं हूँ कौन

चलता फिरता आ पहुँचा हूँ, राही हूँ, मतवाला हूँ
इन रंगोंका जिनसे तुमने अपना रूप सजाया है
इन रंगोंका जिनसे तुमने अपना खेल रचाया है
इन गीतोंका जिनकी धुनपर नाच रहे हैं मेरे प्रान
इन लहरोंका जिनकी रौमें[3] डूब गया है मेरा मान
मेरा रोग मिटानेवाली अता पता कुछ देती जाओ
मुझसे मेरा भेद न पूछो, मैं क्या जानूँ मैं हूँ कौन

मैं हूँ ऐसा राही जिसने देस देसकी आहोंको
ले लेकर परवान[4] चढ़ाया और रसीले गीत बुने
चुनते चुनते जगके आँसू अपने दीप बुझा डाले
मैं हूँ वो दीवाना जिसने फूल लुटाए ख़ार[5] चुने

---

[1]दृश्य [2]अन्धकार [3]लहर [4]पालापोसा [5]काँटे

मेरे गीतों और फूलोंका रस भी सूख गया था आज
मेरे दीप अँधेरा बनकर रोक रहे थे मेरे काज
मिटती जोत जगानेवाली अता पता कुछ देती जाओ
मुझसे मेरा भेद न पूछो मैं क्या जानूँ मैं हूँ कौन
एक घड़ी एक पल भी सुखका अमृत है इस राहीको
जीवन जिसका बीत गया हो काँटोंपर चलते चलते
सब कुछ पाया प्यारकी ठंडी छाँवमें जो पाई दुनिया
उसने जिसकी बीत गई हो बरसोंसे जलते जलते
मेरा दर्द बटानेवाली अता पता कुछ देती जाओ
मुझसे मेरा भेद न पूछो, मैं क्या जानूँ मैं हूँ कौन

जब और अब

कहाँ तो यह था कि मेरी चाहतमें गुदगुदीसी थी लोरियोंकी
नई नई कोंपलोंकी सुर्खी नए शगूफ़ोंकी[1] ताज़गी थी

कहाँ तो यह था कि मेरी चाहत थी गीत उठती जवानियोंका
कहाँ ये दिन हैं कि तेरी आवाज़ बन गई है सदाए-सेहरा[2]

न जाने किस गोशए-ज़मींसे रुकी रुकीसी थमी थमीसी
घुटी घुटीसी हज़ारों परदोंसे आज छन छनके आ रही है

---

[1]कोंपलों [2]निर्जन स्थानकी आवाज़

अजनबी

तू है कच्ची कोंपल अब तक जिसके लोचमें प्यार ही प्यार
और मैं गर्मी सर्दी चक्खे डालीपर एक तनहा पात
तू सच्चा मोती, मैं हीरा, फिरा जो बरसों हातों हात
तू ऊषाकी पहली किरन है और मैं जैसे भीगी रात
तू तारोंके नूरकी धारा मैं गहरा नीला आकाश
मैं हूँ जैसे टूटता नश्शा तू है जैसे शाखे-नबात[1]
तू है एक ऐसी शहनाई जिसकी धुनपर नाचे मौत
तेरी दुनिया जीत ही जीत है मेरी दुनिया, छोड़ ये बात
तू है एक पहेली जिसको जो बूझे सो जानसे जाय
तू है ऐसी मिट्टी जिससे लाखों फूल चढ़ें परवान
आ, मैं तेरा रंग भी छू दूँ छोड़ ये भेद और भावकी बात
मैंने वो सरहद छू ली है जहाँ अमर हो जाएँ प्रान
ए आँखोंमें खिलनेवाली जाने कौन कहाँ रह जाय
जीवनकी इस दौड़में पगली हम दोनों हैं आज अनजान
लेकिन ए सपनोंकी दुनिया तू चाहे तो रोग मिटें
मैंने दुनिया देखी है तू मेरी बातें झूट न जान
जीवनकी इस दौड़में नादाँ याद अगर कुछ रहता है
दो आँसू एक दबी हँसी दो रूहोंकी पहली पहचान

---

[1]सब्ज़ी, मूलक़न्दकी शाखा

अह्‌दे-वफ़ा

(यह पूरी कविता एक पंक्ति की है)

यही शाख़ तुम जिसके नीचे किसीके लिये चश्मे-नम[1] हो, यहाँ अबसे कुछ साल पहले मुझे एक छोटीसी बच्ची मिली थी जिसे मैंने आग़ोशमें[2] लेके पूछा था,—'बेटी ! यहाँ क्यों खड़ी रो रही हो ?' मुझे अपने बोसीदा आँचलमें फूलोंके गहने दिखाकर वो कहने लगी—'मेरा साथी, उधर', उसने उँगली उठाकर बताया, 'उधर, उस तरफ़ ही (जिधर ऊँचे महलोंके गुम्बद, मिलोंकी सियह चिमनियाँ आसमाँकी तरफ़ सर उठाए खड़ी हैं) ये कहकर गया है कि मैं सोने चाँदीके गहने तेरे वास्ते लेने जाता हूँ रानी !'

सवालिया निशान

दहक़ान[3] सँवारता है मिट्टी चुन चुनके बिखेरता है दाने
और सोचता जा रहा है जीमें फिर आएगी जंग आज़माने
और दिलको टटोलता है रुककर फिर दूर उफ़क़को देखता है
कुछ रंगसे तीरगीमें[4] डूबे मजबूर उफ़क़को[5] देखता है

आँखोंमें लहूकी बूंद काँपी गिरते ही ज़मीं पै खो गई फिर
परवान चढ़ाए थे जो पौदे वह जल गए रात हो गई फिर
ख़ाली कई गोशे हो गए हैं तनहा तो न था पै रह गया है
करना पड़ा नीशे-ग़म[6] गवारा किस किसका न ख़ून बह गया है

---

[1]सजलनेत्र [2]गोद [3]किसान [4]अन्धकार [5]क्षितिज [6]दुखका डंक, काँटा

फिर दूर उफ़क़को देखता है ये खेत ये वुसअते-बयाबाँ[1]
सरसब्ज़ ज़मीनके ये फल फूल ये सब्ज़ए-ताज़ा[2] ये ख़याबाँ[3]
सब आगमें जल रहे हैं गोया थम थमके पिघल रहे हैं गोया
दहक़ान सँवारता है मिट्टी रुक रुकके बिखेरता है दाने
और सोचता जा रहा है जीमें फिर आयगी जंग आज़माने

यों न कहो

कभी न इसके भाग खुलेंगे प्यासी मिट्टी रहेगी प्यासी
यूँ न कहो मुरझाए पौदे यूँही सदा मुरझाए रहेंगे
चलते चलते इस मंज़िलमें आकर धरती रुक जाएगी
यों न कहो गहनाए सूरज यूँही सदा गहनाए रहेंगे
तुम तो शफ़क़के घुलते मिलते रंगोंकी एक गुलकारी हो
तुम तो सहरका हलका हलका नूर हो जिससे दुनिया जागे
तुम तो महक हो खिलते फूलकी चढ़ते दिनका उजलापन हो
तुमने तो सुलझाए हैं आकर ज़ेह्नके[4] कितने उलझे धागे
तुमको हमने अपना कहा है, तुम तो यूँ न कहो ज़िन्दाँके[5]
कभी न भारी क़ुफ़्ल खुलेंगे, कभी न ज़ंजीरें टूटेंगी

---

[1]जंगलका फैलाव [2]ताज़ीहरियाली, घास पौधे [3]वाटिका [4]चेतना [5]कारागार

मुहम्मद सफ़दर--

एक लमहा

उमंडते डोलते बिखरते आँसुओंसे कोई क्या कहे

यही है इब्तिदासे[1] दिलकी बस्तियोंकी दास्ताँ
कभी हज़ार साल तक
चमकती वुसअतोंमें[2] कोई भी सदा
कोई हवाकी हलकी गूंज तक नहीं उभरती है
हर एक ज़र्रा साँस रोके, आरज़ूसे दुखते होंठोंमें
सरकते ख़ूनको भी भूल जाता है
न जाने फिर कहाँसे----कैसे--आइना दर आइना
झमकता--झमझमाती घंटियोंका शोर सोई ख्वाहिशोंको आ जगाता है
यही है इब्तिदा !!

और इन्तहा--वही ख़मोश बाम-ओ-दर[3]
वही दबी दबीसी धड़कनोंकी आहटें
वही दहकती सेजपर अकेली सिलवटोंकी मौज मौज टूटती हुई
वही उमंडते, डोलते, बिखरते आँसुओंके सेहरे--कोई क्या कहे
इन आँसुओंसे कोई क्या कहे

---

[1]आरम्भ [2]विस्तारों, फैलावों [3]कोठे और द्वार

'अर्श' मलसियानी—

एशियाको छोड़ दो

खून चूसा जान ली अब जिस्म भी खाते हो तुम
ए सियासी करगसो[1]! क्यों ज़ुल्म फ़रमाते हो तुम
एशियाके ग़ममें क्यों दुबले हुए जाते हो तुम
अब बलासे कुछ भी हो तुमने तो घरको भर लिया
काम अपना कर लिया
लूटपर बुनियाद है जिनकी वो रिश्ते तोड़ दो
एशियाको छोड़ दो

धनके ताजिर[2] हिर्सका दामन बहुत फैला चुके
तेल भी तुम पी चुके और कोयला भी खा चुके
कोयला खा खाके हमपर आग भी बरसा चुके
अब तो घरकी राह लो, छोड़ो ये जंगे-ज़रगरी[3]
एशियाकी रहबरी[4]
लूटपर बुनियाद है जिनकी वह रिश्ते तोड़ दो
एशियाको छोड़ दो

सादगीका रूप भरनेमें बड़े पुरकार[5] हो
गुमरहोंको राहपर लानेके ठीकेदार हो

---

[1]गिद्धां [2]व्यापारी [3]माल व धनके लिये लड़ी जानेवाली लड़ाई [4]नेतृत्व [5]चतुर

बेकसोंके ग़ममें मरनेके लिये तैयार हो
अहले-मशरिक़के लिये यह जाँफ़शानी[1] किस लिये
सरगरानी[2] किसलिये
लूटपर बुनियाद हो जिनकी वो रिश्ते तोड़ दो
एशियाको छोड़ दो

तुमने फैलाया हज़ारों साल हमदर्दीका दाम[3]
तुमने सदियों तक मचाया शोरे-बहबूदे-अनाम[4]
तुमने क़रनों[5] तक लिये जाहिल ग़ुलामोंके सलाम
अब भी तुम उनकी हिफ़ाज़तके[6] लिये मजबूर हो
किस क़दर माज़ूर[7] हो
लूटपर बुनियाद है जिनकी वो रिश्ते तोड़ दो
एशियाको छोड़ दो

रहज़नीके[8] आज तक बाक़ी हैं ये अन्दाज़ क्यों
हर घड़ी ताज़ा है अब भी रस्मे-हिर्स-ओ-आज़[9] क्यों
कर रहे हो ऐटमी ताक़त पै बेजा नाज़ क्यों
इन गुनाहोंपर है उज्रे-बेगुनाही[10] किसलिये
यह तबाही किसलिये
लूटपर बुनियाद है जिनकी वो रिश्ते तोड़ दो
एशियाको छोड़ दो

कोरिया, जापान, इन्डोनेशिया हो या कि स्याम
फ़ारमूसा मशरिक़े-वस्ता,[11] मलाया, वीतनाम

[1]जान जोखिम [2]परेशानी [3]जाल [4]जनता [5]युगों [6]रक्षा [7]असमर्थ [8]लूटमार चोरी [9]लोभ-लालच [10]निरपराधी होनेकी सफ़ाई [11]मध्यपूर्व

इनमें अब कोई न मानेगा तुम्हें अपना इमाम[1]
छोड़कर झूठी इमामत[2] काम अपना कीजिये
इनको जीने दीजिये
लूटपर बुनियाद है जिनकी वो रिश्ते तोड़ दो
एशियाको छोड़ दो

श्रीमती बिल्क़ीस जमाल—

दरियाके किनारे

पानी बहता चलता है कुछ दुख सहता चलता है
सन्नाटासा कुछ छाया है पानी कुछ मुर्झाया है
लहरें हैं कुछ मैली मैली मौजें हैं कुछ फैली फैली
तारे झुक झुक पड़ते हैं पत्ते चुप चुप झड़ते हैं
अब्रके टुकड़े उड़ते हैं कटते हैं फिर जुड़ते हैं
तारे झिम झिम होते हैं तायर[3] चुपके सोते हैं
शाखें सर-ब-गरेबाँ[4] हैं बिलकुल चुप और हैराँ हैं
चाँद भी है कुछ खोया सा कुछ जागा कुछ सोया सा
अब्रमें छिप छिप जाता है हर तारेको चमकाता है
कुछ बहका बहका चलता है पानीमें भटकता चलता है
शबनम टप टप रोती है जो आँसू है वह मोती है
जंगल चुपका सोता है मंजरपर[5] सन्नाटा है
हर पत्तेमें ख़ामोशी है हर कोंपलमें बेहोशी है
हर ज़र्रा चुप हर क़तरा चुप अफ़लाकका एक एक तारा चुप

---

[1]नेता [2]नेतृत्व [3]पक्षी [4]झुकी [5]दृश्य

सब गुलहाए रीहाँ[1] चुप हैं चम्पाकी सब कलियाँ चुप हैं
दरियाकी सब मौजें चुप हैं बल खाती सब लहरें चुप हैं
सोती है गुलोंमें चुप, ख़ुशबू झिलमिल होते हैं जुगनू
चलती है हवा कुछ धीमे धीमे फूलोंकी फ़िज़ामें चुपके चुपके
हलके हलके गीत सुनाती रुक रुककर एक तान लगाती
भीगे भीगे फूल रसीले चुपके चुपके कुछ हँसतेसे
यह ख़ामोशी और सन्नाटा और यह साकित मौजे-दरिया
इन आँखोंसे क्या क्या देखूँ इस दुनियाका हर ज़र्रा देखूँ
यारब ये सब मंज़र क्या हैं सहरा क्या हैं घर दर क्या हैं
ख़ामोशी क्या सन्नाटा क्या है आधी रातका दरिया क्या है
ये सब क्यों हैं, ये सब क्या है ख़ुद मैं क्या हूँ, 'जमाला' क्या है

स्वामी मारहरवी—

क्या ख़ूब ये अंजाम है

याँ धर्म हैं बदले हुए, बदला हुआ धरमात्मा
परमात्मासे दूर हम, हमसे जुदा परमात्मा
घरमें गले कटते हुए, लुटती हुई हर आतमा
कुचली हुई इन्सानियत तहज़ीबका[2] है ख़ात्मा
संसारकी यह दुर्दशा होती रहेगी कब तलक
हर जुल्मकी टहनी यूँही फलती रहेगी कब तलक

इस ऐटमी संसारमें उमड़ा हुआ तूफ़ान है
चलती हैं काली आँधियाँ मुट्ठीमें सबकी जान है

---

[1]एक फूलका नाम [2]सभ्यता

ईमान है भटका हुआ बहका हुआ इन्सान है
चक्करमें हैं दैर-ओ-हरम सहमा हुआ भगवान है
कितनी भली थी इब्तिदा,[1] क्या ख़ूब यह अंजाम[2] है
धरतीमें रावन-राज है बदनाम लेकिन राम है

मुफ़लिस[3] बिचारा ज़र्द-रू,[4] बरबाद भी, पामाल[5] भी
भूखा मरे, नंगा फिरे, फ़ाक़ाज़दा,[6] कंगाल भी
लेकिन तिलाई नाख़ुदा,[7] महलोंमें हैं ख़ुशहाल भी
दहक़ाँके[8] ख़ूने-गर्मसे घर भर हैं मालामाल भी
रहबर हैं मंज़िलके वही, संसारके हैं नाख़ुदा[9]
ख़ुशक़िस्मतोंको देखना, बदक़िस्मतोंके हैं ख़ुदा

मुफ़लिसके दुखिया पेटको बेटीसे मिलतीं रोटियाँ
करती फिरें मज़दूरियाँ वे मुँहकी ये बेचारियाँ
मंडीमें या नीलाम हों फ़ाक़ोंकी मारी देवियाँ
लानत है ऐसी क़ौमपर बेचे जो अपनी बीवियाँ
पर्देमें ब्याही देख ली, बेपर्दा क्वारी[10] देख ली
दुनियाने अपनी आँखसे बेटोकी ख़्वारी[11] देख ली

कितनी ज़मीं यह पस्त[12] है याँ आस्माँ अब भी तो हैं
इस ज़िन्दगीके दोशपर बारे-गराँ अब भी तो हैं
वह कारवाँ-रहज़न,[13] अमीरे-कारवाँ[14] अब भी तो हैं
कितने बड़े बेमेह्र[15] हैं नामेह्रबाँ अब भी तो हैं

---

[1]प्रारंभ [2]अन्त [3]निर्धन [4]पीला मुख [5]पददलित [6]भूखे [7]धनवान, सोनेके मालिक [8]किसान [9]संसारके मालिक, ईश्वर न होकर भी अपनेको ईश्वर समझनेवाले [10]कुमारी [11]बेइज़्ज़ती, अपमान [12]नीची [13]लूटनेवाले [14]कारवाँके नेता [15]कृपा न करनेवाले

यूँ आदमी उलझा रहेगा कब तलक तक़दीरसे
कब तक युँही तक़दीरको बाँधोगे तुम ज़ंजीरसे

आता है यह जीमें कि मैं इस ख़ाकदाँको[1] फूँक दूँ
और इस जमींको फूँक दूँ, इस आस्माँको फूँक दूँ
फिर फूँक दूँ इन रहबरोंको कारवाँको फूँक दूँ
और फूँककर जिन्न-ओ-बशर[2] सारे जहाँको फूँक दूँ
पैदा हो फिर दुनिया नई और फिर नया इन्सान हो
और फिर इन्हीं शोलोंसे पैदा गर्मिये-ईमान हो

'फ़िराक़' गोरखपुरी—

वन्दे मातरम्

[यह कविता व्यंग और विनोदके लिये लिखी गई है। हिन्दू संस्कृति अपने ज़मानेमें बहुत ऊँची चीज़ थी लेकिन निर्दोष तब भी नहीं थी। बहुतसे लोग प्रतिक्रियावादको, ढकोसलोंको, हानिकर परम्पराओं और संस्कारोंको पुनर्जीवित करनेके दुराग्रहको हिन्दू संस्कृतिकी सेवा समझते हैं। हिन्दीकी सुन्दर, सुगम और स्वाभाविक शैली बहुतसे हिन्दी लेखकोंको नहीं आती। ऐसोंपर व्यंग किया गया है। अनेक उच्च-पदाधिकारियोंका मानसिक स्तर और उनकी योग्यता लिखे-पढ़े गँवारोंकीसी है और यही हाल अनेक अध्यापकोंका है। इन सबपर व्यंग है। कांग्रेसवालों और सेठोंपर भी व्यंग है]

---

[1]मिट्टीके संसार [2]जिन्न और मनुष्य

पृष्ठ भूमि

दीवाना हुए हैं अहले-वतन माज़ीके[1] तिनके चुनते हैं
दफ़नाए जुगोंकी यादमें अब तक बैठे हुए सर धुनते हैं
कुछ फ़रज़ी तानों बानोंसे कलचरके सपने बुनते हैं
और इल्म-ओ-अमलके सदक़ेमें गीताके क़सीदे[2] सुनते हैं
खुद अपनी चिता रोशन करके सब उसमें जलते भुनते हैं
—बन्दे मातरम्

ये डंड कमंडल, टंट-घंट, पोथी-पत्रा, गेरुवा बस्तर
हमसे सब भूत-प्रेत हैं खुश, हमसे खुश हैं देवता पित्तर
दिनको रामायन पाठ करें रातोंको बाँचें सुखसागर
दिन रात अखंड कीर्तन है, हरदम तन्तर, जन्तर, मन्तर
बम महादेव बम बम बम बम, बम महादेव हिन्दू कलचर
—बन्दे मातरम्

लाखों जुग बीत चुके अब तक, हम सतजुगमें डँड़ पेलते हैं
जो नज़्र[3] हो चुका दलदलके वह ठेला अब तक ठेलते हैं
जिस खेलमें जानका जोखिम है वो खेल हम अब तक खेलते हैं
जीवन बदला दुनिया बदली, हम अपनी क़दामत[4] झेलते हैं
औरोंने सँभाले काम नए, हम अब तक पापड़ बेलते हैं
—बन्दे मातरम्

राष्ट्र भाषा

सब जुमले टेढ़े मेढ़े हैं अल्फ़ाज़[5] भी हैं रोड़े पत्थर
और इसपर तुर्रा यह है कि हम 'मीर'-ओ-'ग़ालिब'से हैं बढ़कर

---

[1]अतीत [2]प्रशंसा के गीत [3]भेंट [4]पुरानापन [5]शब्द

हम नाक काट लें 'सादी' की हम 'शैक्सपियर' के हैं हमसर[1]
यह अहले-अदब,[2] ये अहले-क़लम[3] किस बोलीके हैं छूमंतर
ये 'क़ौमी जबाँ' के मोजिद[4] हैं साहित्यरत्न, विद्यासागर
—बन्दे मातरम्

सुननेवालोंके होश उड़ें वह पढ़के मारते अंछर हैं
जो मुँहमें आए बोल जायँ, शब्दोंके यहाँ दलिद्दर[5] हैं
इस ऊबड़ खाबड़ बोलीमें, वो भक्कड़ और बवंडर हैं
मतलब ही जड़से उखड़ जाए वो चलते हुए चलित्तर हैं
हम 'हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान' लिख लोढ़ा हैं, पढ़ पत्थर हैं
—बन्दे मातरम्

प्रोफ़ेसर साहवान

उन पढ़े लिखोंको जमा करो, जो इल्म-ओ-हुनरके[6] अफ़सर हैं
जो बहुत बड़े आलिम फ़ाज़िल,[7] जो बहुत बड़े स्कालर[8] हैं
फिर लाओ ऐसे सपाटोंको जो डिप्टी और कलक्टर हैं
वो क्लर्क और अमले[9] भी आएँ जिनके हाथोंमें दफ़्तर हैं
जो सबसे घामड़ आएँ नज़र, बस जान लो वो प्रोफ़ेसर हैं
—बन्दे मातरम्

योरपके तालिब इल्मोंसे भी ये बहुत ही कम हैं लिखे पढ़े
मशहूर किताबोंको पूछो तो नाम न ले पाएँ दसके
ये धोके हाथ पड़े रहते हैं बस मुमतहिनीके[10] पीछे

---

[1]बराबर [2]साहित्यकार [3]लेखक [4]आविष्कारक [5]अभाव [6]विद्या और कला [7]विद्वान [8]पंडित [9]स्टाफ़ [10]परीक्षा लेनेके लिये, परीक्षक बननेको

हो जाएँ किताबें कोर्समें उनकी इसी फ़िक्रसे हैं दुबले
और अपनी ज़बान-ओ-अदबमें[1] तो ये सारी उम्र रहे कोरे
—वन्दे मातरम्

दुनियाकी बड़ी तहरीकोंसे नावाक़िफ़[2] हैं बेपरवा हैं
दुनियाके ऊँचे ख़यालोंसे प्रोफ़ेसरजी बेबहरा[3] हैं
दुनियाके फ़ुनूने-लतीफ़ासे[4] खींचे हुए साफ़ किनारा[5] हैं
दुनियाके बलन्द अदबसे भी ये भले लोग बेगाना[6] हैं
दुनियाके बड़े मक़ासिदको[7] ये साफ़ दिखाते ठेंगा हैं
—वन्दे मातरम्

कुछ तुमको पता भी है यारो ये प्रोफ़ेसर हैं बड़ी चीज़
है धन इनका माशाअल्ला[8] है अक़्ल बहुत इनकी दबीज़[9]
कुछ रटे लफ़्ज़[10] इनके ग़ुलाम, जूठी बातें इनकी कनीज़[11]
अपने वीरान दिमाग़ोंका सूनापन है इनको अज़ीज़[12]
तालीमे-हिन्दको[13] बहुत जल्द ले डूबेंगे ये बदतमीज़
—वन्दे मातरम्

पच्चीस बरससे पड़ा है पाला मुझको इन कुढ़ मग़ज़ोंसे[14]
पूछो न टपकती है जो जिहालत इनकी भोंडी बातोंसे
हैराँ हो जाएँ सवाल इनके अनमिल बेजोड़ जवाबोंसे
ख़ुद मनतिक़[15] पीट ले मुँह अपना इनकी लायानी[16] बहसोंसे
क्या जानिये कब क्या निकल पड़े इन भानमतीके पिटारोंसे
—वन्दे मातरम्

---

[1]भाषा और साहित्य [2]अनभिज्ञ [3]अज्ञानी [4]ललित कलाओं [5]दूर रहते हैं [6]अपरिचित [7]उद्देश्यों [8]क्या कहना है [9]मोटी [10]शब्द [11]लौंडी [12]प्रिय [13]भारतकी शिक्षा [14]मूर्खों [15]तर्कशास्त्र [16]अर्थहीन

बड़े अफ़सरान

हम हैं भारी भरकम अफ़सर तक़दीरसे ये रुतबा[1] पाया
तक़दीर ही ने फिर लगा दिया मुँहपर छोटेपनका ठप्पा
क़ानून आईनसे[2] हमको क्या हम पढ़े लिखे जाहिल बाबा
हम 'हाईकोर्ट'के जज ठहरे लेकिन अब तुमसे क्या पर्दा
लाखोंके फ़ैसले करते हैं पाया है दिमाग़ अठन्नीका[3]

—बन्दे मातरम्

आवेका आवा टेढ़ा

प्रोफ़ेसर 'हिन्दीजी' आखिर यह कैसा गड़बड़ झाला है
आई० सी० एस०, आई० ए० एस०, सबका सब गड़बड़ खाता है
अंधी नगरी चौपट राजा, यह क्या भगवानकी लीला है
राम राम जपना है प्यारे माल पराया अपना है
गांधी महराजकी जय बोलो, आवेका आवा टेढ़ा है

—बन्दे मातरम्

अब जिगर थामके बैठो मेरी बारी आई

क्या हमको समझ रक्खा है तुमने हम कॅग्रेसिये लीडर हैं
हो भैंस चरानेकी न लियाक़त, पार्लिमेंटके मेम्बर हैं
हम नरक बना दें भारतको, यानी हम लोग मिनिस्टर हैं
मालिक हैं सफ़ेद-ओ-सियाहके हम, हम हिन्दुस्तांके मुक़द्दर हैं
भारतकी दुखती छातीपर भारीसे भारी पत्थर हैं

—बन्दे मातरम्

---

[1] पद [2] नियम, विधान [3] बेजा नाज़ नखरे

हम गांधियतके नख़रे, गांधियतके नाज़े-बेजा[1] हैं
जनताको पयामे-मर्ग[2] हैं हम, भारतके गलेका फन्दा हैं
हम हिन्दकी मिटी उमीदें[3] हैं जम्हूरका[4] ख़ूने-तमन्ना हैं
हैं सत्य अहिंसाकी मूरत, क्या तुमको बताएँ हम क्या हैं
सब लोग हमारी जय बोलें, हम राजा हैं, हम प्रजा हैं
—वन्दे मातरम्

करते हैं तरक़्क़ी रूस-औ-चीन तो इसकी हमें क्या परवा है
हम कब सुनते हैं ये अफ़वाहें, कुछ होगा, हमको पड़ी क्या है
उन देसोंकी ख़बरोंपै यहाँ मोटे खद्दरका पर्दा है
मज़दूर राज है महापाप यह रामराज ही अच्छा है
गांधी बाबासे ग़रीबोंका हमने ज़ामिन[5] होना सीखा है
—वन्दे मातरम्

हैं रूस चीन दौलतपै मिटे हम धर्मकी रक्षा करते हैं
वो भूख इफ़लास[6] मिटाते हैं हम रामनाम पर मरते हैं
अमरीका उनसे डरता है हम अमरीकासे डरते हैं
इल्ज़ाम हरेक मुसीबतका हम अहले-वतन[7] पर धरते हैं
कैसा अच्छा बटवारा है हम करते हैं वो भरते हैं
—वन्दे मातरम्

खेती स्कूल कारख़ाने अब इनकी तरक़्क़ी कौन करे
ये ज़िम्मेदारी ओढ़ तो ली पर माथा पिच्ची कौन करे
जो इतने दिनोंसे टेढ़ी है वो क़िस्मत सीधी कौन करे

---

[1]मृत्युका [2]सन्देश [3]आशाएँ [4]जनता [5]ज़मानतदार [6]दरिद्रता
[7]देशवासियों

हम तो जनताकी फ़िक्र करें पर फ़िक्र हमारी कौन करे
अच्छा हम बेईमान सही, अब बहसाबहसी[1] कौन करे
—बन्दे मातरम्

बीमारी भूख मुसीबतसे जनता मरती है मरने दो
हम देसके ख़ादिम[2] हैं हमसे जनता डरती है डरने दो
इलज़ाम धड़ाधड़ जो हमपर जनता धरती है धरने दो
मज़दूर किसान राजका दम जनता भरती है भरने दो
अब इन्क़लाबकी तैयारी जनता करती है करने दो
—बन्दे मातरम्

जो आग लगाते फिरते हैं वो आग बुझाना क्या जानें
पस्ती है बलन्दी जिनके लिये गिरतोंको उठाना क्या जानें
जो जगते सपने देखते हैं सोतोंको जगाना क्या जानें
तदबीरसे जिनको नफ़रत है तक़दीर बनाना क्या जानें
जो मौतके हैं मंज़ूरे-नज़र[3] वह जान बचाना क्या जानें
—बन्दे मातरम्

हम जब मुँहसे कुछ फूटते हैं, खुल जाता है सब भेद भरम
सीनोंमें मचाती है हलचल, तक़रीर[4] अपनी अगड़म बगड़म
आँखोंसे चुरा लें हम काजल, वो जेलमें सीखे हैं तिकड़म
चलते हैं चाल टके गज़की, लेकिन दुनिया है ज़ेरे-क़दम[5]
हम बाईं आँखसे देख लें गर तो हो जाये हर काम पटम[6]
—बन्दे मातरम्

---

[1]वादविवाद [2]सेवक [3]प्यारे [4]भाषण [5]क़दमके नीचे
[6]सत्यानाश

हम झूठे फ़र्ज़ी[1] सौदोंमें अरबों खरबों तक फूंक चुके
दुनियामें हुई छीछा लेदर अखबारोंमें भी मची ले दे
क्यों माथेपर अपने बल आए क्यों कानपर अपने जूँ रेंगे
कैसे यह अंधेर हुआ है इसको अपनी बला जाने
अपने तो पौ बारह हैं अब देस रहे या देस मिटे
—बन्दे मातरम्

दुनिया भरकी सच्चाईपर दो झूठ हमारे भारी हैं
दो बड़े बोल कम्युनिस्टोंके दिलके लिये ज़ख्मे-कारी[2] हैं
इस कांग्रेस राजकी जानिबसे[3] हम धमकियोंके ब्योपारी हैं
मुत्तहिदा महाज़को[4] तोड़नेको तरकीबें अपनी जारी हैं
हमसे घबराओ हमसे डरो हम राजगोपालाचारी[5] हैं
—बन्दे मातरम्

दुनिया लाख धरे इलजाम हमको है अपने कामसे काम
दया अहिंसा धर्म कर्मका हमने खूब उछाला नाम
पैंतीस करोड़ इन्सानोंका हमने जीना किया हराम
पाँच बरसके अन्दर अन्दर चारों ओर मचा कोहराम
"रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम"
—बन्दे मातरम्

सेठजी

छोड़ो भी इन कँग्रेसियोंको अब हमसे पूछो हम क्या हैं
हम आठ करोड़ घरानोंकी बरबादीके परवाना हैं
पैंतीस करोड़ इन्सानोंकी क़िस्मतका लिये हुए ठीका हैं

---

[1]जाली [2]गहरा घाव [3]ओर, तरफ़ [4]संयुक्त मोर्चा [5]कविता लिखे जानेके समय भारत सरकारके गृहमंत्री श्री राजगोपालाचारी थे

हम सेठ करोड़ीमल ठहरे हम बिना तिलकके राजा हैं
हम जन गन मन अभिनायक हैं हम भारत भाग्य विधाता हैं
—वन्दे मातरम्

जो ग़ज़नी[1] नादिरशाह,[2] हलाकू[3] और चंगेज़से[4] भी न हुई
जो अंग्रेज़ोंके ख़ूनी हाथोंसे भी न हुई थी बरबादी
जो देशकी दुर्गति कर न सके सूखा सैलाब महामारी
जो डाकुओं, चोरों, आग लगानेवालोंसे भी हो न सकी
जय कांग्रेसकी हम सेठोंने कर दी है वह हालत भारतकी
—वन्दे मातरम्

हैं गरचे[5] यूँहीसे पढ़े लिखे, तालीम बहुत मामूली है
है पेट ठसाठस भरा हुआ सर लेकिन ख़ाली ख़ूली है
ये इल्म-ओ-लियाक़त चीज़ है क्या, विद्या किस खेतकी मूली है
ये पढ़ों लिखोंकी दुनिया भी किस बल बूतें पर फूली है
सब अपने ग़ुलाम हैं दुनिया क्यों यह तल्ख़ हक़ीक़त[6] भूली है
—वन्दे मातरम्

गो कांग्रेस अपने बसमें है पर कुछ लेना देना पड़ता है
कुछ बातचीत है खुली ढकी कुछ चोरी छिपेका सौदा है
अब किसी तरहसे हमको बराबर करना लेखा ड्योढ़ा है
गो दोहरे बही खाते हैं रखे कुछ सूद नफ़ा भी दिखाना है
ले ही मरती है हकूमत कुछ क़ानून ही ऐसा उल्टा है
—वन्दे मातरम्

---

[1],[2],[3],[4]महमूद ग़ज़नवी, नादिरशाह, हलाकू, चंगेज़ ख़ाँ जो दूसरे देशोंपर आक्रमण और लूटमार करनेमें बदनाम हैं [5]यद्यपि [6]कटु सत्य

माज़ी परस्त

(अतीतका अंधपुजारी)

सतजुगकी बात छानने बैठे हैं
ढीले तारोंको तानने बैठे हैं
ज़र-बल[1] और हाथ-बलसे होकर महरूम[2]
पुरखोंके गुन बखानने बैठे हैं

* * *

बेदारिये-सुब्हकी[3] हवाएँ भी चलीं
तहज़ीबे-कोहनकी[4] लम्बी रातें भी ढलीं
माज़ी[5] न बिका---रात गई बात गई
सदियोंकी ज़िन्दगीकी क़द्रें[6] बदलीं

* * *

दुनियामें अब इस मरज़के[7] बीमार नहीं
इस दौरमें[8] सतजुगके परस्तार[9] नहीं
इस रद्दी मालकी निकासी है मुहाल
बाज़ारमें माज़ीके ख़रीदार नहीं

* * *

अन्धी नगरी है और चौपट राजा
लो, दोनों टके सेर है भाजी खाजा

---

[1]धनका बल [2]वंचित [3]प्रातः जागरण [4]प्राचीन सभ्यता
[5]अतीत [6]मूल्य [7]रोग [8]युगमें [9]पुजारी

माज़ीकी अलाप जेह्लका[1] साज़े-तरब[2]
बेवक़्तकी रागिनी है बेसुर बाजा

* * *

ज़हराब[3] फ़िज़ाओंमें ये फैलाती है
एक लाश जो सदियोंसे सड़ी जाती है
भगवान ये कब कटेगा माज़ीका कोढ़
उफ़ अब तो ख़याल हीसे क़ै[4] आती है

* * *

ठोकर खाकर ये उसपे गिरते ए काश
कफ़नाई हुई रक्खी है माज़ीकी लाश
गुल करके चिराग़े-हालओ-मुस्तक़बिलको[5]
करते हैं अँधेरेमें जो माज़ीकी तलाश

* * *

काँधेपे धरे बीते जुगोंका ताबूत[6]
किस ओरको जा रहे हैं भारतके सपूत
कब ऐसेमें सूझते हैं मुस्तक़बिल-ओ-हाल[7]
जब सरपर नाचता है माज़ीका भूत

* * *

माज़ीके पुजारी उसे इतना न बढ़ा
मालूम है सब, सबक़ ये औरोंको पढ़ा

---

[1]मूर्खता [2]ख़ुशीका बाजा [3]ज़ह्र [4]उलटी [5]वर्त्तमान और भविष्य इन रुबाइयोंमें हाल शब्दका सब जगह मतलब है वर्त्तमान युग, भारतका वर्त्तमान [6]जनाज़ा [7]भविष्य और वर्त्तमान

क्या कम थे साम्राज-ओ-दौलतके जुनूँ[1]
सरपर जो तेरे जुनूने-माज़ी भी चढ़ा

* * *

क्या कहिये ऐसे सर्राफ़रोंके दिलको
जो छुट गई रोते हैं उसी मंज़िलको
माज़ी लेते हैं मोल, क्या सौदा है
ये बेचके हाल और मुस्तक़बिलको[2]

* * *

मुस्तक़बिल-ओ-हालका तो सौदा न चुका
ये ऊँचा माल तो पटाए न पटा
माज़ीको बुलाओ यारो माज़ीको बुलाओ
पीछे भागो, बहाओ उलटी गंगा

* * *

पंडितजी, शेख़जी, महाजन, क़ाज़ी
अब लड़भिड़कर हुए हैं इसपर राज़ी
जनताको लगी है रट नई दुनियाकी
मिलकर नारा लगाओ माज़ी ! माज़ी !

* * *

रगड़ेपर चर्ख़ दे रहा है रगड़ा
लेकिन ले मोल कौन इनसे झगड़ा
मुस्तक़बिल-ओ-हालसे जो फेरे हुए मुँह
माज़ीसे माँगते हैं रोटी कपड़ा

* * *

---

[1]पागलपन [2]वर्त्तमान और भविष्य

काँटेके दहानेसे[1] दहाना फाड़ो
तुम ग़ाज़ी मर्द हो तो चाबुक आड़ो
तुम थानके टर्र हो जनाबे-माज़ी
है हाल सवार तुमपे पुश्तक झाड़ो

* * *

हर बातपै बेचारे बिगड़ जाते हैं
हर बहसमें बेचारे उखड़ जाते हैं
मुस्तक़बिल-ओ-हालके तक़ाज़े सुनकर
ये हज़रते माज़ी हैं अकड़ जाते हैं

* * *

कितने ख़ुश आए कितने राज़ी आए
बाशौकत-ओ-शान[2] शेख़, क़ाज़ी आए
कलचरपै धुआँ धार करेंगे तक़रीर
जयकार करो, हज़रते माज़ी आए

* * *

कलचरकी अहमियतको[3] समझाते हैं
क्या फूल हिमाक़तके वो बरसाते हैं
दर्शन हुए जाते हैं अभी भक्तोंको
सोटा लिये वो राजरिशी आते हैं

* * *

झटकाते हैं काँधे अड़बड़ा जाते हैं
ऐसे मौक़ोंपै हड़बड़ा जाते हैं
सुलझानेको कहिये कोई उलझी हुई बात
तो राजरिशीजी गड़बड़ा जाते हैं

* * *

---

[1]मुँह [2]शानशौकतके साथ [3]महत्व

वल्लाह[1] निकालते हैं यों दिलकी भड़ास
सब राजरिशीसे बाँधे बैठे थे आस
भूखों प्यासोंको आज वक़्ते-तक़रीर[2]
वो डाँट पिलाई न रही भूख न प्यास

* * *

कितने बेलाग और कितने अक्खड़
ये रूसके नाम हीसे जाते हैं अकड़
खा जाते हैं अमरीकाकी ये धौंसपे धौंस
ये हज़रते-माज़ी भी हैं कितने घामड़

* * *

कुछ बेहतर हिन्दकी तबीअत न हुई
पैदा कोई उम्मीदकी सूरत न हुई
कल्चरकी सूइयाँ लगीं बरसों तक
बीमार हयात रू-ब-सेहत[3] न हुई

* * *

सुनते हो, साज़े-सरमदी[4] कोई नहीं
बदले न जो ऐसी जिन्दगी कोई नहीं
इक़दारे - दायमीपै[5] मिटनेवालो
दुनियामें क़द्रे-दायमी कोई नहीं

* * *

कुछ लोग मिटे हुए हैं माज़ीके लिये
है हिन्दका हाल, आज बिक्रीके लिये

---

[1]सचमुच [2]भाषणके समय [3]रोगी जीवन स्वस्थ न हुआ [4]सदा बजनेवाला बाजा [5]हमेशा बने रहनेवाले मूल्य

मुस्तक़बिलको भी कर रहे हैं ये रेह्न
अमरीकाके हाथ रूखी सूखीके लिये

* * *

ये नुत्क़के[1] नूरबाफ़[2] माने जाने
बुनते भी हैं रुपएमें सत्रह आने
भारतका कफ़न सीते हैं फिर करके दुरुस्त
माज़ीके ये टूटे हुए ताने बाने

* * *

ऊँचा सौदा पटा रहे हैं बौने
पगला रक्खा है माज़ियोंकी रौने[3]
घातेमें दे दिया है मुस्तक़बिलको
और हालको बेचते हैं औने पौने

* * *

दामन माज़ीसे इनका अटका सौ बार
खाया हठधर्मियोंका झटका सौ बार
माज़ीके दोश[4] पर गए ये चढ़ने
माज़ीने उठा उठाके पटका सौ बार

* * *

नई चेतना

एक हलक़ा-ए-ज़ंजीर[5] तो ज़ंजीर नहीं
एक नुक़्तए-तस्वीर[6] तो तस्वीर नहीं

---

[1]मुँहके, ज़बानके [2]बुनकर [3]लहर [4]कंधे [5]ज़ंजीरकी एक कड़ी
[6]चित्रका एक विन्दु

तक़दीर तो क़ौमोंकी हुआ करती है
एक फ़र्दकी[1] क़िस्मत कोई तक़दीर नहीं

ये नालए-गर्मसे[2] उभरते हुए दाग़
अंगारोंकी बरखामें ये खिलते हुए बाग़
ये नारए-इन्क़लाबके शोलए-तेज़[3]
तूफ़ानके सीनेमें जलाते हैं चराग़

आपसमें नए क़ौल-ओ-क़सम लेते हैं
संसारको पलटाके ही दम लेते हैं
होता है जब इन्क़लाब, इन्सानोंमें
बाहम[4] नए इन्सान जनम लेते हैं

इस नज़्मके[5] बचनेका नहीं कोई उपाय
बैठे हैं मगर चारागर[6] एक आस लगाय
जैसे मरते मरीज़के सम्बन्धी
सोचें कि अजब क्या ये कहीं बच ही जाय

ओ शायरे-खुशनवा[7] है तेरी वह ज़ात
जो सोई हुई जोत जगाए दिन रात
अपनी ही लज़्ज़ते-बयाँमें[8] न हो गुम
दम भर न छुटे मन्सबे-नक़्क़ादे-हयात[9]

शायरके ज़ब्तसे[10] नहीं तू आगाह
दिलमें किन ज़लज़लोंको[11] देता है पनाह

---

[1]व्यक्ति [2]जलती हुई फ़रियाद, रुदन [3]तेज़ लपट [4]परस्पर [5]व्यवस्था [6]चिकित्सक [7]मधुर स्वरवाले कवि [8]वर्णनके स्वाद [9]जीवन आलोचकका पद [10]सहनशीलता [11]भूकम्पों

वह बन्द न कर ले जो इसे सीनेमें
आकाशको चीर जाय धरतीकी कराह

तूफ़ानमें दिलकी नाव खेनेवाले
दमपर भी बने तो दम न लेनेवाले
खुलता नहीं किन वादियोंमें[1] दफ़्न हुए
वो ग़मके पहाड़ काट देनेवाले

ये बज़्मे-ख़याल[2] चूड़ियाँ बजती हैं
भीगी रातें उदासियाँ तजती हैं
दरिया मुखड़ोंके उमड़े आते हैं 'फ़िराक़'
आईनए-दिलमें सूरतें सजती हैं

मन मोह ले सौ रंगसे जीवन सपना
ये वह्मे-हसीं[3] ये ख़ूबसूरत धोखा
ग़मखानए-ज़िन्दगीका[4] असली नक़्शा
जब आँख खुली 'फ़िराक़' देखा न गया

अल्लाह,[5] न अह्रमन,[6] न देव[7] और जिन्नात[8]
अरवाहे-ख़बीसा[9] न शयातीनकी[10] ज़ात
देवी देवता न कोई भूत और चुड़ैल
इन्सानका इन्सान है दुश्मन हैहात[11]

एक लमहा वक़ा[12] से भी यहाँ लम्बा है
कौनेनकी[13] ज़िन्दगी भी एक लमहा है

---

[1]घाटियों [2]कल्पनाकी सभा [3]सुन्दर भ्रम [4]जीवनके दुख-स्थान [5]ईश्वर [6,7,8]शैतान, राक्षस, जिन्न [9]प्रेतात्मा [10]शैतानों [11]अफ़सोस [12]क्षण [13]सृष्टि

कल मैंने 'फ़िराक़' वक़्तके चेहरेको
आईनए-हुस्ने-दोस्तमें[1] देखा है

कल रात गए फ़िक्रे-सुख़नके[2] हंगाम[3]
विज्दाने-जमालके[4] छलकते हुए जाम
वह कश्फ़-ओ-करामातका[5] आलम कि 'फ़िराक़'
हर पलपर पड़ रहे थे सद अक्से-दवाम[6]

साक़ी के हाथ से शगूफ़ा छूटा
सर चश्मए-आफ़ताब ख़ुम से फूटा
मैख़ानए-ज़िन्दगी में दौरे-नौ के
साग़र खनके ख़ुमारे-माज़ी टूटा

कुछ रिन्दोंको[7] सुन गुनसी मिली है साक़ी
नवयुगके जन्मकी ये घड़ी है साक़ी
तख़लीक़के[8] लमहे[9] थरथराए सरे-जाम[10]
यह शाम एक गोद बन रही है साक़ी

मय ख़ाना नमाज़े-शाम[11] होती है शुरूअ
शीशोंके सरे-शाम सुजूद[12] और रुकूअ[13]
मेह्रे-आफ़ाक़ सोज़[14] होता है ग़ुरूब[15]
रिन्दाने-सियाहकार[16] होते हैं तुलूअ[17]

---

[1]प्रेमिकाके सौंदर्य-दर्पण [2],[3]कविता करते समय, हंगाम=समय [4]सौंदर्यका विचार [5]भेद खोलने और चमत्कार दिखाने [6]अनन्त [7]शराबियों [8]रचना, निर्माण [9]क्षण [10]भरे हुए प्यालेके ऊपर [11]शामकी नमाज़ [12]बैठकर सिर झुकाना [13]खड़े होकर आधा झुकना [14]दुनियाको जलानेवाला सूर्य [15]अस्त होता है, डूबता है [16]पापी शराबी [17]उदय

उलझी हुई गुत्थियोंको बल देते हैं
कब वह कोई पैग़ामे-अमल[1] देते हैं
ये फ़लसफ़ी ज़िन्दगीको समझें समझायें
हम ज़िन्दगी यकलख़्त[2] बदल देते हैं

हाबीलके[3] दाग़े-ख़ूँ तो धो लेने दो
मीरासे-बहीमियत[4] तो धोखो लेने दो
फ़ौक़ुल-इन्साँकी[5] मुन्तज़िर[6] है दुनिया
इन्सानको इन्सान तो हो लेने दो

ग़ैरतको सुस्त असास[7] कर देता है
एहसान भी बदहवास कर देता है
इन्सानका जज़बए-तशक्कुर[8] हमदम
अक्सर मुझको उदास कर देता है

वो रह्म-ओ-करमका शाख़साना[9] न रहा
ख़ैरातका ख़ुल्क़को[10] बहाना न रहा

---

[1]कार्य करनेका संदेश [2]एकदम [3]आदमके एक बेटेका नाम [4]बर्बरताकी विरासत [5]मानवसे बड़ी शक्ति रखनेवाला [6]प्रतीक्षामें है क़ुरानमें लिखा है कि हाबील और क़ाबील नामक आदि पुरुष आदमके दो बेटे थे। क़ाबीलने हाबीलको क़त्ल कर दिया था। वह मनुष्य द्वारा मनुष्यके क़त्ल किये जानेकी पहली घटना थी। उसी घटनासे मनुष्यकी बर्बरता शुरू हुई। इसीलिये इस रुबाईमें कहा गया है कि जब तक हम अपने पूर्वजोंकी उस विरासतको नहीं भूलते और मनुष्यता-से ऊपर नहीं उठते तब तक संसारमें शान्ति नहीं होगी [7]स्वाभिमानकी नींवको कमज़ोर कर देता है [8]कृतज्ञताकी भावना [9]दया और कृपाका झगड़ा [10]दान देनेका सदाचारको बहाना

ये दौरे-मसावात है पैसेवालो
अब ख़िदमत-ओ-एहसाँका ज़माना न रहा

बेहिस हैं रगे-हमीयत उनकी उकसाओ
हथ-फेर दया धर्मके इनको समझाओ
अय्याशिये-ख़ैरात मिटा देती है
इफ़लासज़दोंको दानवीरोंसे बचाओ

कांग्रेस, मुस्लिम लीग और जनता

कुछ लिक्खे पढ़े हो पैसेवाले हो ज़रूर
हर बात बजा तामम दावे मंज़ूर
हाथोंमें अवामके है तक़दीरे-अवाम
तुम कबसे बन गए अमीने-जमहूर

बाँटा औरोंने कब हमारे ग़मको
गांधीजी और क़ायदे-आज़मको
हम अच्छी तरह जानते हैं यह तो बताओ
ये कौन तुम्हें सौंपनेवाले हमको

यह साम्यवादका युग है, अर्थात् अब मनुष्य मनुष्य बराबर होंगे और कोई किसीकी दयापर या दानपर नहीं रहेगा अनुभूति हीन, चेतना-हीन स्वाभिमान, लज्जाकी भावना दान देने लेनेकी ऐय्याशी, क्योंकि चोर बाज़ारमें लाखों रुपये कमाकर थोड़ा दान कर देना एक फ़ैशन बन गया है निर्धनों, ग़रीबों जनता जनताके हित-रक्षक पाकिस्तानके स्थापक मि० जिन्ना

हम लोगोंने दुनियामें किये थे क्या पाप
कब तक झेलें ये दुख, सहें ये सन्ताप
इस उल्फ़ते-मादरी व पिदरीसे[1] पनाह
क्यों सेठजी बन गए हमारे माँ बाप

दुनिया बदली—पुराने सम्बन्धके तौर
बदले—यह इन्क़लाब है क़ाबिले-ग़ौर
अब रह्म-तलब[2] न कोई औरत है न मर्द
यह दौरे-ज़माना है मसावातका दौर

यह लीग और कांग्रेसकी माया समझो
जनताकी पलट चुकी है काया समझो
गांधीका देस हो कि जिन्नाका मुल्क
दोनों हीमें इन्क़लाब आया समझो

---

[1]मातृ-प्रेम और पितृ-प्रेम　[2]दया माँगनेवाला

अली सरदार जाफ़री—

तुम्हारी आँखें

तुम्हारी आँखें
हसीन, शफ़्फ़ाफ़,[1] मुस्कराती जवान आँखें
लरजती[2] पलकोंकी चिलमनोंमें
शहाबी[3] चेहरेपे अबरुओंकी कमाँके नीचे
तुम्हारी आँखें
वह जिनकी नज़रोंके ठंडे सायोंमें मेरी उलफ़त
मेरी मुहब्बत, मेरी जवानीकी रात परवान[4] चढ़ रही थी
तुम्हारी आँखें
अँधेरी रातोंमें जो सितारोंकी रोशनीसे
फ़िज़ाए-ज़िन्दाँमें[5] झाँकती हैं
मैं लिख रहा हूँ
तुम्हारी आँखें सफ़ेद काग़ज़पै अपनी पलकोंसे चल रही हैं
मैं पढ़ रहा हूँ
तुम्हारी आँखें हरेक सतरकी भवोंके नीचे लरज़ रही हैं
मैं सो रहा हूँ
तुम्हारी आँखें, तुम्हारी पलकें कहानियाँ-सी सुना रही हैं
मैं दोस्तों और साथियोंमें घिरा हुआ हूँ
गुलाब ज़िन्दाँकी क्यारियोंमें खिले हुए हैं
तुम्हारी आँखें मेरी मसर्रतके फूल बनकर महक रही हैं
मुझे गिरफ़्तार करके जब जेल ला रहे थे पुलीसवाले
तुम अपने बिस्तरसे, अपने दिलको

---

[1] निर्मल [2] कम्पित पलकों [3] लाल [4] पल रही बढ़ रही [5] जेलके वायुमंडल

हम लोगोंने दुनियामें किये थे क्या पाप
कब तक झेलें ये दुख, सहें ये सन्ताप
इस उल्फ़ते-मादरी व पिदरीसे[१] पनाह
क्यों सेठजी बन गए हमारे माँ बाप

दुनिया बदली--पुराने सम्बन्धके तौर
बदले--यह इन्क़लाब है क़ाबिले-ग़ौर
अब रह्म-तलब[२] न कोई औरत है न मर्द
यह दौरे-ज़माना है मसावातका दौर

यह लीग और कांग्रेसकी माया समझो
जनताकी पलट चुकी है काया समझो
गांधीका देस हो कि जिन्नाका मुल्क
दोनों हीमें इन्क़लाब आया समझो

---

[१]मातृ-प्रेम और पितृ-प्रेम [२]दया माँगनेवाला

अली सरदार जाफ़री——

तुम्हारी आँखें

तुम्हारी आँखें
हसीन, शफ़्फ़ाफ़,[1] मुस्कराती जवान आँखें
लरजती[2] पलकोंकी चिलमनोंमें
शहाबी[3] चेहरेपे अबरुओंकी कमाँके नीचे
तुम्हारी आँखें
वह जिनकी नज़रोंके ठंडे सायोंमें मेरी उलफ़त
मेरी मुहब्बत, मेरी जवानीकी रात परवान[4] चढ़ रही थी
तुम्हारी आँखें
अँधेरी रातोंमें जो सितारोंकी रोशनीसे
फ़िज़ाए-ज़िन्दाँमें[5] झाँकती हैं
मैं लिख रहा हूँ
तुम्हारी आँखें सफ़ेद काग़ज़पै अपनी पलकोंसे चल रही हैं
मैं पढ़ रहा हूँ
तुम्हारी आँखें हरेक सतरकी भवोंके नीचे लरज़ रही हैं
मैं सो रहा हूँ
तुम्हारी आँखें, तुम्हारी पलकें कहानियाँ-सी सुना रही हैं
मैं दोस्तों और साथियोंमें घिरा हुआ हूँ
गुलाब ज़िन्दाँकी क्यारियोंमें खिले हुए हैं
तुम्हारी आँखें मेरी मसर्रतके फूल बनकर महक रही हैं
मुझे गिरफ़्तार करके जब जेल ला रहे थे पुलीसवाले
तुम अपने बिस्तरसे, अपने दिलको

---

[1]निर्मल [2]कम्पित पलकों [3]लाल [4]पल रही बढ़ रही [5]जेलके वायुमंडल

अधूरे ख़्वाबोंको लेके बेदार हो गई थीं
तुम्हारी पलकोंसे नींद अब भी टपक रही थी
मगर निगाहोंमें नफ़रतोंके अज़ीम शोले[1] भड़क उठे थे
तुम्हारी आँखें हिक़ारतोंके जहन्नुमोंको[2] जगा रही थीं
निज़ामे-ज़ुल्म-ओ-सितमपै बिजली गिरा रही थीं

मेरी मुहब्बतने अपनी जन्नतका हुस्न देखा
तुम्हारी उन शोला-बार[3] आँखोंपै मेरी नज़रोंके प्यार बरसे
मेरी उमीदों, मेरी तमन्नाओंने सदा दी
ये नफ़रतोंकी हसीन मिशअल[4] जलाये रखना
कि यह मुहब्बतके दिलका शोला है जिसकी रंगीन रोशनीमें
हमारे मक़सदके वास्ते जगमगा रहे हैं

तुम्हारी आँखें जो मेरे सीनेमें तैरती हैं
कँवलकी कलियाँ जो मेरे दिलमें खिली हुई हैं
इन्हींसे दो और आँखें बेदार हो गई हैं
वो नन्हे नन्हे चमकते हीरे, वो नन्ही कनियाँ[5]
जो मेरी आँखोंका नूर लेकर तुम्हारे आँचलसे झाँकती हैं
फिर और आँखें, फिर और आँखें, फिर और आँखें
ये सिलसिला ता अबद[6] चलेगा
ज़मानेकी गोदमें सितारोंके हुस्नकी नद्दियाँ बहेंगी
वो सब तुम्हारी
वो सब हमारी ही आँखें होंगी
हमारी आँखोंसे आज शोले बरस रहे हैं
मगर वो कलका हसीन दिन देखो कितना नज़दीक आ रहा है
हमारी आँखोंसे जब बहारें छलक पड़ेंगी

---

[1]ऊँची ऊँची लपटें [2]घृणा के नरकों [3]शोला बरसानेवाली [4]सुन्दर मशाल [5]कनी, हीरेका बहुत ही छोटा कण [6]अनन्त काल तक

'मख़मूर' जालन्धरी –

चेमीगोइयाँ

(कानाफूसी)

अरी कुछ सुना तूने क्या हो गया
बहन नास पीटा ये चूल्हा तेरा
कभी एक पलको न ठंडा हुआ
अभी बर्तनोंका भरा टोकरा
तेरे सामने है पड़ा

बहन ! जान मारो तो लुक़मे[1] चबाओ
हुआ तेज इतना जमानेका ताव
कि अब हड्डियाँ अपनी घोलो तो खाओ
चलो छोड़ो क़िस्मतपै क्यों सर खपाओ
कोई ताज़ा क़िस्सा सुनाओ

बहन कुछ न पूछो हया[2] उठ गई
चहीती वह नाज़ों पली लाडली
नवेली बहू लाजपत रायकी
करेगी कहीं आजकल नौकरी
नहीं लोभकी हद कोई

---

[1]कौर, ग्रास [2]लाज

उई राम ! पूछो तो हम सच बतायें
पढ़ी और लिखी बाल खोले बलायें
न मर्दोंसे जिस रोज़ कन्धा भिड़ायें
न जब तक उन्हें देखकर मुस्करायें
वह घर अपने तब तक न आयें

बहन ग़ैरका हाथ हमपर पड़े
तो लगता है यों जैसे बिच्छू लड़े
यही चाहते हैं वहींपर खड़े
वह उतनी जगह या गले या सड़े
बुरे हाथ जिस जा पड़े

बहन ! मर्दकी शान है वह कमाय
कमाया हुआ उसका कुल कुन्बा खाय
जो कुछ रूखा सूखासा बाहरसे लाय
उसे बीवी धोये, सँवारे, पकाय
सियानी सुघड़ नाम पाय

मुझे देखो, यह कोई दावा नहीं
कभी घरमें तिनका भी होता नहीं
अगर भूखे सोयें तो परवा नहीं
ज़बाँपर कभी कोई शिकवा[1] नहीं
गिला अपना शेवा[2] नहीं

बहन, तुमसे क्या अपनी बिपता छिपाऊँ
हया रोके है वरना कुरता उठाऊँ

---

[1]शिकायत [2]स्वभाव

तो शलवारकी खस्ता हालत बताऊँ
कई खिड़कियाँ और रोज़न[1] दिखाऊँ
कहाँ और टाँके लगाऊँ

अरी नौकरी तो बहाना है बस
नई पौद सचमुच हवस[2] है हवस
इरादे गुनहगार नीयत नजिस[3]
सदा पाएँ मर्दोंकी क़ुरबतमें[4] रस
कि घेरे रहें पाँच दस

यही झक, दिखाती फिरें बाँकपन
कि घरमें सराहे न कोई फबन
कमर गामज़न[5] सीना भी गामज़न
पयाम[6] अँखड़ियाँ और दावत[7] बदन
सभी बेसवाके चलन

हमें तो बहन नख़रे आते नहीं
कभी सुर्ख़ी पौडर लगाते नहीं
दुपट्टेको सरसे गिराते नहीं
ये बालोंमें चिड़िया बनाते नहीं
ये सीना दिखाते नहीं

हमारी क़नाअत[8] हमारा सिंगार
भला कुछ भी लगता नहीं रंगदार

---

[1]छेद [2]लोभ [3]नापाक [4]सम्पर्क [5]चलती हुई [6]संदेश
[7]निमंत्रण [8]सन्तोष

वो शादीके जोड़े तो थे तीन चार
लिया है सब उनपरसे गोटा उतार
कि है सादगी ख़ुद बहार

बहन अब तो गहना भी फबता नहीं
सुनो तुमसे तो कोई पर्दा नहीं
एक आवेज़ा[1] भी घरमें रक्खा नहीं
किसी चोर उचक्केका खटका नहीं
ज़रा दिल धड़कता नहीं

बहन बात मेरी अधूरी रही
ये अंधेर है औरत और नौकरी
अभी तो ज़मानेकी यह गत बनी
न देखा न ऐसा सुना था कभी
अभी उलटी गंगा बही

चलें देके मर्दोंके हाथोंमें हाथ
अगर आज इसके तो कल उसके साथ
करें भोंडे फ़ैशनमें मेमोंको मात
बस एक बच्चेके बाद पाएँ निजात
कि औलाद है दुखकी रात

इधर माएँ छः सात बच्चोंकी हम
करें शुक्र भगवानका दमबदम
कि जिसने किया हमपै इतना करम
करेगा वही उनकी रोज़ी बहम[2]
मिलेगा न ज़्यादा न कम

---

[1]बुन्दा [2]जीविकाका प्रबन्ध

बहन बात फिर बीचमें कट गई
नवेली बहू लाजपत रायकी
महीनों ससुरसे झगड़ती रही
कि "घरमें बढ़ी जाती है भुखमरी
मुझे करने दो नौकरी"

बहन ठीक है पेट भरता नहीं
महीना गुज़ारे गुज़रता नहीं
मगर आदमी इससे मरता नहीं
कोई बेहयाई तो करता नहीं
कुएँमें उतरता नहीं

बहन तेरा मुँह क्यों है उतरा हुआ
लहू जैसे सारा निचोड़ा हुआ
तुझे बैठे बैठे भला क्या हुआ
अरी फोड़ा निकली तू रिसता[1] हुआ
कोई आज झगड़ा हुआ

बहन कोई दिन ऐसा कटता नहीं
कि जब आसमाँ सिरपै फटता नहीं
घटाया बहुत खर्च घटता नहीं
इसी वास्ते झगड़ा हटता नहीं
घिरा अभ्र[2] छटता नहीं

बहन, भूखका गर्म बाज़ार है
फ़िरंगी न अब उसका व्योपार है

---

[1]बहता हुआ [2]बादल

सरोंपर टँगी फिर भी तलवार है
यक़ीनन कोई हममें बटमार है
हमींमें रयाकार[1] है

बहन उस निगोड़ेको गोली लगे
कहींसे कोई तेज़ आँधी उठे
महल उसका हो जाय ऊपर तले
सदाके लिये उसका दीपक बुझे
जो दिन रात हमको छले

अहा हा तेरे मुँहमें मिस्री बहन
तेरी बात पूरी हो जल्दी बहन
बने पूतों और दूधोंवाली बहन
जिये तू जुगों तक चहीती बहन
लगे उम्र मेरी बहन

गुजिया पनवाड़िन

(१)

दुकाँ चलती हुई तुम क्यों बढ़ाओ
उठो गुजिया इसे फिरसे सजाओ
न जाओ और थोड़े दिन न जाओ

---

[1]धोखेबाज़

तुम्हें जिसने सड़ककी धूल समझा
जुदाईमें न उसकी रंज उठाओ
उठो इक पान बल खाकर लगाओ

गई आँधी बुलाई है किसीने
सँवारो ज़िन्दगी, बीती भुलाओ
कड़े छनकाओ, भरके मुस्कराओ

अगर धनराज नथिया ले उड़ा है
तो फिर बेकार तुम क्यों सर खपाओ
सितारा टाँककर बिन्दी लगाओ

तुम्हारा कब हुआ धनराज छोड़ो
तुम अपनी शोख़ियाँ वापस बुलाओ
घुली मेंहदीको तलुवोंमें रचाओ

अदाएँ सौंतकर गद्दीपै आओ
जो बैठो रात तक लहँगा उठाओ
जो उट्ठो, जानकर पायल बजाओ

रचाया तुमने मेहनतको बदनमें
तो फिर क्यों हाथ मेहनतसे उठाओ
दुकाँको छोड़कर गुजिया न जाओ

(२)

न जाओ और थोड़े दिन न जाओ
कहाँ बैठेंगे दुखियारे बिचारे
अभी दरकार हैं नख़रे तुम्हारे

कई दिल सूने हो जाएँगे गुजिया
लगाओ फूल ज़ुल्फ़ोंके किनारे
कि जैसे घोर अँधेरेमें सितारे

अभी हिम्मत कहीं मचली नहीं है
अभी कमज़ोर हैं फ़ाक़ोंके मारे
अभी चलते हैं ले लेके सहारे

न जाओ और थोड़े दिन न जाओ
कि टूटें ख़ौफ़के ये जाल सारे
बढ़ें बरसोंके ग़म छाती उभारे

चली जाओगी तुम गुजिया तो सोचो
कहाँ बैठेंगे दुखियारे बिचारे
अभी दरकार हैं नख़रे तुम्हारे

(२)

अभी दरकार हैं नख़रे तुम्हारे
ज़रा खनकाओ चूड़ी सोहन आए
बदनमें इनका फाहा लगाए

लगाओ क़हक़हा बलराम निकले
लबोंमें पानका बीड़ा दबाए
फटी नेकरको पीछेसे छुपाए

वह ताँगेवाला गुज़रा उसको छेड़ो
कि मीठा पान खाने लौट आए
इशारे मस्त आँखोंमें बिठाए

कलाई मोड़कर 'लमनेड' खोलो
यह चावी इस अदासे काग उड़ाए
हवामें इक पटाखा गूँज जाए

उबलती गैसकी आवाज़ सुनकर
जम्हाई लेके उट्ठे फ़ज़ल आए
डली चूनेकी कल्लेमें दबाए

दुकाँपर गहमा-गहमी पाके यूनुस
गलेमें बाँधके रूमाल आए
रँगीली बाँसुरी मुँहसे लगाए

न जाओ, क्या तुम्हें अब दुःख न होगा
कि यह रंगीन महफ़िल टूट जाए
उजाले फैलकर बन जाएँ साए

(४)

यह महफ़िल छोड़कर जाओ न गुजिया
ख़ुशीकी क्या तुम्हें चाहत नहीं है
यह आबादी बुरी संगत नहीं है

अभी ये लोग सोकर उठ रहे हैं . .
अभी इनमें कोई हिम्मत नहीं है
लपककर बढ़नेकी जुर्रत नहीं है

अभी तो रौशनी आई है इन तक
अब इनकी मलगजी रंगत नहीं है
अँधेरा इनकी अब क़िस्मत नहीं है

गुज़रती मोटरें अब सोचती हैं
ये मुर्दारोंकी पंचायत नहीं है
ये जमघट अधनुई रैयत नहीं है

न जाओ छोड़कर इनको न जाओ
कि पीछे हटनेकी सायत नहीं है
जहाँको प्यारकी फ़ुरसत नहीं है

(५)

जहाँको प्यारकी फ़ुरसत नहीं है
कि इन्साँ और ही ग़म खा रहे हैं
ये बेचारे बदलते जा रहे हैं

सुना करते थे जो परियोंके क़िस्से
सच्चाईको वह अब अपना रहे हैं
पुराने झूठको ठुकरा रहे हैं

भरी दुनियामें क्या कुछ हो रहा है
अभी अख़बार भी पढ़वा रहे हैं
और उसपर बहस भी फ़रमा रहे हैं

तुम ऐसेमें चली हो घरसे गुजिया
कि जब तूफ़ान बढ़ते आ रहे हैं
नए इन्सान ढलते जा रहे हैं

(६)

नए इन्सान ढलते जा रहे हैं
लगाकर पान दो इनको अदासे
झुकाके सरको बेपरवा हयासे

तुम्हारी हाट इनका मदरसा है
कि नफ़रत हो चली इनको रियासे
भयंकर रूप सोनेके खुदासे

यह धन्वन्तर[1] किए हैं जिसने पैदा
बहुत इन्सान अब तक बदनुमासे
दरिन्दोंकी तरहसे खूंके प्यासे

कड़े छनकाओ, भरके मुस्कराओ
लगाकर पान दो इनको अदासे
कि हैं बेज़ार ज़ुल्मे-नारवासे[2]

तुम ऐसेमें न जाओ घरसे गुजिया
यही मजबूर, तुम ऐसे सताए
बढ़ेंगे तुमको कंधोंपर उठाए

नरेश कुमार 'शाद'—

चरागाँ

जब भी देखा है मेरी चश्मे-तख़ैयुलने[3] तुझे
तेरे चेहरेपै उदासीके निशाँ देखे हैं
तू जिन्हें आज छिपाती है मेरी नज़रोंसे
वही आँसू तेरी आँखोंमें रवाँ[4] देखे हैं

---

[1]सृजनहार [2]अनुचित अत्याचार [3]कल्पनाकी दृष्टि [4]प्रवाहित

दरहक़ीक़त मुझे पहले ही यक़ीं था कि तुझे
मेरे हालात कभी रास नहीं आएँगे
तेरे दोशीज़ा व ज़रकार[1] ख़यालोंके कमल
मेरे इदराकको[2] छू लेंगे तो जल जाएँगे

यह भी मालूम था जब मेरे अलमख़ानेमें[3]
तेरे गाते हुए ख़्वाबोंका फ़सूँ[4] टूटेगा
तेरी आँखोंसे तपकते हुए छालेकी तरह
एक अरमान भरे दिलका लहू फूटेगा

क़ाबिले-रह्म है वो तेरा तसव्वुर जिसने
एक सहरासे बहारोंकी तवक़्क़ाकी[5] थी
रेतके ज़र्रोंकी झुलसी हुई ताबानीसे[6]
जगमगाते हुए तारोंकी तवक़्क़ा थी

ये तवक़्क़ा तेरे होंठोंका तबस्सुम थी मगर
उसकी तकमीलकी[7] तस्वीर यही आँसू हैं
तूने मर मरके तराशा था जिसे आँखोंमें
उस हसीं ख़्वाबकी ताबीर[8] यही आँसू हैं

यही आँसू हैं तेरे जश्ने-उरूसीका[9] सिंगार
जिनके परदेमें तेरे प्यारका दिल रोता है
इस तमद्दुन[10] में तसव्वुर[11] की उड़ानोंका मआल[12]
अक्सर औक़ात[13] मेरी जान यही होता है

---

[1]कुँआरे और सुनहरे [2]चेतना [3]दुखगृह [4]जादू [5]आशा [6]चमक [7]पूर्णता [8]स्वप्न-फल [9]विवाहोत्सव [10]संस्कृति [11]कल्पना [12]परिणाम [13]बहुधा समयपर

अपने माँ बापकी शफ़क़त[1] भी है किस जौरसे कम
जिसने तोड़े हैं तेरी शोख़ उमंगोंके अयाग़[2]
और मुझे सौंपके ये तेरी सुलगती आँखें
मेरे एहसासकी तुरबतपै[3] जलाए हैं चराग़

क़तील शिफ़ाई--

ताजिरोंके देशमें

(एक ख़तका जवाब)

माँ ! तेरे इफ़लासके सब वाहिमे[4] बेसूद हैं
मेरी पलकोंपर तेरे आँसू अभी मौजूद हैं
मेरे सीनेमें तेरी ही बेबसीका दर्द है
तेरे चेहरेकी तरह मेरा भी चेहरा ज़र्द है
छीन लाया हूँ अगर तुझसे मैं अपने आपको
टोक सकती है तेरी मम्ता मेरे इस पापको
लेकिन ए भूखे बुढ़ापेकी मुक़द्दस-राज़दार[5]
घर पै फ़ाक़े आज भी करते हैं मेरा इन्तज़ार
दिन ढले रखता हूँ जब पहला क़दम देहलीज़पर
तैर जाती है नज़रकी मुर्दनी[6] हर चीज़पर
रुख़पर इतमीनानका बहुरूप भर लेता हूँ मैं
सौ बहाने अपनी मजबूरीसे कर लेता हूँ मैं

---

[1]स्नेह [2]प्याले [3]क़ब्र [4]वह्म, भ्रम [5]पवित्र, पूज्य भेद जाननेवाली [6]निस्तेजता

माँ तेरी अफ़सुर्दगी[1] ढलती है जब तहरीरमें[2]
चीख़ती है ज़िन्दगी एक बेसदा[3] ज़ंजीरमें
तू कुछ अनदेखे महलकोंसे[4] बुलाती है मुझे
फिर भी तेरी ख़ुदफ़रेबी[5] ढूंढ लाती है मुझे
बेमुरव्वत फ़िक्रकी हर बात सुन लेती है तू
मोतियोंके नामपर कंकर भी चुन लेती है तू
तू समझती है कि मैं एक शायरे मशहूर हूँ
कौन समझाए तुझे मैं किस क़दर मजबूर हूँ
मेरे बसमें हो तो शोहरतकी[6] जवानी बेच दूँ
भूख है उनवान[7] जिसका वह कहानी बेच दूँ
कौन इस फ़नको करेगा जज़्ब अपनी ज़ातमें
जो लगाए दर्दके पैवन्द एहसासातमें[8]

माँ ! अगर अफ़लास ही वजहे-कदूरत[9] है तुझे
तेरी ही मानिन्द रोटीकी ज़रूरत है मुझे
तूने पाया है अगर मुझमें अमारतका[10] सुराग़
तेरी इस तहक़ीक़[11]से लौ दे उठे हैं दिलके दाग़
मेरी हस्तीमें अज़लसे[12] प्यार है शामिल तेरा
मेरे सीनेमें धड़कता है अभी तक दिल तेरा
तेरे ख़ूँसे आज भी रग रग मेरी सेराब है
जिसकी मैं ताबीर हूँ तू वह मुनव्वर[13] ख़्वाब है
लेकिन ए भूखे बुढ़ापेकी मुक़द्दस राज़दार
घर पै फ़ाक़े आज भी करते हैं मेरा इन्तज़ार

---

[1]उदासी [2]लिखावट [3]मौन [4]छोटे महल [5]अपनेको धोखा देनेकी मनोवृत्ति [6]ख्याति [7]शीर्षक [8]भावनाओं [9]दुखका कारण [10]अमीरी [11]छानबीन खोज [12]आदिकाल [13]चमकते

दूर कोसों दूर तुझसे इल्म-ओ-फ़नके[1] भेसमें
बिक रही है भूख मेरी ताजिरोंके देसमें

माँ ! तेरे नज़दीक जिस नेमतका[2] शोहरत नाम है
ताजिरोंके देसमें वह एक जिन्से-ख़ाम[3] है
रात भर जब ज़ेह्नमें[4] बोता हूँ फ़न-पारा[5] कोई
काटता हूँ सुब्ह दम टूटा हुआ तारा कोई
शाम तक हर रोज़ जब कंगाल हो जाता हूँ मैं
आप अपने मालका दल्लाल हो जाता हूँ मैं
कौड़ियोंके मोल बिक जाते हैं फ़न पारे मेरे
बारहा फेंके गए कीचड़में अंगारे मेरे
फ़नके हुस्ने-दिलनशींको[6] आम[7] कर देता हूँ मैं
पेटकी ख़ातिर उसे नीलाम कर देता हूँ मैं
कौन कहता है मेरी तख़लीक़[8] मेरे साथ है
ताजिरोंके हाथमें शेर-ओ-अदबका[9] हाथ है

अब्दुल मजीद भट्टी—

परवाज़ (उड़ान)

सियाहीमें फैले हुए
सुर्ख़ और ज़र्दसे बादलोंमें
जो उलझे हुए हैं

---

[1]विद्या और कला [2]अमूल्य वस्तु [3]कच्चा माल [4]मन-मस्तिष्क [5]फ़न=कला, पारा=टुकड़ा [6]कलाके मनोहर सौंदर्य [7]साधारण चीज़ बना देता हूँ [8]रचना [9]कविता और साहित्य

जो पैहम[1] उलझते चले जा रहे हैं
उड़ी जा रही हूँ
उड़ी जा रही हूँ
कुछ ऐसा है जैसे कि पर लग गये हैं
मगर मैं पलटकर न जाने
किसे देखना चाहती हूँ
न जाने मुझे कौन याद आ रहा है
ख़लाओंमें[2] बानातसी[3] बिछ रही है
कि नन्ही लहूकी बही जा रही है
मैं जिसके किनारे
फिसलते फिसलते चली जा रही हूँ
मगर फाँस मेरे गलेमें है कैसी
न जाने नसें मेरी क्यों खिंच रही हैं
शहाबी लबादेसे[4] मैं देखती हूँ
फ़िज़ा लजलजीसी[5] हुई जा रही है
अँधेरे उजाले हैं दस्त-ओ-गरेबाँ[6]
बगूले लहूमें नहाए हुए हैं
न जाने ये सुर्ख़ आँधियाँसी हैं कैसी
सियाहीमें फैले हुए—सुर्ख़ दामन
न जाने यहाँ ख़ूँ हुआ है किसीका
मगर फाँस मेरे गलेमें है कैसी
न जाने नसें मेरी क्यों खिंच रही हैं
न जाने ये है कोई मज़बूह[7] बकरी

---

[1]बार-बार [2]शून्यों [3]मख़मल [4]लाल पोशाक
[5]नर्म [6]लड़ रहे हैं [7]कटी हुई

कि मेरी बहनका गला कट गया है
नहीं यह तो मैं खुद हूँ
खूनी दरिन्दोंके[1] हल्क़ेमें[2]
अपने लहूकी रवानीमें बहती चली जा रही हूँ

नहीं अब नहीं उनकी मुझ तक रसाई[3]
बुलन्दी पै परवाज़ मैं कर रही हूँ
ख़लाओंमें फैले हुए
सुर्ख़ और ज़र्दसे बादलोंमें
मुझे अपनी मंज़िल नज़र आ रही है
मगर देखकर अपने हाथोंकी मेंहदी
न जाने मुझे कौन याद आ रहा है
न जाने ये मेरी निगाहें पलटकर
किसे देखती हैं
किसे देखना चाहती हैं

अरे आ गया तू
मेरे प्यारे नन्हे
अब इन्सानियत और इन्सांकी ज़दसे
बहुत दूर हैं हम
वह देखो अँधेरेमें कुछ कुछ उजाला नज़र आ रहा है
वहीं हमसे पहले
अभी हाँ अभी तेरे अब्बा गये हैं

ये बानातसी फैलती जा रही है
कि नद्दी लहूकी

---

[1]हिंसक पशुओं [2]घेरे [3]पकड़ पहुँच

मगर इससे मतलब
ग़नीमत है मेरे लिये मेरे नन्हे
कि तू आ गया है
ख़लाओंके इन सुर्ख़ और ज़र्दसे बादलोंमें
जहाँ कोई इन्साँ नहीं है
न जाने बगूलेसे क्यों उठ रहे हैं
फ़िज़ा लजलजीसी हुई जा रही है

चोर

काट दो हाथ मेरे, चोर हूँ मैं
लेकिन हथियार न ठीकेपै हो बनवाया गया
ठीकेदारोंको भी मैं क्यों कोसूँ
कि हरे नोटोंसे
पास होता है जो हर साल तो बिल मिलते हैं
अह्लकारोंका भी क्या जुर्म है, जब
चोर बाज़ारमें उनकी भी गिरह कटती है
और गिरहकट भी हैं मजबूर कि 'परमिट' अक्सर
कुछ मुनाफ़े ही पै वो लेते हैं
मिलके मालिक हों कि हों ख़ुर्दाफ़रोश
गुर कमाईके सभी जानते हैं
रातका धन्धा हो या दिनके उजालेमें ब्लैक
कारवार और तिजारत ही तो है
खोपरा[1] घीमें, तो है दूधमें पानी भी हलाल[2]

---

[1]नारियल [2]उचित

आज बाज़ारका फ़तवा है यही
मैं कि मालिक हूँ किसी मिलका, न हूँ ख़ुर्दाफ़रोश
और मेरे हाथोंमें क़ैंची भी नहीं
मैंने जीना भी जो चाहा, तो फ़क़त दूसरे ही फ़ाक़े तक
काट दो हाथ मेरे, चोर हूँ मैं

इब्नेइन्शा—

सराय

नगर पराया चैत महीना, सूनी रात सराय
दीवारोंपर मैले-मैले, फैले-फैले साय
आनेवाली कलका छलवा लपक झपक दिखलाय
क्या क्या स्वांग रचाय

घड़ीकी सूई सदियाँ बीत चुकीं तू एक बजाय
आसकी बेल निहायत निर्बल, छायासे शर्माय
अन्धा दीपक मतवाली पुरवाके थपेड़े खाय
काँप काँप रह जाय

नीलम नीलाकाशपै अपना पीला जाल बिछाय
सुग्घस सुग्घस सन्देसोंसे अपने पास बुलाय
चंचल चन्दा दूर दूरसे देखे और मुस्काय
लेकिन हाथ न आय

दिलपर सोच, पुरानी बैरन रह रह चोट लगाय
नाहक़ तुमने मंज़िल मंज़िल पथ पथ दिये जलाय
चार कोट वही घोर अँधियारा चार कोट अन्याय
दिन दिन बढ़ता जाय

घूँ घूँ, घूँ घूँ, चर्ख़ी घूमे पहिया शोर मचाय
शप शप, शप शप, पट्टोंमें लिपटी क़िस्मत चक्कर खाय
कहीं तो चक्की मोटा पीसे मैदा कहीं बनाय
और कहीं थम जाय

टट टट, टट टट, बैलकी जोड़ी घूमे सीस नवाय
हलकी नोक लकीरें खोदे, लेखके भेद बताय
हलवाहा जहाँ सुबह समय था, शामको जब सुस्ताय
वहीं सितारे पाय

कालके काले काले राक्षस चार कोटमें छाय
अँतड़ियोंमें भूखकी किरचें, जहाँ तहाँ हर जाय
गोदामोंपर खूनी पहरे खवेसे खवा मिलाय
संगीनें चमकाय

शहरका क़ाज़ी फ़तवे छापे गली गली फैलाय
मोड़ मोड़पर दुखिया गोरी यादके दीप जलाय
सोच रही है इतने दिनमें कितने पाप कमाय
किसको गिनती आय

फिर ज़हरी बमबार फ़िज़ापर झपटे और ग़ुर्राय
पूरब देस धुएँका बादल आग पड़ा बरसाय
पच्छिमके गिद्धोंके लश्कर आए परे जमाय
लाशोंपर मँडलाय

कभी अक़ाब,[1] कभी स्वास्तिका, एक आए एक जाय
जंगका लूका घर, खेती, खलिहान पड़ा झुलसाय
कहीं तो बेरुत होली खेले कहीं बसन्त मनाय
रूप अनूप दिखाय

---

[1]बाज़, (इटलीकी तानाशाही सरकारका राज्य चिन्ह)

हम जागीर क़लमकी लेकर क्या खोए क्या पाये
शब्द मनोहर, बोल कटीले, रम्ज़ें और कनाये[1]
सब ग़ज़लोंके कहनेवाले कवियोंने अपनाये
अपने हाथ न आय

पीतकी मीठी बातें छोड़ीं, छोड़ीं और पछताय
धरतीके बेटोंकी बिपताओंके आल्हे गाय
चोरोंकी मानिन्द बँधी मुश्कोंमें पकड़े आय
दीवाने कहलाय

यारोंका एक ग़ोल छनाछन जेबोंको छनकाये
उन लोगोंने चाकरियोंमें सस्ते टके कमाये
'इन्शा' जैसे एक बार भटके तो हुए पराये
कोई न धोखा खाय

नगर पराया चैत महीना, सूनी रात, सराय
दीवारोंपर मैले मैले, फैले फैले, साय
आनेवाली कलका भरोसा दिन दिन उठता जाय
यारो कोई उपाय
यारो कोई उपाय

श्रीमती 'अदा' जाफ़री—

ये मेरे दिलको ख़याल आता है

देख तो सुरमयी आकाश पै तारोंका निखार
रातकी देवीके माथेपै चुनी है अफ़शाँ[2]

[1]संकेत, इशारे [2]कुमकुम

या कुछ अश्कोंके चराग़
हैं किसी राहगुज़रमें[1] लर्ज़ां[2]
आह यें सुर्मयी आकाश ये तारों के शरार[3]
यह मेरे दिलको ख़याल आता है
दम अँधेरेमें घुटा जाता है
क्यों न ऐवाने-तसव्वुरमें[4] जला लूँ शमएँ
बरबत-ओ-चंग-ओ-रबाब[5]
मुन्तज़िर हैं मेरे मिज़राबकी[6] एक जुम्बिशके[7]
ज़िन्दगी क्यों फ़क़त एक आहे-मुसलसल ही रहे
क्यों न बेदार[8] करूँ वो नग़मे
वक़्त भी सुनके जहाँ थम जाए
रहगुज़ारोंमें ये बहता हुआ ख़ूँ
मौतके साये तले सिसकियाँ भरती हैं हयात[9]
इस उमंडते हुए तूफ़ाँसे किनारा कर लूँ
ये सिसकती हुई लाशें, ये हयाते-मुर्दा
ये जबीनें[10] जिन्हें सजदोंसे[11] नहीं है फ़ुरसत
ये उमंगें जिन्हें फ़ाक़ोंने कुचल डाला है
ये बिकलती हुई रूहें ये तड़पते हुए दिल
इन ढलकते हुए अश्कोंको चुराकर मैं भी
अपने ऐवाने-तसव्वुरमें चराग़ाँ[12] कर लूँ
देखकर रातकी देवीका सिंगार
वह्म आता है मगर

---

[1]राह, मार्ग [2]कम्पित [3]चिनगारियाँ [4]कल्पना भवन [5]बरबत, चंग और रबाब ये बाजों के नाम हैं [6]जिस से सितार बजाते हैं वह यंत्र [7]गति [8]जगाऊँ [9]जीवन [10]माथे [11]सिर झुकाने [12]दीप जला लूँ

नग़म-ओ-नैका[1] सहारा लेकर
ज़िन्दगी चल भी सकेगी कि नहीं
इन सितारोंकी दमकती हुई क़न्दीलोंसे
रातके दिलकी सियाही भी मिटेगी कि नहीं

फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'—

मुझसे पहली सी मुहब्बत मेरी महबूब न माँग

मुझसे पहलीसी मुहब्बत मेरी महबूब न माँग
मैंने समझा था कि तू है तो दरख़्शाँ[2] है हयात
तेरा ग़म है तो ग़मे-दह्रका[3] झगड़ा क्या है
तेरी सूरतसे है आलममें बहारोंको सबात[4]
तेरी आँखोंके सिवा दुनियामें रक्खा क्या है
तू जो मिल जाय तो तक़दीर नगूँ[5] हो जाये
यूँ न था, मैंने फ़क़त चाहा था यूँ हो जाये
और भी दुख हैं ज़मानेमें मुहब्बतके सिवा
राहतें और भी हैं वस्लकी राहतके[6] सिवा

अनगिनत सदियोंके तारीक बहीमाना[7] तिलिस्म
रेशम-ओ-अतलस-ओ-कमख़्वाबमें बुनवाए हुए
जा-ब-जा बिकते हुए कूचा-ओ-बाज़ारमें जिस्म
ख़ाकमें लुथड़े हुए ख़ूनमें नहलाये हुए

---

[1] गीत और बाँसुरी [2] चमकती, [3] सांसारिक दुख [4] स्थायित्व
[5] झुक जाय, [6] प्रेमिकासे मिलनका आनन्द [7] बर्बरतापूर्ण

जिस्म--निकले हुए अमराजके तन्नूरोंसे[1]
पीप बहती हुई गलते हुए नासूरोंसे[2]
लौट जाती है उधरको भी नजर क्या कीजे
अब भी दिलकश है तेरा हुस्न, मगर क्या कीजे
और भी दुख हैं जमानेमें मुहब्बतके सिवा
राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा
मुझसे पहलीसी मुहब्बत मेरी महबूब न माँग

चन्द रोज़ और मेरी जान फ़क़त चन्द ही रोज़

चन्द रोज और मेरी जान फ़क़त चन्द ही रोज
जुल्मकी छाँवमें दम लेनेपै मजबूर हैं हम
और कुछ देर सितम सह लें, तड़प लें, रो लें
अपने अजदादकी[3] मीरास[4] है माजूर[5] हैं हम
जिस्मपर क़ैद है जज्बात पै जंजीरें हैं
फ़िक्र महबूस[6] है गुफ्तार[7] पै ताजीरें[8] हैं
अपनी हिम्मत है कि हम फिर भी जिये जाते हैं
जिन्दगी क्या किसी मुफ़लिसकी क़बा[9] है जिसमें
हर घड़ी दर्दके पैवन्द लगे जाते हैं
लेकिन अब जुल्मकी मीआदके दिन थोड़े हैं
एक जरा सब्र कि फ़रियादके दिन थोड़े हैं
अरसए-दह्रकी[10] झुलसी हुई वीरानीमें

---

[1]तन्दूर [2]पुराने फोड़े [3]पूर्वजों [4]विरासत [5]असमर्थ [6]बन्दी [7]बोलने [8]दंड [9]कुर्ता [10]दुनिया, युग

हमको रहना है पै यूँही तो नहीं रहना है
अजनबी हाथोंका बेनाम गराँबार[1] सितम
आज सहना है हमेशा तो नहीं सहना है
यह तेरे हुस्नसे लिपटी हुई आलामकी[2] गर्द
अपनी दो रोज़ा जवानीकी शिकस्तोंका शुमार
चाँदनी रातोंका बेकार दहकता हुआ दर्द
दिलकी बेसूद तड़प जिस्मकी मायूस पुकार
चन्द रोज़ और मेरी जान फ़क़त चन्द ही रोज़

हल्के झोंके

(१)

जाँ बेचनेको आए तो बेदाम बेच दी
ए अह्ले-मिस्र[3] वज़ए-तकल्लुफ़[4] तो देखिये
इन्साफ़ है कि हुक्मे अक़ूबतसे[5] पेशतर
एक बार सूए-दामने-यूसुफ़[6] तो देखिये

---

[1]भारी [2]दुखों, कष्टों [3]ए मिस्रवालो [4]संकोच और शालीनताकी परम्परा तो देखो [5]बादमें जो हुक्म हो उससे पहले [6]यूसुफ़के दामनकी तरफ़, यूसुफ़ एक पैग़म्बर थे जो अत्यधिक सुन्दर थे, मिस्रकी रानी ज़ुलैख़ा उनपर आशिक़ हो गई, उसने उनको अपने साथ व्यभिचारके लिये विवश किया पर जब यूसुफ़ न माने तो उनपर आरोप लगाया कि वे उसकी लाज लूटना चाहते थे, परन्तु न्यायालय में यूसुफ़ अपने कुरतेका फटा दामन दिखाकर बच गये, क्योंकि उससे यह प्रमाणित हो गया कि उन्होंने भागनेका प्रयत्न किया था और ज़ुलैख़ाने उनका कुर्ता खींचा था और ज़बरदस्ती की थी

(२)

मताए-लौह-ओ-क़लम[1] छिन गई तो क्या ग़म है
कि ख़ूने-दिलमें डुबोई हैं उँगलियाँ मैंने
लबों पे मोह्र लगी है तो क्या कि रख दी है
हर एक हल्क़-ए-ज़ंजीरमें[2] ज़बाँ मैंने

(३)

तेरा जमाल[3] निगाहोंमें लेके उट्ठा हूँ
बिखर गई है फ़िज़ा तेरे पैरहनकीसी[4]
नसीम तेरे शबिस्ताँसे[5] होके आई है
मेरी सहरमें[6] महक है तेरे बदनकीसी

अख़्तर उरैनवी--

कोयल

कूक, कूक, ए कोयल कूक !
आँखसे ओझल तू है कोयल, तेरी हस्ती राज़
बनकी रानी तेरा जीवन है शीरीं आवाज़[7]
हूक उठती है दिलमें जब बजता है तेरा साज़
तेरी बोलीसे सौ सुन्दर सपनोंका आग़ाज़[8]
ए प्यारी शहनाज़
कूक, कूक, ए कोयल कूक

---

[1]काग़ज़ और क़लमकी दौलत [2]ज़ंजीर की कड़ी [3]सौन्दर्य [4]पोशाक [5]शयनागार [6]प्रभात [7]मधुर स्वर [8]आरम्भ

हृदय मेरा ए पंछी मायूसीका स्थान
रूह पै हैं तारीकी छाई मिट गये सब अरमान
दिलकी दुनिया ठंडी है और आशा है बेजान
ज़ीस्तका[1] मेरी नक़्शा यानी एक वीराँ सुनसान
मिट गये सब अरमान
कूक, कूक, ए कोयल कूक

अन्धी नगरी, लोभका धन्धा, दुनिया सारी माया
ज़ुल्मसे पूँजीवालोंके है सबपर दुखका साया
धरतीकी छातीके ऊपर दहके हैं : अंगारा
जगमें हर सू बहता है कमज़ोरके ख़ूँका धारा
सारी दुनिया माया
कूक, कूक, ए कोयल कूक

जगकी सेवा करनेवाले भूखे मरें बिचारे
सूखा चेहरा, गर्दनमें ख़म,[2] सौ आफ़तके मारे
अच्छे ख़ासे डाकू हैं सरमायावाले सारे
उनकी शहसे इन्साँपर बम बरसाएँ तैयारे[3]
कैसे हैं हत्यारे
कूक, कूक, ए कोयल कूक

देश विदेश पै छापा मारे ये पापी जल्लाद
ज़ुल्मसे उनके ख़ूँ रोती है आदमकी औलाद
लोभकी जंगोंसे यह आलम सारा है बरबाद
जो हैं जिन्दा सो अधमुए हैं बिपतासे नाशाद
किससे करूँ फ़रियाद
कूक, कूक, ए कोयल कूक

---

[1]जीवन [2]झुकाव [3]वायुयान

दिलमें शोरिश[1] उठती है, उठता है एक तूफ़ान
पापी तो सब ऐश करें और भूखे मरें दहक़ान[2]
जनता सारी बिपता भोगे डाकू हो प्रधान
नेकी रोती फिरती हो और राज करे शैतान
ग़ाफ़िल है भगवान
कूक, कूक, ए कोयल कूक

लूट मचे जब दुनियामें चुपचाप हो क्यों आकाश
दिलका दर्पन टूट चुका अब मिटता है विश्वास
जिस्म है मेरा ए कोयल एक चलती फिरती लाश
बर्फ़से ज्यादा ठंडी है दिखलाऊँ दिलकी क़ाश[3]
बुझा हुआ प्रकाश
कूक, कूक, ए कोयल कूक

गीतमें तेरे पिनहाँ[4] कोयल, शोलेकी तासीर[5]
रागमें तेरे रक़्साँ[6] कोयल, हस्तीकी तनवीर[7]
प्रेमकी देवी, तेरा नग़मा, उलफ़तकी तफ़सीर[8]
तानमें ऐसा सोज़[9] कि यह आकाशको जाये चीर
मेरे दिलपर तीर
कूक, कूक, ए कोयल कूक

काश, मेरे दिलको सुलगा दे नग़मेकी चिनगारी
तेरे गीतकी जोतीसे छट जाये यह अँधियारी

---

[1]हलचल [2]किसान [3]फाँक [4]निहित [5]प्रभाव [6]नाचती [7]ज्योति [8]व्याख्या [9]जलन

बोलकी शक्तीसे पैदा हो रूहमें एक बेदारी[1]
बहुत बड़ा यह दुख है पंछी ईमाँकी नादारी[2]
आत्मा है दुखियारी
कूक, कूक, ए कोयल कूक

अमर जोति ये कूक है तेरी, अमृतकी है धार
मधुर बोलसे तेरी गूँजे बस्ती और कोहसार[3]
सबमें ऐसा जज़्बा[4] भर दे जाग उठे संसार
आशाको बल-बूता दे दे नौका है मँझधार
टूटा है पतवार
कूक, कूक, ए कोयल कूक

महके है मसीक़ी[5] तेरी जैसी मस्त अंगड़ाई
सनक सनककर चैतमें जैसे चलती है पछुआई
हृदयको फिर आससे भर दे गीतकी दिल आराई
रूहको मेरी रफ़अत[6] बख़्शे उसको फ़लक पैमाई[7]
कट जाये कठिनाई
कूक, कूक, ए कोयल कूक

रागमें तेरे आग है कोयल, दिलमें भरदे जोश
हासिल हो ईमानको मेरे ईश्वरकी आग़ोश[8]
सारे बन्धन तोड़के रख दूँ नेश[9] को कर दूँ नोश[10]
दुनियाके दोज़ख़को[11] कर दूँ जन्नतका हमदोश[12]
आलम हो गुलपोश[13]
कूक, कूक, ए कोयल कूक

---

[1]जागृति [2]निर्धनता [3]पर्वत [4]भाव [5]संगीत [6]ऊँचाई [7]आकाशको नापनेवाली [8]गोद [9]कांटे, ज़हर भरा डंक [10]पीनेकी चीज़ [11]नरक [12]स्वर्गके बराबर [13]फूलोंसे लदा

मुईन अहसन 'जज़्बी'—

फ़ितरत एक मुफ़लिसकी नज़रमें

फ़ितरतके पुजारी कुछ तो बता, क्या हुस्न है इन गुलज़ारोंमें
है कौनसी रानाई[1] आख़िर, इन फूलोंमें इन ख़ारोंमें
वो ख़्वाह सुलगते हों शब भर, वो ख़्वाह चमकते हों शब भर
मैंने भी तो देखा है अक्सर, क्या बात नई है तारोंमें
इस चाँदकी ठंडी किरनोंसे मुझको तो सुकूँ होता ही नहीं
मुझको तो जुनूँ होता ही नहीं, जब फिरता हूँ गुलज़ारोंमें
ये चुप चुप नर्गिसकी कलियाँ, क्या जाने कैसी कलियाँ हैं
जो खेलती हैं, जो हँसती हैं और फिर भी हैं बीमारोंमें
यह लाल शफ़क़, ये लाला-ओ-गुल, एक चिनगारी भी जिसमें नहीं
शोले भी नहीं, गर्मी भी नहीं, हैं तेरे आतशज़ारोंमें[2]
उस वक़्त कहाँ तू होता है, जब मौसमे-गर्मा का सूरज
दोज़ख़की तपिश[3] भर देता है, दरियाओंमें कोहसारोंमें
जाड़ोंकी भयानक रातोंमें वह सर्द हवाओंकी तेज़ी
हाँ, वह तेज़ी, वह बेमेह्री[4] जो होती है तलवारोंमें
दरियाके तलातुमका[5] मंज़र हाँ तुझको मुबारक हो लेकिन
एक टूटी फूटी कश्ती भी चकराती है मँझधारोंमें
कोयलके रसीले गीत सुने, लेकिन ये कभी सोचा तूने
हैं उलझे हुए नग़मे कितने एक साज़के टूटे तारोंमें

---

[1]सौन्दर्य [2]आगकी वाटिका [3]गरमी [4]निर्दयता [5]तूफ़ान

बादलकी गरज, बिजलीकी चमक, बारिशमें वो तेज़ी तीरों
में ठिठुरा सिमटा सड़कोंपर, तू जाम-बलब मयख़ा
सब होश-ओ-ख़िरदके[1] दुश्मन हैं, सब क़ल्ब[2]-ओ-जिगरके रहज़
रक्खा है भला क्या इसके सिवा इन राहते-जाँ महपारों
वह लाख हिलालोंसे भी हसीं, कैसी ज़ोहरा कैसी परवी
एक रोटीका टुकड़ा जो कहीं मिल जाय मुझे बाज़ारोंमे
जब जेबमें पैसे बजते हैं, जब पेटमें रोटी होती है
उस वक़्त यह ज़र्रा हीरा है, उस वक़्त ये शबनम मोती है

मौत

अपनी सोई हुई दुनियाको जगा लूँ तो चलूँ
अपने ग़मख़ानेमें एक धूम मचा लूँ तो चलूँ
और एक जामे-मए-तल्ख़[5] चढ़ा लूँ तो चलूँ
अभी चलता हूँ ज़रा ख़ुदको सँभालूँ तो चलूँ

जाने कब पी थी, अभी तक है मए-ग़मका[6] ख़ुमार
धुँधला धुँधला नज़र आता है जहाने-बेदार[7]
आँधियाँ चलती हैं, दुनिया हुई जाती है ग़ुबार[8]
आँख तो मल लूँ ज़रा होशमें आ लूँ तो चलूँ

वह मेरा सेह्र,[9] वो एजाज़[10] कहाँ है लाना
मेरी खोई हुई आवाज़ कहाँ है लाना

---

[1]चेतना और बुद्धि [2]दिल [3]चाँदके टुकड़ों [4]तारोंके नाम [5]कड़वी शराबका प्याला [6]दुखकी मदिरा [7]जागता संसार [8]धूल [9]जादू [10]चमत्कार

मुईन अह

मेरा टूटा हुआ वह साज़ कहाँ है लाना
एक ज़रा गीत भी इस साज़पै गा लूँ तो चलूँ

मैं थका-हारा था इतनेमें जो आए, बादल
किसी मतवालेने चुपकेसे बढ़ा दी बोतल
उफ़ वो रंगीन पुर-असरार[1] ख़यालोंके महल
ऐसे दो चार महल और बना लूँ तो चलूँ

मुझसे कुछ कहनेको आई है मेरे दिलकी जलन
क्या किया मैंनें ज़मानेंमें नहीं जिसका चलन
आँसुओ ! तुमने तो बेकार भिगोया दामन
अपने भीगे हुए दामनको सुखा लूँ तो चलूँ

मेरी आँखोंमें अभी तक है मुहब्बतका ग़ुरूर
मेरे होंठोंको अभी तक है सदाक़त[2] का ग़ुरूर
मेरे माथेपै अभी तक है शराफ़तका[3] ग़ुरूर
ऐसे वह्मोंसे अभी खुदको निकालूँ तो चलूँ

मखदूम मुहीउद्दीन—

वतनकी आज़ादी

कहो हिन्दोस्ताँकी जय
कहो हिन्दोस्ताँकी जय

क़सम है ख़ूनसे सींचे हुए रंगीं गुलिस्ताँकी
क़सम है ख़ूने-दहक़ाँकी[4] क़सम ख़ूने-शहीदाँकी

---

[1]रहस्यपूर्ण [2]सत्यता [3]सज्जनता [4]किसानका ख़ून

ये मुमकिन है कि दुनियाके समुंदर ख़ुश्क हो जाएँ
ये मुमकिन है कि दरिया बहते बहते थकके सो जाएँ
जलाना छोड़ दें दोज़ख़के अंगारे ये मुमकिन है
रवानी तर्क कर दें बर्क़[1] के धारे ये मुमकिन है
ज़मीने-पाक अब नापाकियोंको ढो नहीं सकती
वतनकी शमए-आज़ादी कभी गुल हो नहीं सकती
कहो हिन्दोस्ताँकी जय
कहो हिन्दोस्ताँकी जय

वो हिन्दी नौजवाँ यानी अलमबरदारे[2]-आज़ादी
वतनका पासबाँ[3] वो तेग़-जौहरदारे-आज़ादी
वो पाकीज़ा शरारा बिजलियोंने जिसको धोया है
वो अंगारा कि जिसमें ज़ीस्तने[4] ख़ुदको समोया है
वह शमए-ज़िन्दगानी आँधियोंने जिसको पाला है
एक ऐसी नाव तूफ़ानोंने ख़ुद जिसको सँभाला है

वो ठोकर जिससे गेती[5] लर्ज़ा-बर अन्दाज़[6] रहती है
वो धारा जिसके सीनेपर अमलकी नाव बहती है
छिपी ख़ामोश आहें शोरे-महशर[7] बनके निकली हैं
दबी चिनगारियाँ ख़ुर्शीदे-ख़ावर[8] बनके निकली हैं
बदल दी नौजवाने-हिन्दने तक़दीर ज़िन्दाँ[9] की
मुजाहिदकी[10] नज़रसे कट गई ज़ंजीर ज़िन्दाँकी
कहो हिन्दोस्ताँकी जय
कहो हिन्दोस्ताँकी जय

---

[1]बिजली [2]आज़ादीका झंडा उठानेवाले [3]रखवाले [4]जीवन [5]पृथ्वी [6]काँपती है [7]प्रलयका शोर [8]सूर्य [9]कारागार [10]सत्यके लिये लड़नेवाले

मशरिक़

जेह्ल[1] फ़ाक़ा भीख बीमारी नजासतका[2] मकान
ज़िन्दगानी ताज़गी अक़्ल-ओ-फ़रासतका[3] मसान
वह्मज़ाईदा[4] ख़ुदाओंका रवायतका[5] ग़ुलाम
परवरिश पाता रहा है जिससे सदियोंका जज़ाम[6]
झड़ चुके हैं दस्त-ओ-बाज़ू[7] जिसके उस मशरिक़को देख
खेलती है साँस सीनेमें मरीज़े-दिक़को[8] देख
एक नंगी लाश बेगोर-ओ-कफ़न[9] ठिठरी हुई
मग़रिबी चीलोंका लुक़मा ख़ूनमें लुथड़ी हुई
एक क़ब्रस्तान जिसमें हूँ न हाँ कुछ भी नहीं
एक भटकती रूह है जिसका मकाँ कोई नहीं
पैकरे-माज़ीका[10] एक बेरंग और बेरूह खोल
एक मर्गे-बेक़यामत,[11] एक बेआवाज़ ढोल
एक मुसलसल रात जिसकी सुबह होती ही नहीं
ख़्वाबे-असहाबे-कहफ़को[12] पालनेवाली ज़मीं
इस ज़मीने-मौत-परवरदाको[13] ढाया जायगा
एक नई दुनिया नया आदम बनाया जायगा

---

[1]निरक्षरता [2]गन्दगी [3]विद्वत्ता [4]वह्मसे उत्पन्न [5]रूढ़ियों [6]कोढ़ [7]हाथ, बाज़ू [8]क्षयका रोगी [9]विना क़ब्र और कफ़न [10]अतीतकी मूर्ति [11]मृत्यु, जो क़यामतके दिन भी जीवनमें न बदले [12]दीर्घनिद्रा, असहाबे कहफ़के बारेमें क़ुरानमें लिखा है कि वे मरे नहीं किन्तु सो रहे हैं—चिरनिद्रा [13]मौतकी पोषक

मौतका गीत

अर्श[1] की आड़ में इन्सान बहुत खेल चुका
ख़ूने-इन्सानसे हैवान[2] बहुत खेल चुका
मोरे-बेजाँ[3] से सुलैमान[4] बहुत खेल चुका
वक़्त है आओ, दो आलमको दिगरगूं[5] कर दें
क़ल्बे-गेतीमें[6] तबाहीके शरारे भर दें

ज़ुल्मते-कुफ़्रको ईमान नहीं कहते हैं
सगे-ख़ूंख़ारको[7] इन्सान नहीं कहते हैं
दुश्मने-जाँको निगहबान[8] नहीं कहते हैं
जाग उठनेको है अब ख़ूंका तलातुम[9] देखो
मलकुल-मौतके[10] चेहरेका तबस्सुम[11] देखो

जान लो क़ह्रका सैलाब[12] किसे कहते हैं
नागहाँ, मौतका गिरदाब[13] किसे कहते हैं
क़ह्रके पहलुओंकी दाब[14] किसे कहते हैं
दौरे-नाशादको अब शाद किया जायेगा
रूहे-इन्सानको आज़ाद किया जायेगा

नालए-बेअसर[15] अल्लाहके बन्दोंके लिये
सिलए-दार-ओ-रसन[16] हक़के रसूलोंके[17] लिये

---

[1]ईश्वरका निवास स्थान, ईश्वरका नाम लेकर [2]पशु [3]निर्जीव चींटी [4]एक पैग़म्बर बादशाह जिसका हुक्म पशु पक्षी और कीड़े मकोड़े भी मानते थे [5]उलट पुलट [6]पृथ्वीका हृदय [7]ख़ूँख़्वार कुत्ता [8]रक्षक [9]तूफ़ान [10]यमदूत [11]मुस्कान [12]विनाशकी बाढ़ [13]भँवर [14]दबाव [15]प्रभावहीन रुदन [16]हथकड़ी बेड़ी और फाँसी [17]सत्यके अवतारों

क़स्रे शद्दादके[1] दर बन्द हैं भूखोंके लिये
फूँक दो क़स्रको गर 'कुन'[2] का तमाशा है यही
जिन्दगी छीन लो दुनियासे जो दुनिया है यही

ज़लज़लो आओ, दहकते हुए लावो आओ
बिजलियो आओ गरजदार घटाओ आओ
आँधियो आओ, जहन्नमकी हवाओ आओ
आओ यह कुरए-नापाक[3] भसम कर डालें
कासए-दह्रको[4] मामूरे-करम[5] कर डालें

शायर

कुछ क़ौस-क़ज़हसे[6] रंगत ली कुछ नूर चुराया तारोंसे
बिजलीसे तड़पको माँग लिया कुछ कैफ़[7] उड़ाया बहारोंसे

फूलोंसे महक, शाखोंसे लचक और मंडुओंसे ठंडा साया
जंगलकी कुँआरी कलियोंने दे डाला अपना सरमाया

बदमस्त जवानीसे छीनी कुछ बेफ़िकरी[8] कुछ अल्हड़पन
फिर हुस्ने-जुनूँ परवरने दी आशुफ़्तासरी[9] दिलकी धड़कन

बिखरी हुई रंगीं किरनोंको आँखोंसे चुनकर लाता हूँ
फ़ितरतके परीशाँ नग़मोंसे एक अपना गीत बनाता हूँ

फ़िरदौसे-ख़यालीमें[10] बैठा एक बुतको तराशा करता हूँ
फिर अपने दिलकी धड़कनको पत्थरके दिलमें भरता हूँ

---

[1]शद्दादका महल शद्दादने दावा किया था कि वह ईश्वर है [2]वह शब्द जिसके कहनेसे सृष्टिकी रचना हुई [3]यह अपवित्र पृथ्वी [4,5] संसारके भिक्षापात्रको कृपादानसे भर दें [6]इन्द्रधनुष [7]रस [8]जुनूनका पोषक सौन्दर्य [9]चंचलता [10]कल्पनाके स्वर्ग

'राही' मासूमरज़ा—

ज़बान

(भाषा)

जबान रातके माथेका माहताब नहीं
जबान गुलशने-काकुलका एक गुलाब नहीं
जबान खिलवते-मीनाका[1] आफ़ताब नहीं
जबान ओसकी बूँदोंका इजतराब[2] नहीं
जबान तारोंकी महफ़िल नहीं है गुलशन है
जबान बर्क़-नशेमन[3] नहीं, नशेमन है

जबाँ जमींसे उभरती है खेतियोंकी तरह
जबाँ जमीं पै मचलती है नद्दियोंकी तरह
घरोंमें रहती है माओंकी घुड़कियोंकी तरह
सड़क पै चलती है पैरोंकी आहटोंकी तरह
जबान एक गुले-नौरसकी[4] शोख़ नकहत[5] है
ख़ुदाकी देन नहीं है जमींकी मेहनत है

जबाँ मशीनोंकी पुरशोर गड़गड़ाहट है
जबान दूब पै शबनमकी नर्म आहट है
जबाँ कुएँके तरन्नुमकी[6] खिलखिलाहट है
जबान सबज़ए-गन्दुमकी सरसराहट है

---

[1]शराबकी मुहरबन्द बोतलके अन्दर चमकनेवाला सूर्य [2]चंचलता, कम्पन [3]घोंसलेपर गिरनेवाली बिजली [4]नया खिला फूल [5]सुगन्ध [6]गुंजन

जबान खेतोंमें रहती है बालियाँ बनकर
जबाँ मिलोंसे निकलती है कारवाँ बनकर

जबानसे जो लड़े ज़िन्दगीका दुश्मन है
चिराग़से जो लड़े रोशनीका दुश्मन है
जो एक हँसींसे लड़े, हर हँसींका दुश्मन है
जो एक कलीसे लड़े, हर कलीका दुश्मन है
झुकाना चाहे जो टैगोरके अदबकी जबीं
वो मीर-ओ-ग़ालिब-ओ-एक़बालका भी दोस्त नहीं

ज़बाने-नज़रुल[1]-ओ-टैगोरकी ये वे अदबी
ये आगही है कि दीवानावार बेख़बरी
मिज़ाजे-अर्ज़[2]से बेगानगीकी हद है कोई
ज़मीं पै धानकी गेहूँ न उग सकेगा कभी
उगेगा धान कि ये धान ही की क्यारी है
ज़मीं लहूसे डरेगी, ये बेख़याली है

तुम एक शहाब[3] हो और आस्माँसे लड़ते हो
ग़लत उरूज[4] हो और दास्ताँसे लड़ते हो
शरारे-मुर्दा[5] हो, आतशफ़िशाँसे[6] लड़ते हो
ब-ज़ोमे-ज़ोरे-हुकूमत[7] ज़बाँसे लड़ते हो
जो राह रोकने फ़ौजोंकी लारी आएगी
तो माँकी प्यार भरी बात हार जाएगी

---

[1]प्रसिद्ध बंगाली क्रान्तिकारी कवि क़ाज़ी नज्रुल इसलाम [2]धरती के स्वभाव [3]तारा [4]उठान [5]मृत चिनगारी [6]ज्वालामुखी [7]सरकारी शक्तिके बलपर

ये इन्तज़ारे-सहर[1] कामयाब भी होगा
सुनो कि धरतीपर एक इन्क़लाब भी होगा
हमारे पास तुम्हारा जवाब भी होगा
लहू बहा लो लहूका हिसाब भी होगा
हयात शोरिशे-तूफ़ाँको[2] याद रखती है
ज़मीन ख़ूने-शहीदाँको याद रखती है

फ़िज़ाए-ढाकामें गूँजी हुई सदाओ सुनो
ज़बान नारोंसे गूँजी हुई फ़िज़ाओ सुनो
हुदूदे-नज़रुल-ओ-टैगोरकी हवाओ सुनो
सुनो, निहत्थे जवानों व सूरमाओ सुनो
घना अँधेरा है एक आफ़ताब देता हूँ
सुनो तुम्हें ख़बरे-इन्क़लाब देता हूँ

ये रास्तों पै जो गोलीकी तड़तड़ाहट है
हवाके दोश पै ख़्वाबोंकी गुनगुनाहट है
फ़िज़ामें शहपरे-फ़र्दाकी[3] सरसराहट है
अँधेरेमें सहरे-मुन्तज़िरकी आहट है
लहू अँधेरेमें रोशन चिराग़ बोता है
लहूसे रातका दामन भी लाल होता है

---

[1]सुबहका इन्तज़ार [2]तूफ़ानकी हलचल [3]भविष्यके पर

अदम—

सुहाग

रात कितनी मस्त है शौक़ क्या जवान है
फ़र्शे-गुल है जेरे-पा[1] सर पे आस्मान है
हर नजर है इलतिजा हर अदा जबान है
अबरुओंमें गीत हैं अँखड़ियोंमें तान है
काश कोई छेड़ दे एक गिरह उधेड़ दे
गेसुओंके जालको चारसू बिखेरकर
देखती हूँ रास्ता नयन फेर फेर कर
काश लाये चाँदनी कोई सैद[2] घेरकर
देख देख रे सजन अब न इतनी देरकर
आके मुझको भींच ले मयसे होंठ सींच ले

मसऊद हुसैन—-

गुलामोंका नाच

खी खी खी खी खी
मेरे अन्दर
आज हँसी फिर माता काली
सात पियासें जाग उठी हैं

---

[1]पाँवके नीचे [2]शिकार

इस तनमें
नाच रहा है मन--भैरोंकी
हर हर गतपर
लेकिन कैसे भर पाऊँगा
तेरा खप्पर
खून कहाँ है, सोच यही
खी खी खी खी खी

सबसे बड़ा है तेरा खप्पर
बूढ़े दादा
मुंडोंको भी तू है चाहता
ताकि बनाके उनकी माला
डाल गलेमें नाचे, आहा
क्योंकि तेरे खूनमें नाची
थीं उनकी तलवारें
अब जी भरके नाच
और जी भरके पी
तेरे साथ-तेरे क़दमोंपर
नाचेंगे हम भी
खी खी खी खी खी

रोक सकेंगी क्या जंजीरें
ये तो देंगी ताल
नाचो, नाचो सातों नाच
इस चक्करसे
इस मैदाँसे
बचके न जाए कोई भी
खी खी खी खी खी

अहमदनदीम क़ासिमी—

थपकी

(एक किसान स्त्री अपने पतिसे)

मेरे बालोंमें सरसोंके तारे मेरे हाथोंमें गन्दुमके खोशे[1]
मेरी झोलीमें मक्कीके दाने मेरे दिलमें मुहब्बतके तोशे[2]

तुन्द झोंके मेरे हमसफ़र[3] हैं धूप मेरी सुनहरी सहेली
खेत मेरे ख़यालोंके आँगन मैं इन्हींमें पली, इनमें खेली

मेरी आँखोंमें तस्वीर तेरी मेरे होंठों पै तेरी कहानी
मेरी बातोंमें तेरे क़सीदे[4] मेरा पन्दार[5] तेरी जवानी

झुटपुटे तक अभी हाथ तेरे हलकी हत्थीसे हटने न पाएँ
माँगकी तरह सीधी सियारें[6] आड़ी लीकोंसे कटने न पाएँ

मैं यहाँ इन चटानों पै बैठी तुझको दोहे सुनाती रहूँगी
अपनी आवाज़की थपकियोंसे हाथ तेरा बटाती रहूँगी

× × ×

"सीपियोंमें किसी जलपरीने कितनी मेहनतसे आँसू छिपाए
इन दहकते हुए आँसुओंसे एक साहिरने[7] मोती बनाए

जब समुन्दरमें तूफ़ान आया सीपियाँ साहिलोंको[8] सिधारीं
कैसा अंधेर है—आँसुओंसे ताजिरोंने[9] दुकानें निखारीं"

× × ×

---

[1]गेहूँकी बाली [2]राहख़र्च [3]यात्राके साथी [4]स्तुतिगान [5]अभिमान [6]हल चलानेसे जो गहरी लकीर धरतीमें पड़ती है [7]जादूगर [8]किनारों [9]व्यापारियों

मेरे प्यारे तेरी उँगलियोंने कितने दानोंसे धरती सजाई
और दानोंको सिक्के बनाकर तेरे मालिकने डफ़ली बजाई

जलपरी हो कि दहक़ान मेरा लुट रहे हैं मगर कौन जाने
आँसुओंमें जहन्नम छिपे हैं गोलियाँ हैं ये गन्दुमके दाने

हाय मैंने यह क्या कह दिया है कोई सुनता न हो मेरा दोहा
आँसुओंकी कहानीमें कैसे चमचमाने लगा सुर्ख़ लोहा

'तेग़' इलाहाबादी—

रात सुनसान है

(१)

मेज चुपचाप, घड़ी बन्द. किताबें ख़ामोश
अपने कमरेकी उदासी पै तरस आता है
मेरा कमरा, जो मेरे दिलकी हरेक धड़कनको
सालहा सालसे चुपचाप गिने जाता है
जेहदे-हस्तीकी[1] कड़ी धूपमें थक जानेपर
जिसकी आग़ोशने बख़्शा है मुझे माँका ख़लूस[2]
जिसकी ख़ामोश इनायतकी सुहानी यादें
लोरियाँ बनके मेरे दिलमें समा जाती हैं
मेरी तनहाईके एहसासको ज़ायल[3] करने
जिसकी दीवारें मेरे पास सरक आती हैं

---

[1]जीवन संघर्ष [2]प्यार [3]मिटाने

इसकी ख़ामोश हँसी, इसकी बज़ाहिर रंजिश[१]
कितनी मासूम भी है कितनी पुरअसरार[२] भी है
जैसे कालिजकी कोई शाहिदए-सीम-बदन[३]
अपने सीनेमें मेरे राज़ लिये फिरती है
सामने ताक़ पै रक्खी हुई दो तस्वीरें
अक्सर औक़ात मुझे प्यारसे यूँ तकती हैं
जैसे मैं दूर किसी देसका शहज़ादा हूँ
मेरा कमरा, मेरे माज़ीका हक़ीक़ी मोनिस[४]
आज हर फ़िक्र, हर एहसाससे[५] बेगाना है
गर्दआलूदा[६] कलेन्डर पै अजन्ताके नक़ूश[७]
मेरे चेहरेकी लकीरोंकी तरफ़ देखते हैं
जैसे एक लाशकी फैली हुई बेबस आँखें
अपने मजबूर अज़ीज़ोंको तका करती हैं

(२)

ये किताबें भी मेरा साथ नहीं देतीं आज
'कीट्स'[८] की नज़्म, 'अरस्तू'[९] के हकीमाना क़ौल[१०]
संगे-मर्मरकी इमारतकी तरह साकित[११] हैं
तू ही कुछ बात कर ए मेरे धड़कते हुए दिल
तू ही एक मेरा सहारा है मेरा मूनिस[१२] है
तू ही इस सर्द अँधेरेमें चरागाँ[१३] कर दे
लक्ष्मीदेवी मेरी बात नहीं सुन सकती
मुझको मालूम है क्या बीत चुकी है तुझपर

---

[१]दिखानेकी रंजिश [२]रहस्यपूर्ण [३]रुपहले वदनवाली कुमारी [४]साथी [५]अनुभव [६]धूलसे अटा [७]चित्र [८]अंग्रेज़ीका प्रसिद्ध कवि [९]यूनानका महान विद्वान [१०]विद्वत्तापूर्ण कथन [११]निश्चल [१२]साथी [१३]दीप जला दे

मेरे चेहरेके सुलगते हुए ज़ख़्मोंको भी देख
मेरी आँखों पै, मेरी फ़िक्र पै पाबन्दी[1] है
मैं उसे चाहूँ भी तो याद नहीं कर सकता
तू उसे खोके तड़प सकता है रो सकता है
और मैं लुटके भी फ़रियाद नहीं कर सकता

इसी आईनेने देखे हैं हमारे झगड़े
यही ज़ीना है जहाँ मैंने उसे चूमा था
इन क़मीज़ोंमें, इन उलझे हुए रूमालोंमें
उसके बालोंकी महक आज भी आसूदा[2] है
जो कभी मेरी थी इनकार पै भी मेरी थी
अब फ़क़त बज़्मे तसव्वुरमें[3] नज़र आती है
रात भर जागके लिक्खी हुई तहरीरोंसे[4]
अब भी उन आँखोंकी तस्वीर उभर आती है

(२)

चाँदनी खिलके निखर आई है दरवाज़ेपर
ओससे भीगते जाते हैं पुराने गमले
किस क़दर नर्म है फूलोंका सुहाना साया
कितनी दोशीज़ा[5] हैं सोती हुई कच्ची कलियाँ
जैसे वो होंठ जिन्हें पाके भी मैं पा न सका
(ए तड़पते हुए दिल और सँभल और सँभल
ये तेरी चापसे जाग उट्ठेंगी तो क्या होगा)

---

[1]प्रतिबन्ध [2]बसी है [3]कल्पनाकी महफ़िल [4]लेखों
[5]कुमारी

सुबह क्या जाने कहाँ होती है कब होती है
जाने इन्सानने किस वक़्त ये दौलत पाई
मेरी तक़दीर यही सिलसिलए-शाम-ओ-सहर[1]
मेरे कमरेके मुक़द्दरमें[2] फ़क़त शहनाई

तालिब बाग़पती--

दहक़ानी लड़की

(१)

उजला, निखरा, चाँदका टुकड़ा भूला भटका सुबहका तारा
फ़ितरतका[3] वारस्ता[4] जलवा शबनमका आवारा क़तरा
हुस्ने-मुजस्सम, पैकरे-ज़ोहरा[5] गाँवकी मलका, दुख़्तरे-सहरा[6]

(२)

काँटोंमें एक फूल खिला है सारा जंगल महक रहा है
दुनिया उलटी घूम रही है पत्ती पत्ती झूम रही है
बेख़ुद हैं ख़ामोश फ़िज़ाएँ वज्दमें[7] हैं मदहोश हवाएँ
लूट रही है होशकी दुनिया गाँवकी मलका दुख़्तरे-सहरा

(३)

बेतरतीब, परेशाँ गेसू अल्हड़पन रश्के-रमे-आहू[8]
भरी भरी बिल्लोरी बाँहें तेज़ तेज़ बेबाक निगाहें

---

[1]साँझ सवेरेका सिलसिला [2]भाग्य [3]प्रकृति [4]सजा हुआ [5]साकार सौन्दर्य, सुन्दरताकी मूर्ति [6]जंगलकी बेटी [7]मस्तीमें [8]हिरनकी चौकड़ियोंको भी जिसपर ईर्ष्या हो

लाला-रुख,[1] ताऊसी गर्दन[2] भोली सूरत, सादी चितवन
जूहीका नौरुस्ता गुंचा[3] गाँवकी मलका दुख़्तरे-सहरा

(४)

जामुनकी एक शाख़ झुकाए चेहरेको पत्तोंमें छिपाए
गालोंको ख़ोशोंसे लगाए रस्तेवालोंसे शर्माए
ज़ानू पर एक पाँव उठाए यूँ ख़ुदको तस्वीर बनाए
देख रही है रस्ता चलता गाँवकी मलका दुख़्तरे-सहरा

(५)

पैरोंमें कंकरके बिछुए कानोंमें सींकोंके बाले
ज़ेबे-गुलू[4] कँवलकी माला आँखमें काजलका दुंबाला[5]
सीधे तीर चलानेवाली हिरनीको शर्मानेवाली
फ़ख़्रे-बयाबाँ[6] आलम आरा[7] गाँवकी मलका दुख़्तरे-सहरा

शेर अफ़ज़ल जाफ़री—

हीरके देसमें

आमोंकी झूमती हुई मतवाली छाँवमें
कोयल उँडेलती है नशे गाँव गाँवमें
आता है नींद बनके असर आस्मानसे
बरसात ऊँघती है छलकती दुआओंमें

---

[1]लालचेहरा [2]मोरकी-सी गर्दन [3]नई कली [4]गलेकी शोभा बढ़ानेको
[5]काजल की लकीर [6]जंगलका गर्व [7]संसारको सजानेवाली

बूँदोंकी मैगुसार[1] छमाछम पै झूमकर
टेहरें[2] उछालता है ज़माना फ़िज़ाओंमें
झूलोंमें झूलती हैं शफ़क़ रंग रानियाँ
हलकोरे फाग खेलते हैं धूप छाँवमें
घूँघट उलटके आती हैं चंचल सुहागिनें
सूरज लजाके छिपता है काली घटाओंमें
मलमलके 'भोछनों'[3] में थिरकते हैं ज़मज़में[4]
रूमान[5] घोलता है फ़साने हवाओंमें
नाज़ुक कलाइयोंमें छनकती हैं चूड़ियाँ
पाज़ेबें झनझनाती हैं लचकीले पाँवमें
बारीक आँचलोंसे झलकती है दिलबरी
एक पेंग लहलहाती है उजली ख़िज़ाओंमें
मासूम अँखड़ियोंमें चटकता है माहिया[6]
खिलती हैं मस्त मस्त बहारें अदाओंमें
गाती हैं नर्म नर्म धुनोंमें सहेलियाँ
पीता है वक़्त फूल, तरन्नुम की[7] छाँवमें
'अफ़ज़ल' गुदाज़ 'झंग'का यह प्यार आसपास
कितना हसीं इज़ाफ़ा[8] है ताज़ा ख़ुदाओंमें

---

[1]मदिरा बरसाती [2]देहाती बोल [3]आँचल [4]गीत [5]रोमांस
[6]पंजाबी प्रेमगीत [7]लय, संगीत [8]वृद्धि

मजीद अमजद--

काँटे कलियाँ

तुमसे तो ये डसनेवाले काँटे अच्छे, हँसते फूलो
चंचल काँटे---लाँबी दूबकी ठंडी छाँवके मतवाले
अपनी जलती जलती जबाँसे चाट चाटके दुखते छाले
हर राहीका दामन थामके कहते हैं
"ओ जानेवाले

चलते चलते, जब तुम एक दिन फाँदके ये गुम सुम वीराना
दूर, किसी वादीके किनारे, खोलके अपने दिलका खज़ाना
डरते डरते छेड़ो कोई धीमा धीमा मस्त तराना
हमने ही यह विसमें घोलके रस बख़्शा था, भूल न जाना"
तुमसे तो ये डसनेवाले काँटे अच्छे--हँसते फूलो
जालिम फूलो---! कितने प्यासे ख़्वाबोंके बेताब हयूले[1]
कितनी ही जानोंके बगूले,[2] ख़ुशबूओंके झूलेमें
घूमते लमहोंके होंठोंको चूमके अपना रस्ता भूले
तुमसे तो ये डसनेवाले काँटे अच्छे......

---

[1]आकृतियाँ [2]ववंडर

जाँनिसार 'अख़्तर'—

हचकोले

(१)

एक लय सीनए-फ़िज़ामें जगाय नूर-ओ-ज़ुल्मतकी[1] धूप छाँव रचाय
एक तसलसुलमें[2] उड़ रहा है वक़्त एक सियह एक सफ़ेद पर फैलाय

(२)

यों दिलकी फ़िज़ामें[3] खेलते हैं रह रहके उमीदके उजाले
छिप छिपके कोई शरीर लड़की आईनेका अक्स जैसे डाले

(३)

एक नई नज़्म कह रहा हूँ मैं अपने जज़्बातकी हसीं तफ़सीर[4]
किस मुहब्बतसे तक रही है मुझे दूर रक्खी हुई तेरी तस्वीर

शादीकी सालगिरह

[यह कविता श्री जाँनिसार अख़्तरने २५ दिसम्बर '५२ को अपनी शादीकी सालगिरहपर अपनी पत्नी सफ़ियाके नाम लिखी थी। लेकिन इसके तीसरे सप्ताह ही श्रीमती सफ़ियाका लखनऊमें देहान्त हो गया। श्रीमती सफ़िया, हमीदा गर्ल्स कालिज भूपालमें प्रोफ़ेसर थीं। श्री

---

[1]प्रकाश और अन्धकार [2]क्रम [3]प्रतिविम्ब [4]व्याख्या

जाँ निसार 'अख़्तर' ने दूसरी कविता 'ख़ाके-दिल' पत्नीके मरनेपर लिखी है। दोनों कविताएँ किस दर्दमें डूबकर लिखी गई हैं इसका अन्दाज़ा पढ़नेसे ही हो सकता है]

ये तेरे प्यारकी ख़ुशबूसे महकती हुई रात
अपने सीनेमें छिपाए तेरे दिलकी धड़कन
आज फिर तेरी अदासे मेरे पास आई है
अपनी आँखोंमें तेरी ज़ुल्फ़का डाले काजल
अपनी पलकोंमें सजाए हुए अरमानोंका ख़्वाब
अपने आँचल पे तमन्नाके सितारे टाँके

रातकी ज़ुल्फ़ पै फिर से तेरी अफ़शाँ[1] झलकी
नर्म किरनें हैं कि लचकी हुई बाँहें तेरी
मेरे आग़ोशमें फिर चाँद उतर आया है
गुनगुनाती हुई यादोंकी लवें जाग उठीं
कितने गुज़रे हुए लमहोंके[2] चमकते जुगनू
दिलको हालेमें लिये नाच रहे हैं कबसे

कितने लमहे कि तेरी ज़ुल्फ़के सायेके तले
ग़र्क़[3] होकर तेरी आँखोंके हसीं साग़रमें
ग़मे-दौरांसे[4] बहुत दूर गुज़ारे मैंने
कितने लमहे कि तेरी प्यार भरी नज़रोंने
किस सलीक़ेसे सजाई मेरे दिलकी महफ़िल
किस क़रीनेसे सिखाया मुझे जीनेका शऊर

कितने लमहे कि हसीं, नर्म, सुबुक आँचलसे
तूने बढ़कर मेरे माथेका पसीना पोंछा

---

[1]कुमकुम [2]क्षणों [3]डूबकर [4]संसारके दुखों

चाँदनी बन गई राहोंकी कड़ी धूप मुझे
कितने लमहे कि ग़मे-ज़ीस्तके[1] तूफ़ानोंमें
ज़िन्दगानीकी जलाए हुए बाग़ी मिशअल
तू मेरा अज़्मे-जवाँ[2] बनके मेरे साथ रही

कितने लमहे कि ग़मे-दिलसे उभरकर हमने
एक नई सुबहे-मुहब्बतकी लगन अपनाई
सारी दुनियाके लिये सारे ज़मानेके लिये
उन ही लमहातके गुल रंग शरारोंका[3] तुझे
गूँधकर आज कोई हार पिन्हा दूँ, आ जा
चूमकर माँग तेरी तुझको सजा दूँ आ जा

ख़ाके-दिल

(अपनी पत्नी सफ़िया अख़्तरके स्वर्गवासपर लखनऊसे जाते हुए)

लखनऊ, मेरे वतन, मेरे चमनज़ार[4] वतन
तेरे गहवारए-आग़ोशमें[5] ए जानेबहार
अपनी दुनियाए-हसीं दफ़्न किये जाता हूँ
तूने जिस दिलको धड़कनेकी अदा बख़्शी थी
आज वह दिल भी यहीं दफ़्न किये जाता हूँ

दफ़्न है देख मेरा अहदे-बहाराँ[6] तुझमें
दफ़्न है देख मेरी रूहे-गुलिस्ताँ तुझमें

---

[1]जीवनका दुख [2]जवान साहस, संकल्प [3]फूलों ऐसी चिनगारियाँ
[4]चमन, बाग़ [5]गोदका पालना [6]वसन्तका समय

मेरी गुलपोश[1] जवाँ साल उमंगोंका सुहाग
मेरी शादाब तमन्नाके महकते हुए ख़्वाब
मेरी बेदार जवानीके फ़रोज़ाँ मह-ओ-साल[2]
मेरी शामोंकी मलाहत,[3] मेरी सुबहोंका जमाल
मेरी महफ़िलका फ़साना, मेरी खिलवतका[4] फ़सूँ[5]
मेरी दीवानगिये-शौक़,[6] मेरा नाज़े-जुनूँ[7]
मेरे मरनेका सलीक़ा,[8] मेरे जीनेका शऊर[9]
मेरा नामूसे-वफ़ा,[10] मेरी मुहब्बतका ग़रूर
मेरी नब्ज़ोंका तरन्नुम,[11] मेरे नग़मोंकी पुकार
मेरे शेरोंकी सजावट,[12] मेरे गीतोंका सिंगार
लखनऊ ! अपना जहाँ सौंप चला हूँ तुझको
अपना हर ख़्वाबे-जवाँ सौंप चला हूँ तुझको
अपना सरमाय-ए-जाँ सौंप चला हूँ तुझको

लखनऊ ! मेरे वतन, मेरे चमनज़ार वतन
यह मेरे प्यारका मदफ़न[13] ही नहीं है तनहा
दफ़्न हैं इसमें मुहब्बतके खज़ाने कितने
एक उनवानमें मुज़मर हैं फ़साने कितने

एक बहन अपनी रफ़ाक़तकी[14] क़सम खाए हुए
एक माँ मरके भी सीनेमें लिये माँका गुदाज़[15]
अपने बच्चोंके लड़कपनको कलेजेसे लगाय

---

[1]फूलोंकी पोशाक पहननेवाली [2]चमकते मास और वर्ष [3]नमकीनी [4]एकान्त [5]जादू [6]शौक़की दीवानगी, पागलपन [7]जुनून दीवानगीका गर्व [8]ढंग [9]ढंग [10]वफ़ाका मान [11]नाड़ियोंका संगीत [12]कविताओंकी सजावट [13]क़ब्र, जहाँ दफ़्न हो [14]साथ देने [15]नर्मी

अपने खिलते हुए मासूम शगूफ़ोंको[1] लिये
बन्द आँखोंमें बहारोंके जवाँ ख़्वाब बसाये

यह मेरे प्यारका मदफ़न ही नहीं है तनहा
एक साथी भी तहे-ख़ाक[2] यहाँ सोती है
अरस-ए-ज़ीस्तकी[3] बेरह्म कशाकशका[4] शिकार
जान देकर भी ज़मानेसे न माने हुए हार
अपने तेवरमें वही अज़्मे-जवाँ साल[5] लिये

यह मेरे प्यारका मदफ़न ही नहीं है तनहा
देख एक शमअ़ सरे-राहगुज़र[6] जलती है
जगमगाता है अगर कोई निशाने-मंज़िल
ज़िन्दगी और भी कुछ तेज़ क़दम चलती है

लखनऊ! मेरे वतन, मेरे चमन ज़ार वतन
देख इस ख़्वाबगहे-नाज़ पै[7] कल मौजे-सबा[8]
लेके नौरोज़े-बहाराँकी[9] ख़बर आएगी
सुर्ख़ फूलोंका बड़े नाज़से गूँधे हुए हार
कल इसी ख़ाक पै गुलरंग सहर आएगी
कल इन्हीं ख़ाकके ज़र्रोंमें समा जायगा रंग
कल यही प्यारकी तस्वीर उभर आएगी

ए मेरी रूहे चमन! ख़ाके-लहदसे[10] तेरी
आज भी मुझको तेरे प्यारकी बू आती है

---

[1]अबोध कलियों अर्थात बच्चों [2]ख़ाकके नीचे, [3]जीवनकाल [4]संघर्ष [5]जवान इरादे, संकल्प [6]राहमें [7]प्यारके शयनका स्थान [8]पुरवा हवाकी लहर [9]वसन्तके प्रथम दिन [10]क़ब्रकी मिट्टी

ज़ख़्म सीनेके महकते हैं तेरी ख़ुशबूसे
वह महक है कि मेरी साँस रुकी जाती है
मुझसे क्या बात बनाएगी ज़मानेकी जफ़ा[1]
मौत ख़ुद आँख मिलाते हुए शर्माती है

मैं और इन आँखोंसे देखूँ तुझे पेवन्दे-ज़मीं[2]
इस क़दर ज़ुल्म ! नहीं, हाय नहीं ! हाय नहीं
कोई ए काश बुझा दे मेरी आँखोंके दिये
छीन ले मुझसे कोई काश निगाहें मेरी
ए मेरी शमए-वफ़ा ए मेरी मंज़िलके चिराग़
आज तारीक हुई जाती हैं राहें मेरी

तुझको रोऊँ भी तो क्या रोऊँ कि इन आँखोंमें
अश्क पत्थरकी तरह जमसे गए हैं मेरे
ज़िन्दगी अरसागहे जेह्दे-मुसलसल[3] ही सही
एक लम्हेको क़दम थमसे गए हैं मेरे

फिर भी इस अरसागहे-जेह्दे-मुसलसलसे मुझे
कोई आवाज़ पै आवाज़ दिये जाता है
आज सोता ही तुझे छोड़के जाना होगा
नाज़ यह भी ग़मे-दौराँका[4] उठाना होगा

ज़िन्दगी देख मुझे हुक्मे-सफ़र देती है
एक दिल शोला ब-जाँ[5] साथ लिये जाता हूँ
हर क़दम तूने कभी अज़्मे-जवाँ बख़्शा था
मैं वही अज़्मे-जवाँ साथ लिये जाता हूँ

---

[1]समयके अत्याचार [2]धरतीका पेवन्द [3]अनवरत संघर्षकी जगह
[4]ज़मानेके दुख [5]जलता हुआ

चूमकर आज तेरी ख़ाके-लहदके ज़र्रे
अनगिनत फूल मुहब्बतके चढ़ाता जाऊँ
जाने इस सिम्त कभी मेरा गुज़र हो कि न हो
आख़िरी बार गले तुझको लगाता जाऊँ

लखनऊ ! मेरे वतन, मेरे चमनज़ार वतन
देख इस ख़ाकको आँखोंमें बसाकर रखना
इस अमानतको कलेजेसे लगाकर रखना

अनवर जलाल—

छः कविताएँ

इन्सान

मैं हूँ एक तस्वीर पुरानी
लेकिन मेरे रंग नये हैं

इल्म

कितनी दिलचस्प-ओ-पुर-सुकून है ये
रहगुज़र जिसकी इन्तहा ही नहीं

चाय

एक दोशीज़ाके[1] लबोंकी तरह
इसमें गर्मी भी है मिठास भी है

---

[1]कुमारी

विरहन

रोज सावनसें आस्मानके हाथ
आँसुओंके ख़तूत भेजती हूँ

तलाश

हर नई रात नई शमए-फ़रोज़ाँ[1] लेकर
यह सिसकता हुआ महताब[2] किसे देखता है

बाल-रूम

रातको महवे-हमदमी[3] थे सब
सुबह जागे तो अजनबी थे सब

मजाज——

रात और रेल

फिर चली है रेल स्टेशनसे लहराती हुई
नीम शबकी[4] ख़ामशीमें ज़ेरे-लब[5] गाती हुई
डगमगाती, झूमती, सीटी बजाती, खेलती
वादि-ओ-कोहसारकी[6] ठंडी हवा खाती हुई

तेज झोंकोंमें वो छम-छमका सुरूदे-दिलनशीं[7]
आँधियोंमें मेंह बरसनेकी सदा आती हुई

---

[1]जलती शमा [2]चाँद [3]एक दूसरेके साथ मग्न [4]आधी रात
[5]होंठोंमें [6]घाटी और पहाड़ी [7]मनोहर गाना

जैसे मौजोंका तरन्नुम[1] जैसे जलपरियोंके गीत
एक एक लयमें हजारों ज़मज़मे[2] गाती हुई

नौनिहालोंको सुनाती मीठी मीठी लोरियाँ
नाज़नीनोंको सुनहरे ख़्वाब दिखलाती हुई
ठोकरें खाकर लचकती, गुनगुनाती, झूमती
सरख़ुशीमें[3] घुंघरुओंकी तालपर गाती हुई

नाज़से हर मोड़पर खाती हुई सौ पेच-ओ-ख़म[4]
एक दुल्हन अपनी अदासे आप शर्माती हुई
रातकी तारीकियोंमें झिलमिलाती, काँपती
पटरियोंपर दूरतक सीमाब[5] छलकाती हुई

जैसे आधी रातको निकली हो एक शाही बरात
शादियानोंकी सदासे वज्दमें[6] आती हुई
मुंतशिर[7] करके फ़िज़ामें जाबजा चिंगारियाँ
दामने-मौजे-हवामें फूल बरसाती हुई

तेज़तर होती हुई मंज़िल-ब-मंज़िल दम-ब-दम
रफ़्ता-रफ़्ता अपना असली रूप दिखलाती हुई
सीन-ए-कोहसारपर चढ़ती हुई बेएख़्तियार
एक नागिन जिस तरह मस्तीमें लहराती हुई

एक सितारा टूटकर जैसे रवाँ हो अर्शसे
रफ़अते-कोहसारसे[8] मैदानमें आती हुई
एक बगूलेकी तरह बढ़ती हुई मैदानमें
जंगलोंमें आँधियोंका ज़ोर दिखलाती हुई

---

[1]राग [2]गीत [3]मस्ती [4]घूमती, लचकती [5]पारा [6]मस्ती [7]बिखेरकर [8]पहाड़की ऊँचाई

रअशा-बर अन्दाम[1] करती अंजुमे शब-ताबको[2]
आशियाँमें तायरे-वहशीको[3] चौंकाती हुई
याद आ जाए पुराने देवताओंका जलाल[4]
इन क़यामत-ख़ेज़ियोंके साथ बल खाती हुई

एक रख़्शे-बेअनाँकी[5] बर्क़-रफ़्तारीके[6] साथ
ख़न्दक़ोंको फाँदती टीलोंसे कतराती हुई
मर्ग़ज़ारोंमें दिखाती जूए-शीरींका ख़राम[7]
वादियोंमें अब्रके मानिन्द मंडलाती हुई

एक पहाड़ीपर दिखाती आबशारोंकी[8] झलक
एक बयाबाँमें चराग़े-तूर[9] दिखलाती हुई
जुस्तजूमें मंज़िले-मक़सूदकी दीवानावार
अपना सर धुनती फ़िज़ामें बाल बिखराती हुई

छेड़ती एक वज्दके आलममें साज़े-सरमदी[10]
ग़ैज़के आलममें मुँहसे आग बरसाती हुई
रेंगती, मुड़ती, मचलती, तिलमिलाती हाँपती
अपने दिलकी आतिशे-पिनहाँको भड़काती हुई

ख़ुदबख़ुद रूठी हुई, बिफरी हुई, बिखरी हुई
शोरे-पैहमसे दिले गेतीको धड़काती हुई
पुल पै दरियाके दमादम कौंदती, ललकारती
अपनी इस तूफ़ान-अंगेज़ी[11] पै इतराती हुई

---

[1]कम्पित [2]रातको चमकनेवाले तारे [3]जंगली पक्षी [4]तेज [5]बेलगाम घोड़ा [6]विद्युतगति [7]मीठे जलवाली नहरका प्रवाह [8]झरनों [9]ईश्वरीय ज्योति, जो मूसाने तूर पर्वतपर देखी थी [10]स्वर्गीय-संगीत [11]तूफ़ानी चाल

पेश करती बीच नद्दीमें चराग़ाँका समाँ
साहिलोंपर रेतके ज़र्रोंको चमकाती हुई
मुँहमें घुसती है सुरंगोंके यकायक दौड़कर
दनदनाती, चीख़ती, चिंघाड़ती, गाती हुई

आगे आगे जुस्तजू-आमेज़[1] नज़रें डालती
शबके हैबतनाक[2] नज़्ज़ारोंसे घबराती हुई
एक मुजरिमकी तरह सहमी हुई सिमटी हुई
एक मुफ़लिसकी तरह सर्दीमें थर्राती हुई

तेज़िए-रफ़्तारके सिक्के जमाती जा-ब-जा
दश्त-ओ-दरमें[3] ज़िन्दगीकी लह्र दौड़ाती हुई
डालकर गुज़रे मनाज़िरपर[4] अँधेरेका नक़ाब
एक नया मंज़र नज़रके सामने लाती हुई

सफ़ह-ए-दिलसे[5] मिटाती अह्दे-माज़ीके[6] नक़्श
हाल-ओ-मुस्तक़बिलके दिलकश ख़्वाब दिखलाती हुई
डालती बेहिस[7] चटानोंपर हिक़ारतकी[8] नज़र
कोहपर हँसती, फ़लकको आँख दिखलाती हुई

दामने-तारीकिये-शबकी उड़ाती धज्जियाँ
क़स्रे-ज़ुलमतपर[9] मुसलसल तीर बरसाती हुई
ज़दमें[10] कोई चीज़ आ जाए तो उसको पीसकर
इरतक़ाए-ज़िन्दगीके[11] राज़ बतलाती हुई

---

[1]जिज्ञासामय [2]भयानक [3]जंगल-पहाड़ [4]दृश्यों [5]हृदयपट [6]अतीत काल [7]निश्चेष्ट [8]घृणा [9]अन्धकारके महल [10]बीचमें, रास्तेमें [11]जीवनके विकास

जोममें पेशानिये-सहरापै[1] ठोकर मारती
फिर सुबुक-रफ़्तारियोंके[2] नाज़ दिखलाती हुई
एक सरकश फ़ौजकी सूरत अलम[3] खोले हुए
एक तूफ़ानी गरजके साथ दर्राती[4] हुई

एक एक हरकतसे अन्दाज़े-बग़ावत आशकार
अज़्मते-इन्सानियतके[5] ज़मज़मे गाती हुई
हर क़दमपर तोपकीसी घन गरजके साथ साथ
गोलियोंकी सनसनाहटकी सदा आती हुई

वह हवामें सैकड़ों रंगीं दोहल[6] बजते हुए
वह बिगुलकी जाँफ़िज़ा[7] आवाज़ लहराती हुई
अलग़रज़ उड़ती चली जाती है बेख़ौफ़-ओ-ख़तर
शायरे-आतिश-नफ़सका[8] ख़ून खौलाती हुई

अँधेरी रातका मुसाफ़िर

जवानीकी अँधेरी रात है ज़ुल्मतका तूफ़ाँ है
मेरी राहोंसे नूरे-माह-ओ-अंजुम तक गुरेज़ाँ है[9]
ख़ुदा सोया हुआ है अह्रमन[10] महशर बदामाँ[11] है
मगर मैं अपनी मंज़िलकी तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ

ग़म-ओ-हिरमाँकी यूरिश[12] है, मसायबकी[13] घटाएँ हैं
जुनूँकी फ़ितना-ख़ेज़ी हुस्नकी ख़ूनीं अदाएँ हैं

---

[1]जंगलके माथे [2]मन्द गति [3]झंडे [4]घुसती [5]मानवताकी महानता [6]नगाड़े [7]जोश बढ़ानेवाली [8]आगकी-सी साँस लेनेवाले कवि, जिस कविकी साँस आगकी-सी हो, क्रान्तिकारी कवि [9]चाँद तारोंकी ज्योति तक भाग रही है [10],[11]शैतान प्रलयको साथ लिये हुए [12]हमला [13]विपत्तियों

बड़ी पुरज़ोर आँधी है, बड़ी काफ़िर बलाएँ हैं
मगर मैं अपनी मंज़िलकी तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ

फ़िज़ामें मौतके तारीक साये थरथराते हैं
हवाके सर्द झोंके क़ल्बपर ख़ंजर चलाते हैं
गुज़श्ता अज़मतोंके ख़्वाब आईना दिखाते हैं
मगर मैं अपनी मंज़िलकी तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ

ज़मीं चीं बरजबीं[1] है आस्माँ तख़रीबपर[2] मायल
रफ़ीक़ाने-सफ़रमें कोई बिसमिल है कोई घायल
तआक़ुबमें[3] लुटेरे हैं, चटानें राहमें हायल[4]
मगर मैं अपनी मंज़िलकी तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ

उफ़क़पर ज़िन्दगीके लश्करे-ज़ुल्मतका[5] डेरा है
हवादिसके[6] क़यामतख़ेज़ तूफ़ानोंने घेरा है
जहाँ तक देख सकता हूँ अँधेरा ही अँधेरा है
मगर मैं अपनी मंज़िलकी तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ

चराग़े-दैर,[7] फ़ानूसे-हरम,[8] क़न्दीले-रहबानी[9]
ये सब हैं मुद्दतोंसे बेनियाज़ें-नूरे-इरफ़ानी[10]
न नाक़ूसे ब्रहमन है, न आहंगे-हुदी ख़्वानी[11]
मगर मैं अपनी मंज़िलकी तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ

तलातुमख़ेज़ दरिया आगके मैदान हायल हैं
गरजती आँधियाँ, बिफरे हुए तूफ़ान हायल हैं

---

[1]माथेपर बल डाले [2]बिगाड़ने, विध्वंस [3]पीछा करने [4]बाधक
[5]अन्धकारकी सेना [6]दुर्घटनाओं [7]मंदिर-दीप [8]मसजिदका चिराग़
[9]गिरजाकी क़न्दील [10]ईश्वरीय ज्योति [11]ईश्वरीय स्तुति

तबाहीके फ़रिश्ते जब्रके शैतान हायल हैं
मगर मैं अपनी मंज़िलकी तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ

फ़िज़ामें शोलाअफ़शाँ देवे-इस्तिब्दादका[1] ख़ंजर
सियासतकी सनानें[2] अहले-ज़रके[3] ख़ूँचकाँ[4] तेवर
फ़रेबे-बेख़ुदी देते हुए बिल्लूरके साग़र
मगर मैं अपनी मंज़िलकी तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ

बदीपर बारिशे-लुत्फ़-ओ-करम,[5] नेकी पै तक़रीरें
जवानीके हसीं ख़्वाबोंकी हैबत नाक ताबीरें
नुकीली तेज़ संगीनें हैं, ख़ूँ आशाम शमशीरें[6]
मगर मैं अपनी मंज़िलकी तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ

हुकूमतके मज़ाहिर[7] जंगके पुरहौल[8] नक़्शे हैं
कुचलनेके मुक़ाबिल तोप, बन्दूक़ें हैं नेज़े हैं
सलासिल,[9] ताज़ियाने, बेड़ियाँ फाँसीके तख़्ते हैं
मगर मैं अपनी मंज़िलकी तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ

उफ़क़पर[10] जंगका ख़ूनी सितारा जगमगाता है
हर एक झोंका हवाका मौतका पैग़ाम लाता है
घटाकी घन-गरजसे क़ल्बे-गेती[11] काँप जाता है
मगर मैं अपनी मंज़िलकी तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ

फ़नाके आहनी वहशत असर क़दमोंकी आहट है
धुएँकी बदलियाँ हैं, गोलियोंकी सनसनाहट है
अजलके क़हक़हे हैं जलज़लोंकी गड़गड़ाहट है
मगर मैं अपनी मंज़िलकी तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ

---

[1]दमनका देवता [2]तलवारें [3]धनवान [4]क्रुद्ध [5]कृपाकी वर्षा [6]ख़ून-भरी तलवारें [7]प्रदर्शन [8]भयानक [9]ज़ंजीरें [10]क्षितिज [11]पृथ्वीका हृदय

'साहिर' लुधियानवी—

तुलूए-इश्तराकियत

(समाजवादका उदय)

जश्न बपा है कुटियाओंमें ऊँचे ऐवाँ[1] काँप रहे हैं
मज़दूरोंके बिगड़े तेवर देखके सुल्ताँ[2] काँप रहे हैं
जागे हैं अफ़लासके[3] मारे, उट्ठे हैं बेबस दुखियारे
सीनोंमें तूफ़ाँका तलातुम[4] आँखोंमें बिजलीके शरारे[5]

चौक चौकमें गली गलीमें सुर्ख़ फरेरा लहराते हैं
मज़लूमोंके बाग़ी लशकर सैलसिफ़त उमड़े आते हैं
शाही दरबारोंके दरसे फ़ौजी पहरे ख़त्म हुए हैं
ज़ाती जागीरोंके हक़ और मुहमल दावे ख़त्म हुए हैं

शोर मचा है बाज़ारोंमें टूट गए दरज़िन्दानों[6] के
वापस माँग रही है दुनिया ग़सबशुदा[7] हक़ इन्सानोंके
रुसवा बाज़ारी ख़ातूनें[8] हक़्क़े-निसाई[9] माँग रही हैं
सदियोंकी ख़ामोश ज़बानें सेहरनवाई[10] माँग रही हैं

रौंदी कुचली आवाज़ोंके शोरसे धरती गूँज उठी है
दुनियाके अन्याय नगरमें हक़की पहली गूँज उठी है

---

[1]महल [2]बादशाह [3]दरिद्रता [4]उथल पुथल [5]चिनगारियाँ [6]जेलों, कारागारोंके द्वार [7]छीने हुए [8]बदनाम-बाज़ारी स्त्रियाँ, वेश्याएं [9]भली स्त्रीयोंके अधिकार [10]जादू भरी आवाज़

जमा हुए हैं चौराहोंपर आकर भूखे और गदागर
एक लपकती आँधी बनकर एक लपकता शोला होकर

काँधोंपर संगीन कुदालें, होंठोंपर बेबाक तराने
दहक़ानोंके[1] दल निकले हैं, अपनी बिगड़ी आप बनाने
आज पुरानी तदबीरोंसे आगके शोले थम न सकेंगे
उभरे जज़्बे दब न सकेंगे उखड़े परचम[2] जम न सकेंगे

राजमहलके दरबानोंसे ये सरकश तूफ़ाँ न रुकेगा
चन्द किरायेके तिनकोंसे सैले-बेपायाँ[3] न रुकेगा
काँप रहे हैं ज़ालिम सुलताँ, टूट गए दिल जब्बारोंके[4]
भाग रहे हैं ज़िल्ले-इलाही,[5] मुँह उतरे हैं ग़द्दारोंके

एक नया सूरज चमका है, एक अनोखी ज़ौबारी[6] है
ख़त्म हुई अफ़रादकी[7] शाही, अब जम्हूरकी[8] सालारी है

आवाज़े-आदम

(मानवकी आवाज़)

दबेगी कब तलक आवाज़े-आदम[9] हम भी देखेंगे
रुकेंगे कब तलक जज़्बाते-बरहम[10] हम भी देखेंगे
चलो यूँ ही सही, यह जौरे-पैहम[11] हम भी देखेंगे

---

[1]किसानों [2]ध्वज [3]भारी बाढ़ [4]ज़ुल्म-ज़्यादती करनेवाले [5]भगवानकी छाया, बादशाहको भगवानकी छाया कहा जाता था [6][illegible]ाकी वर्षा [7]व्यक्तियों [8]जनता [9]मानवकी आवाज़ [10]बिगड़े, कविताओं भाव [11]लगातार ज़ुल्म

दरे जिन्दाँसे देखें या उरूजे-दारसे[1] देखें
तुम्हें रुसवा सरे-बाजारे-आलम हम भी देखेंगे
जरा दम लो मआले शौकते-जम[2] हम भी देखेंगे

ब-जोमे, क़ूवते-फ़ौलाद-ओ-आहन देख लो तुम भी
ब-फ़ैजे-जज़्बए-ईमाने-महकम[3] हम भी देखेंगे
कहाँ तक हैं तुम्हारे जुल्ममें दम हम भी देखेंगे

ये हंगामे-विदाए-शब[4] है ए जुलमतके फ़रजन्दो
सहरके दोशपर गुलनार परचम हम भी देखेंगे
तुम्हें भी देखना होगा ये आलम हम भी देखेंगे

तख़्तसिंह—

भूली बिसरी रात

पिछली रातका चाँद दिखाई देता था कुछ यों तारोंमें
जैसे कोई जानबूझकर कूद रहा हो अंगारोंमें
धरतीसे आकाश तलक किरनोंका सुन्दर जाल बिछा था
राज था सपनोंका सब जगपर छाया हुआ एक सन्नाटा था

लहरोंकी मुँहज़ोर सिलवटोंमें नदी बिस घोल रही थी
धीमे धीमे मधुर स्वरोंमें शायद वह कुछ बोल रही थी
पेड़ किनारे पर भीगी पुरवासे काँप रहे थे थरथर
रह रहकर एक आध अनदेखा पंछी चीख़ उठता था जिनपर

---

[1]फाँसीकी ऊँचाई [2]शहंशाहीकी शानका अन्त [3]दृढ़ ई[illegible] बाज़ारे धनाके कारण [4]रातके विदा होनेके समय आवाज़

दूर एक पर्वतकी ऊँची चोटीपर एक छोटीसी बदली
क्या जाने पूरबके धुँधले मंडलमें क्या ढूंढ रही थी
ऐसेमें हम दोनों एक हल्कीसी नन्हीं नावमें बैठे
झिलमिल झिलमिल करते पानीकी छातीपर तैर रहे थे
तेरे रुख पे परेशाँ काकुल खेल रही थी नर्म हवासे
रूपमें तेरा सुन्दर मुखड़ा कहीं सुहाना था चन्दासे
जिसको ऐसा नूर आँखोंमें दिखाई देता था कुछ ऐसे
जलते हों सो नन्हे नन्हे दीपक काली रातमें जैसे
रह रहकर साड़ीका आँचल कन्धेपरसे ढलक जाता था
रह रहकर तुझसे कुछ कहनेको मेरा जी ललचाता था
लेकिन रुक जाती थी होंठोंपर जो बात उठती थी मनमें
प्रेमकी चंचलता उलझी थी लालकी अनसुलझी उलझनमें
झूम रहा था जागते सपनोंका संसार आँखोंमें ऐसे
ओसके मोती झूल रहे हों फूलोंके झूलोंमें जैसे
अंग अंग बेचैन था, चप्पू हाथोंसे छूटा जाता था
और यूँ मेरे सब्रका प्याला रह रहकर छलका जाता था
एकाएकी तूने भरी एक ठंडी साँस अँगड़ाई लेकर
चुपकी थकनसे बाज़ आई थी, सरको रखा मेरे काँधेपर
फिर क्या था दिल ऐसा मचला अपने आपको भूल गया मैं
ज़ोरसे तुझको भींचकर अपनी बाँहोंमें कुछ बोल उठा मैं
एक मैं क्या आकाशके तारे भी वह रात नहीं भूले हैं
जिसको गुज़रे आज तो लगभग चार महीने बीत गये हैं
अब भी उसकी याद मचा देती है एक हलचलसी मनमें
ऐसी रात नहीं आती है पलटकर क्यों मेरे जीवनमें

राजा मेहदी अली ख़ाँ—

टेढ़ी लकीर

दुनिया हरगिज़ गोल नहीं है ढोलके अन्दर पोल नहीं है
मजनूँकी दुश्मन थी लैला मुसलमान था भाई छैला

उल्लू रातको सो जाते हैं तोते गुलाबी हो जाते हैं
अफ़लातूनकी छै माएँ थीं कुछ भैंसें थीं, कुछ गायें थीं

जुगनूसे सिग्रेट सुलगाओ धूपमें अपने अश्क सुखाओ
चोरको चोरीसे मत रोको शेर कहे शायर तो टोको
सबसे बड़ी हस्ती है शैताँ दुबला है राजा मेहदी अली ख़ाँ

रज़ी अख़्तर शौक़—

उनके नाम

(जिनके और मेरे बीच मीलोंका फ़ासला है)

रात है सलोनीसी
रात है सुहानीसी
निस्फ़ शबका[1] सन्नाटा
जैसे सोगमें बेवा
मुंतशिर[2] हवाओंमें

---

[1]आधी रात [2]बिखरी